संयुक्तांक

UPBIL 04831

संस्कृति, साहित्य, अध्यात्म और जीवन दर्शन की मासिक द्विभाषी पत्रिका

मूल्य ₹200

संस्कृति पर्व

Sanskritiparva

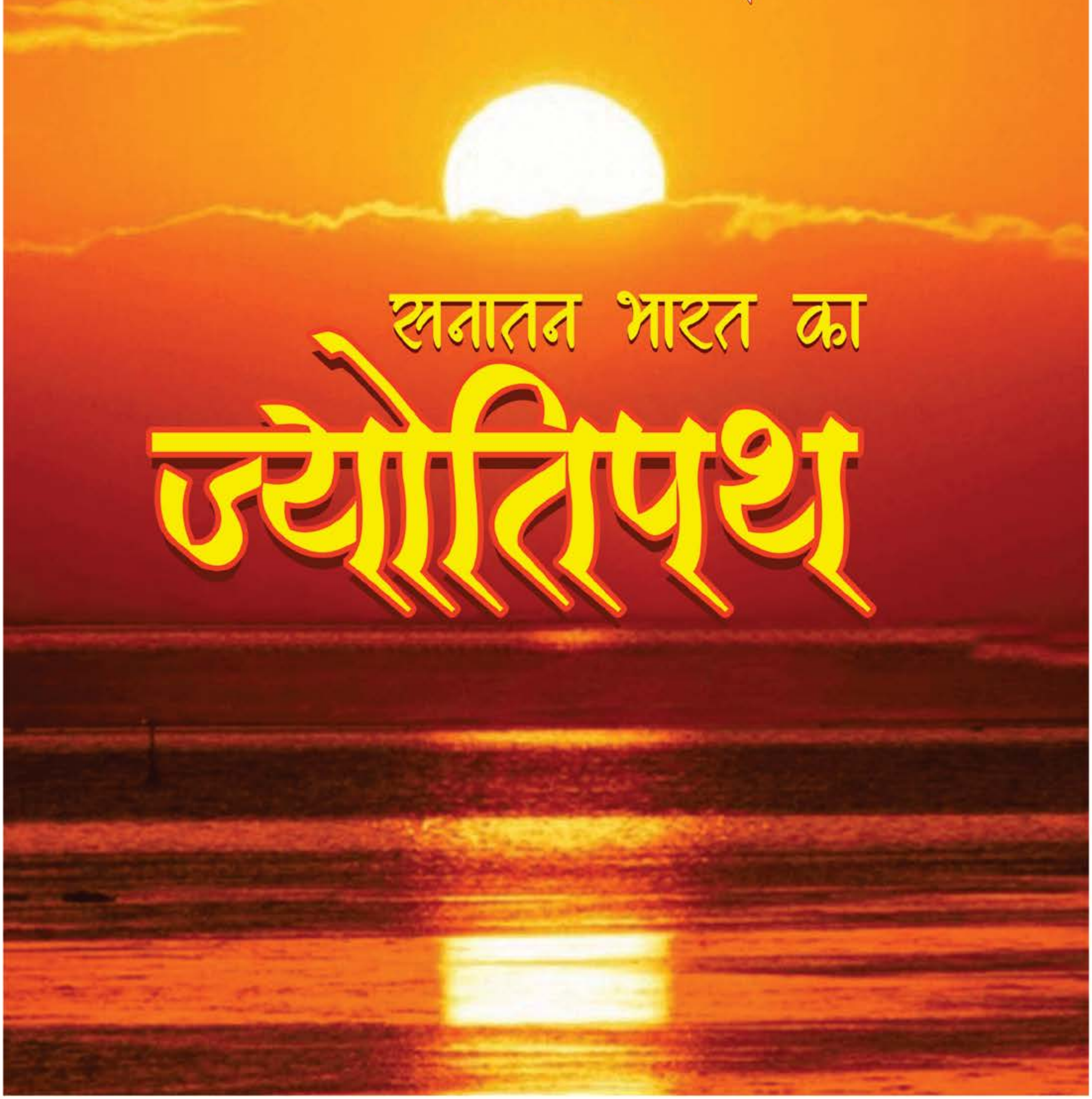

सनातन भारत का ज्योतिपथ

विदेश के लिए मूल्य : $10

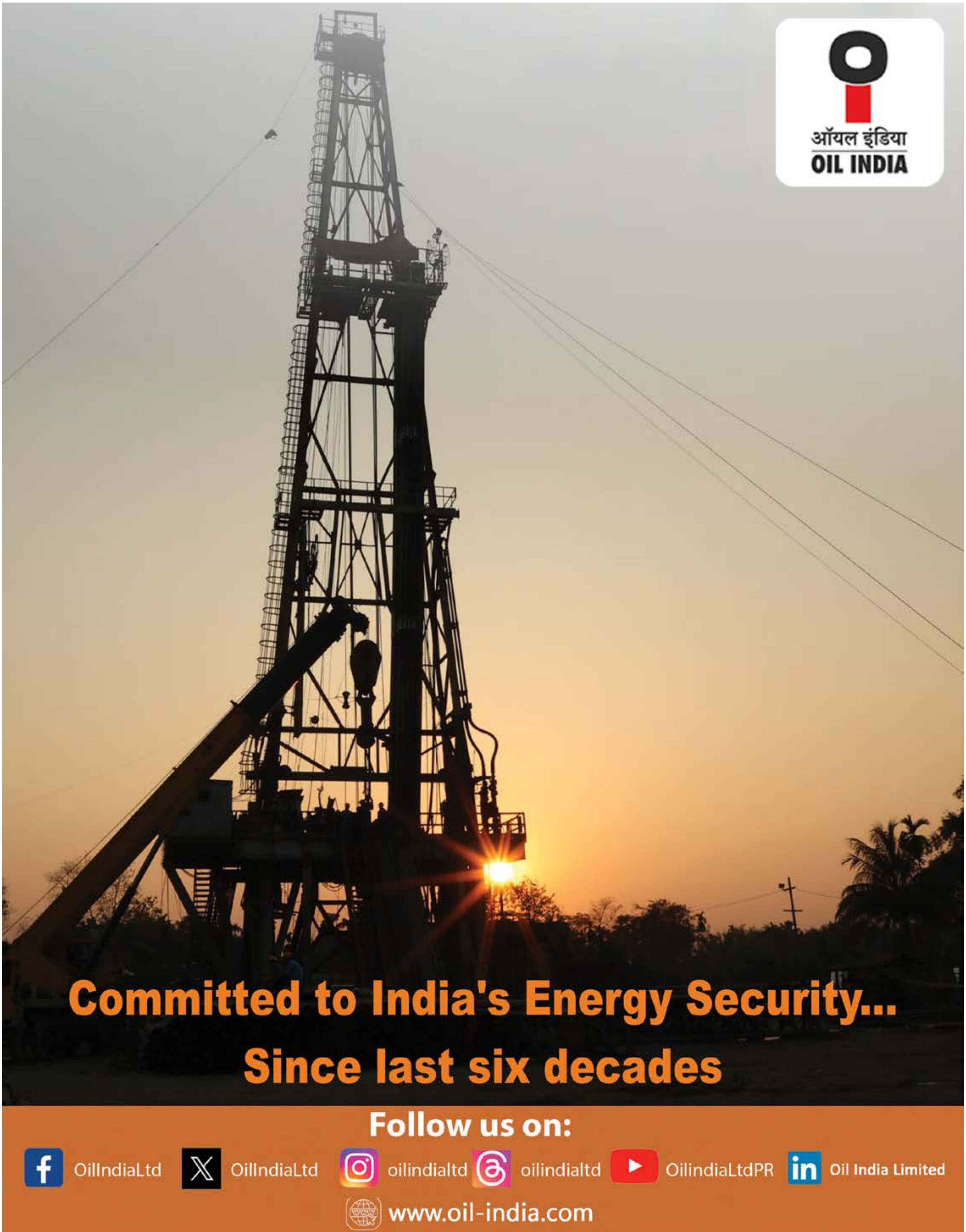
आॅयल इंडिया
OIL INDIA
Committed to India's Energy Security...
Since last six decades
Follow us on:
OilIndiaLtd
OilIndiaLtd
oilindialtd
oilindialtd
OilindiaLtdPR
Oil India Limited
www.oil-india.com

संपर्कः- 9450887186, 9450887187, 7007172707, 9807636072
email- editor.sanskritiparva@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

12 श्रीराम का सनातन भारत

राष्ट्र वैदिक शब्द है। राष्ट्र की धारणा यज्ञ संस्था द्वारा निर्मित है। राष्ट्र के लिए वेद, वेदी, यज्ञ और यज्ञभूमि होना अनिवार्य है। इसका अभिप्राय केवल आध्यात्मिक नहीं है, अपितु आधिदैविक, आधिभौतिक और भौतिक भी है।

16 किसी को नहीं जिताते मजहब के युद्ध

आज न सिर्फ पश्चिम एशिया बेहद खराब स्थिति में है बल्कि यूरोप, अफ्रीका, नार्थ अमेरिका भी किसी न किसी रूप में एक अजीब से संजाल में फंसा हुआ है। बात करें पश्चिम एशिया की तो बीते एक साल से इस क्षेत्र में बेहिसाब जानें जा चुकीं हैं। बेशुमार नुकसान हुआ है। ये सिलसिला जारी है।

43 स्वाधीनता संग्राम के सरदार

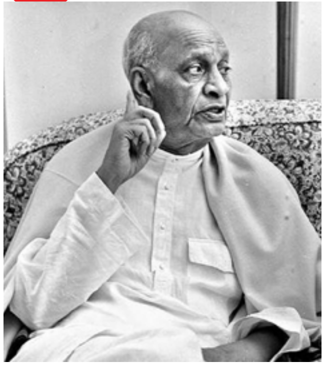

गुजरात की जोड़ियों ने भारत के स्वरूप को गढ़ा है। पराधीन भारत की मुक्ति से लेकर आधुनिक सशक्त भारत के निर्माण की सतत प्रक्रिया में गुजरात की जोड़ी का योगदान पहले भी विश्व ने देखा है और आज भी केवल देख नहीं रहा बल्कि ऐसी जोड़ी की शक्ति और रणनीति को अनुभव भी कर रहा है।

48 सनातन वैदिक भारत की संरक्षक अहिल्याबाई

केवल एक बेटी, एक बहू, एक मां और एक सामान्य भक्त ही भर नही थीं, बल्कि यह सब होने के साथ ही सनातन वैदिक भारत की संरक्षक के रूप में ही उन्हें नमन करने का मन होता है। माँ अहिल्याबाई भले ही मालवा जैसे राज्य की अधिपति रहीं लेकिन वह भारत की सनातन संस्कृति में हमारी दैवीय शक्तियों के समकक्ष ही प्रतीत होती है।

विश्व पथ प्रदर्शक भारत 58

भारत को विश्व का पथ प्रदर्शक कहना स्वाभाविक ही है क्योंकि यहाँ की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान परंपराएं सदियों से दुनिया को दिशा दिखाती आई हैं।

66 समाज, राजनीति और मीडिया का सच

जब 27 फरवरी 2002 को गुजरात के गोधरा में स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस की बोगी में आग लग गई थी और 59 बेगुनाह लोग जिसमें मासूम बच्चे और स्त्रियों की जान चली गई थी, इसका सच क्या है, हादसा या साजिश, ये फिल्म एक रिपोर्टर के नजरिए से पड़ताल करती है।

पाठकों से

संस्कृति पर्व का यह विशेष अंक आपके हाथों में है। इस अंक के लिये चित्रों का संकलन गूगल से किया गया है जिसके लिए हम उन सभी छायाकारों के प्रति कृतज्ञ हैं। इस अंक मे संभव है कि संपादन अथवा संयोजन में कुछ त्रुटियां रह गयी हों इसलिए हम अपने सुधी पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वे त्रुटियों को नजरअंदाज करेंगें। यह अंक आपको कैसा लगा इस बारे में हमें अपने विचारों से अवश्य अवगत कराईएगा। सनातन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में आपका योगदान अत्यंत मूल्यवान है।   – सम्पादक

संयुक्तांक
वर्ष-6 अंक-12 अक्टूबर-नवम्बर-2024

संस्कृति पर्व
sanskritiparva

सनातन प्रकाश पुंज
जगद्गुरू स्वामी वासुदेवाचार्य जी स्वामी विद्याभास्कर जी महाराज
स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती जी
(महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति एवं गंगा महासभा)
जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी (श्री अयोध्या जी)
स्वामी राजकुमार दासजी (श्री अयोध्या जी)

संरक्षक
श्री शिव प्रताप शुक्ल
(महामहिम राज्यपाल, हिमांचल)

विद्वत परिषद
प्रो. सभाजीत मिश्र - (पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, गो.वि.वि.)
श्री मनोजकांत - (निदेशक, राष्ट्रधर्म)
प्रो. सुरेन्द्र दुबे - (उपाध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)
प्रो. एम. एम. पाठक - (कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,नई दिल्ली)
प्रो. संजय द्विवेदी - (माखनलाल चतुर्वेदी रा.प.वि., भोपाल)
डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव - (अवकाशप्राप्त आई.ए.एस.)
श्री कृष्णकांत उपाध्याय - (वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक)
प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी - (सदस्य, आईसीएचआर, इतिहास विभाग, गो.वि.वि.)
प्रो. रामदेव शुक्ल - (पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गो.वि.वि.)
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय - (पूर्व अध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)
प्रो. अजित के चतुर्वेदी - (निदेशक, आईआईटी, कानपुर)
प्रो. राजेन्द्र सिंह - (पूर्व प्रतिकुलपति, गो.वि.वि.)
प्रो. मुन्ना तिवारी (अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग बु.वि.वि. झांसी)
श्री प्रफुल्ल केतकर - (सम्पादक, ऑर्गनाइजर)
डॉ मृणालिनी चतुर्वेदी - (अध्यक्ष क्रायोबैंक इंटरनेशनल, नई दिल्ली)
डॉ. नरेश अग्रवाल - (वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ, गोरखपुर)
भास्कर दूबे - (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)
डॉ. योगेश मिश्र - (समूह सम्पादक, अपना भारत/न्यूज ट्रैक, लखनऊ)
डॉ. देवर्षि शर्मा - (लेखक एवं समाजसेवी, कानपुर)
राकेश त्रिपाठी - (आई. आर. एस.)

प्रेरणा
परम पूज्य स्वामी अखण्डानंद जी महाराज
संत साहित्य मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
ब्रह्मर्षि रेवती रमण पाण्डेय

सलाहकार परिषद
अध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार उपाध्याय

सदस्य
डॉ. पुनीत कुमार द्विवेदी, (इंदौर)
श्री कुणाल तिलक, (पुणे)
श्री अनीश गोखले, (बेंगलुरु)
श्री अंबरीष फडणवीस, (मुम्बई)
श्री सुजीत कुमार पाण्डेय (वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)
दयानंद पाण्डेय (लेखक एवं पत्रकार)
डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव (चिकित्सक एवं लेखक, वाराणसी)
डॉ. वाई के मद्धेशिया (वरिष्ठ चिकित्सक, कुशीनगर)
प्रो. पुनीत विसारिया(हिन्दी विभाग, बुं.वि.वि. झांसी)
आचार्य सोमदत्त द्विवेदी (वाराणसी)
श्री अरुणकांत त्रिपाठी (सम्पादक, कमलज्योति)
श्री दीप्तभानु डे (वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)
श्री रतिभान त्रिपाठी (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)
श्री पुरुषोत्तम तिवारी (वरिष्ठ पत्रकार, कोलकाता)
डॉ. राम शर्मा (शिक्षाविद्, मेरठ)
दिवाकर शर्मा (वरिष्ठ पत्रकार, शिवपुरी)

प्रधान सम्पादक
श्री हनुमानजी महाराज

सम्पादकीय संरक्षक
पद्मश्री आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
प्रबंध सम्पादक
बी के मिश्र
सम्पादक
संजय तिवारी
कार्यकारी सम्पादक
डॉ. अर्चना तिवारी
सहायक सम्पादक
अनिता अग्रवाल
सह सम्पादक
आमोदकान्त मिश्र
आचार्य गोविन्द शर्मा
प्रज्ञा मिश्रा
सम्पादक : समन्वय
कैप्टन सुभाष ओझा
संयुक्त सम्पादक
सिद्धार्थ मणि त्रिपाठी
विशेष सम्पादकीय परामर्श
आचार्य लालमणि तिवारी
(गीता प्रेस, गोरखपुर)
श्री रसेन्दु फोगला
(गीता वाटिका, गोरखपुर)
श्री अजीत दुबे
(सदस्य साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)
केन्द्र प्रभारी, अमेरिका
आचार्य रत्नदीप उपाध्याय

विधि सलाहकार
श्री अमिताभ चतुर्वेदी
(वरिष्ठ अधिवक्ता, नई दिल्ली)
असित के चतुर्वेदी
(वरिष्ठ अधिवक्ता, लखनऊ)
लेखा परीक्षक
अरुण गुप्ता
लेआउट, ग्राफिक्स एवं डिजाइन
संजय मानव
सूचना तकनीक एवं प्रबंधन
उत्कर्ष तिवारी
क्रिएटिव
प्रकर्ष तिवारी
(*Shot by inflict & Blvck Hole Media*)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक संजय तिवारी द्वारा स्वास्तिक ग्रफिक्स, महागनगर, लखनऊ उ. प्र. से मुद्रित एंव बी–64, आवास विकास कॉलोनी, सूरजकुण्ड, गोरखपुर, उ.प्र. से प्रकाशित
पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के लिए संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। किसी भी प्रकार के न्यायिक विवाद का क्षेत्र गोरखपुर जिला न्यायालय के अधीन होगा।

पंजीकृत कार्यालय : बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड, गोरखपुर-273001
लखनऊ कार्यालय : 2/43, विजय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010
सम्पर्क - : + 9194508 87186-87

USA Office : 17413 Blackhawk St. Granada Hills, CA 91344 USA
Cell : 1-818-815-9826

- DISTRIBUTER -
Universal Book Sellers
82, Hazratganj, Luckcnow.
1/10, Vivek Khand,
Mithaiwala Chauraha,
Gomtinagar, Lucknow.
Cont : 9335912652
www.universbooksellers.com

(भारत संस्कृति न्यास और संस्कृति पर्व प्रकाशन का प्रकल्प)
editor.sanskritiparva@gmail.com
www.bharatsanskritinyas.org

Follow us

Shiv Pratap Shukla
Governor
Himachal Pradesh

शिव प्रताप शुक्ल
राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि **संस्कृति पर्व** मासिक पत्रिका द्वारा शक्ति, ज्योति और छठ को केंद्रित कर विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

शक्ति, ज्योति और छठ, प्रत्येक में एक अनूठा सार है, जो क्रमशः शक्ति, प्रकाश और कृतज्ञता की दिव्य ऊर्जा का प्रतीक है। शक्ति, सशक्तिकरण का प्रतीक है। यह वह आंतरिक शक्ति है जो हम सभी में है। ज्योति ज्ञान और करुणा के मार्गदर्शक प्रकाश का प्रतिनिधित्व करती है जो हमारे पथ को रोशन करती है। छठ पूजा, सूर्य के प्रति कृतज्ञता का उत्सव है, जो सादगी और प्रकृति के प्रति समर्पण पर जोर देता है। ये त्यौहार हमारे जीवन में एकता, सद्भाव और पवित्रता के प्रति श्रद्धा की भावना को समाहित करते हैं।

मुझे खुशी है कि "संस्कृति पर्व" पत्रिका अतीत और भविष्य के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का काम करती है, जो हमें ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह हमारी विरासत के बारे में आपकी समझ और प्रशंसा को गहरा करती है। पत्रिका में प्रकाशित लेख व अन्य लेखन सामग्री के माध्यम से सनातन संस्कृति के संरक्षण की दिशा में गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं, जिसके लिए मैं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूं।

पत्रिका के विशेषांक के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

(शिव प्रताप शुक्ल)

राज भवन, शिमला-171 002
Raj Bhawan, Shimla-171002
0177-2624840, 2624451
0177-2624440, 2624152
governorsecy-hp@nic.in

बी. एल. वर्मा
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण एवं
सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

B. L. VERMA
MINISTER OF STATE FOR
CONSUMER AFFAIRS, FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION &
SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

पत्रांक क्र. सी.ए.एस.जे.ई./220/24

दिनांक:28/10/2024

प्रिय तिवारी जी,

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आपके द्वारा **सनातन संस्कृति** की अग्नि पत्रिका **संस्कृति पर्व** के आगामी षष्ठ विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। गत पाँच वर्षों के अन्तर्गत आपके द्वारा 32 विशेषांक प्रकाशित किया जाना इस सदर्भ को दर्शाता है कि आप सनातन धर्म के प्रति एवं पूर्वजों के प्रति कितनी आस्था रखते है। इतिहास गवाह है कि **राष्ट्रमाता आहिल्याबाई होल्कर से लेकर माता जीजाबाई एवं छत्रपति शिवाजी** द्वारा अपने वतन के लिये जीवन भी बलिदान करने में संकोच नहीं किया। इन वीरों ने लालकिले के प्राचीर पर भगवा ध्वज लहराकर यह सकेंत दिया कि देशवासियों के लिये वतन प्रथम एवं सर्वोपरि है।

मैं आपको उक्त पुस्तिका के प्रकाशन पर **भारत सरकार के उपभोक्ता मामलें, खाद्य व सार्वजनिक वितरण एवं सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय** की ओर से शुभकामनाएँ प्रदान करता है।

भवदीय

(बी.एल.वर्मा)

सेंवा में
श्रीमान संजय तिवारी जी,
संपादक
संस्कृति पर्व

कार्यालय : कृषि भवन
डॉ० आर.पी. रोड, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-23070650, 23070651

कार्यालय : 623, ए.विंग, शास्त्री भवन,
डॉ० आर.पी. रोड, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-23072192, 23072193

विश्व इस समय अत्यंत विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। दो बड़े युद्ध जारी हैं। दुनिया में एक प्रकार का भय जैसा वातावरण बना हुआ है। ऐसे में विश्व को केवल भारत से उम्मीद बनी है क्योंकि सनातन की यह संस्कृति ही विश्व में शांति और सद्भाव स्थापित कर सकती है। ऐसा इसलिए भी क्योंकि भारत वर्ष उत्सव प्रधान देश है। भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को लोक तक संप्रेषित करने के लिए ही इन उत्सवों की रचना की गई है। मनुष्य अपने जन्म से लेकर महाप्रस्थान तक अपने सभी सुख–दुख इसी उत्सव वाली जीवन यात्रा के साथ रहता है। वह ईश्वर की उपासना से लेकर अपने जीवन के सभी महत्वपूर्ण कार्य उत्सव के रूप में ही सम्पादित करता है। ये उत्सव ही उसकी यात्रा के लिए ऊर्जा प्रदान करते हैं। इन उत्सवों को अपने पर्व, त्यौहारों के साथ समन्वित करते भारतीय समाज के लिए यह वास्तविक आनंद की स्थिति भी होती है।

संस्कृति पर्व का प्रस्तुत अंक जिस ढंग से सनातन संस्कृति के आधार तत्वों और मूल्यों को केंद्रित कर समायोजित किया गया है, इसमें कार्तिक जैसा पूरा महीना ही उत्सव एवं अनुष्ठान का है। अंग्रेजी महीने के अक्टूबर और नवंबर को समायोजित कर इस अंक को एक विशेष स्वरूप प्रदान किया गया है। इसका प्रत्येक दिन अत्यंत महत्वपूर्ण है। वस्तुतः यह महीना मनुष्य को अध्यात्म से जगत के उत्सव में प्रवेश कराता है। जीवन को संपूर्णता से जीने का भाव जगाता कार्तिक के महात्म्य के साथ ही विश्व परिदृश्य को प्रस्तुत करने वाला यह अंक निश्चय ही अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अंक को संयोजित करने में संस्कृति पर्व की संपादकीय परिषद ने अथक परिश्रम किया है उसके लिए बधाई।

संस्कृति पर्व का यह विशिष्ट अंक आपके हाथों में है। इस अंक के बारे में आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है। हमें आपके सुझाव, सहयोग एवं दृष्टि दर्शन की प्रतीक्षा रहेगी।

बी के मिश्रा

सनातन भारत का ज्योतिपथ

संजय तिवारी

आधुनिक नए भारत में सनातन योद्धा के रूप में निरंतर कार्यरत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक हैं तो सेफ हैं का उदघोष भी अद्भुत है। इससे पूर्व कि संस्कृति पर्व के इस अति विशिष्ट अंक के आधार को रेखांकित करें, इस अंक के प्रकाशन में हुए थोड़े विलंब के लिए क्षमा याचना करते हैं। यह संयुक्तअंक इस माह के आरम्भ में आना था किंतु कुछ अपरिहार्य अवस्था के कारण थोड़ा विलंब हुआ। हमें विश्वास है कि हमारे सुधी पाठक क्षमा अवश्य करेंगे।वैश्विक मंच को ज्योतिर्मय करते हुए निरंतर ज्योतिपथ पर अग्रसर भारत कीसनातन जीवन संस्कृति औत्सविक है।

भारत राम का है। श्रीराम का सनातन राष्ट्र है। श्रीराम के राष्ट्र का सनातन सिद्धांत है। यह राष्ट्रोदय अद्भुत है। सनातन सृष्टि की यात्रा में भारत का राष्ट्रोन्मुख स्वरूप अद्भुत है। विश्व कैलेंडर का वर्ष 2024 अपने अवसान की ओर है लेकिन सनातन भारत की गति तीव्र हो रही है। माता अहिल्याबाई होलकर की 300वीं और लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती वर्ष के साथ इतिहास के अवलोकन का आनंद भी है और सदाशय एकता और नेक होने की आकांक्षा भी। यह भी संयोग है कि 26 नवंबर को भारत के संविधान की स्वीकृति के 75 वर्ष हो रहे हैं। यह हमारे महान लोकतंत्र और भारत की समृद्ध विरासत का एक उत्सव ही है जिसका प्रभाव हमें देखने को मिलता रहेगा। आधुनिक नए भारत में सनातन योद्धा के रूप में निरंतर कार्यरत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक हैं तो सेफ हैं का उदघोष भी अद्भुत है। इससे पूर्व कि संस्कृति पर्व के इस अति विशिष्ट अंक के आधार को रेखांकित करें, इस अंक के प्रकाशन में हुए थोड़े विलंब के लिए क्षमा याचना करते हैं। यह संयुक्तअंक इस माह के आरम्भ में आना था किंतु कुछ अपरिहार्य अवस्था के कारण थोड़ा विलंब हुआ। हमें विश्वास है कि हमारे सुधी पाठक क्षमा अवश्य करेंगे।वैश्विक मंच को ज्योतिर्मय करते हुए निरंतर ज्योतिपथ पर अग्रसर भारत कीसनातन जीवन संस्कृति औत्सविक है।

उत्सव इस संस्कृति के आधार तत्व हैं। ये कभी पर्व के रूप में, कभी त्यौहार के रूप में, कभी साधना के रूप में, कभी आराधना के रूप, में कभी पूजा के रूप में, कभी अनुष्ठान के रूप में और कई बार अनायास प्रतीत होते हुए भी प्रत्येक भारतीय के जीवन में आते रहते हैं। इन उत्सवों का जीवन से अद्भुत् किस्म का संबंध होता है। पश्चिम की दुनिया भारत की औत्सविकता को नहीं समझ पाती है लेकिन वह भारत के इन उत्सवों का प्रतिरूप स्थापित करने की कोशिश अवश्य करती है। उसकी कोशिशों में कोई तारतम्य एवं विज्ञान हो यह जरूरी नहीं। लेकिन भारतीय सनातन संस्कृति के प्रत्येक उत्सव, पर्व, त्यौहार या किसी भी आयोजन को विज्ञान की कसौटी पर कभी भी कसा जा सकता है। यद्यपि भारत में अपने पर्वों, त्यौहारों, या परम्पराओं को लेकर शोध कार्य बहुत कम हुए हैं। दूसरी तरफ पश्चिमी जगत इस समय भारत की सनातनता के तत्वों को समझने की कोशिश में जुटा है। पश्चिम किस तरह भारत को लेकर उत्सुक है इसका पता इस बात से चलता है कि उनके यहां भारतीय सनातन संस्कृति की दान देने की परम्परा को लेकर शोघ कार्य हो रहे हैं। पश्चिमी जगत दान के विज्ञान का पता लगाने में जुटा है। यह अलग बात है कि भारत में कथित शिक्षित और प्रगतिशील लोग दान का जबरदस्त मखौल उड़ाते हैं। आखिर सनातन संस्कृति के वे कौन से तत्व हैं जिनको लेकर दुनिया बहुत उत्सुक दिखती है। आखिर उन तत्वों पर भारत के भीतर गम्भीर शोध कार्य क्यों नहीं किये जाते हैं। यह प्रश्न अपनी जगह है लेकिन यह भी उतना ही सच है कि सनातन संस्कृति के प्रत्येक आयोजन के पीछे बहुत ही गम्भीर विज्ञान छिपा हुआ है। संस्कृति पर्व का आगे का अंक प्रयागराज में होने वाले कुंभ पर आधारित होगा जिसमें सनातन की इस यात्रा और विज्ञान के तत्वों का विवेचन आपको पढ़ने को प्राप्त होगा। अभी जो अंक आपके हाथ में है, इससे बहुत कुछ समझा जा सकता है। यदि अपने पर्व त्यौहारों पर गम्भीर चिंतन शुरू किया जाये तो उनके पीछे के विज्ञान को हम अवश्य पा सकते हैं। इसको

प्रत्येक वर्ष पड़ने वाले पर्वों की यात्रा से समझने का प्रयास किया जाना चाहिए। भारतीय भूभाग में भारतीय कैलेंडर के चार महीने अद्भुत् हैं। ये महीने हैं – सावन, भादों, क्वार/अश्विन, और कार्तिक। हमारे लगभग सभी प्रमुख पर्व इन्हीं महीनों में पड़ते हैं। सावन की नाग पंचमी से शुरू होकर कार्तिक की पूर्णिमा तक पर्वों का पुंज होता है। इसके बाद भौतिक जीवन के क्रिया कलाप और उनसे जुड़ी गतिविधियों के साथ कुछ उत्सव कुछ पर्व कुछ त्यौहार कुछ अनुष्ठान और कुछ उपासनाओं के दिन आते रहते हैं। यह क्रम वर्ष भर चलता है और उन्हें हम मनाते रहते हैं। सावन को सनातन संस्कृति शिव का महीना मानती है। इस पूरे महीने प्रकृति और ब्रह्माण्ड के बीच एक अलग प्रकार का संबंध बनता है। शिव की उपासना या पूजा में प्रकृति और अंतरिक्ष के तत्व ही मुख्य हैं। हमारे पर्वों की श्रृंखला भगवान शिव के इसी महीने में पड़ने वाली नाग पंचमी से शुरू होती है। यानि शिव पूजा के बाद और साथ सबसे पहली पूजा नाग देवता की होती है। नाग पंचमी के बाद पर्वो का पुंज शुरू होता है जिसमें हरितालिका तीज, जीवित पुत्रिका व्रत पड़ते हैं। सावन बीतते ही सबसे पहले पृथ्वी पर निवास करने वाले प्रत्येक मनुष्य के पितरों की पूजा के लिये पन्द्रह दिनों को निर्धारित किया गया है जिसको पितृ पक्ष के रूप में हम जानते हैं। इसके बाद नवरात्र शुरू हो जाता है।

अब इस क्रम को समझिये– सृष्टि के संचालन का दायित्व संभाल रहे आदि देव भगवान शिव को पूरे सावन पूजने के बाद सनातन संस्कृति अपने पूर्वजों को याद करती है। उनकी पूजा करती है और उसके बाद नौ दिनों तक शक्ति की साधना का समय होता है। शक्ति साधना यानि नवरात्र के समाप्त होने के ठीक पांच दिन बाद शरद पूर्णिमा पड़ती है। इसके बाद नरक चतुर्दशी, धनतेरस, लक्ष्मी पूजा (दीपावली), अन्न कूट (यानि परुआ) फिर गोवर्धन पूजा, भाई दूज, फिर सूर्य षष्ठी, फिर गोपाष्टमी फिर अक्षय नवमी फिर देवोत्थानी एकादशी और आखिर में कार्तिक पूर्णिमा को कार्तिक मास की विदाई हो जाती है। इसी दिन सनातन संस्कृति में स्थापित चतुर्मास का भी समापन हो जाता है। यह ध्यान देने वाली बात है कि भारत में ये सभी त्यौहार जब शुरू होते हैं तो उनमें भगवान शिव की पूजा के दौरान ही नाग पूजा क्यों की जाती है? अपने पर्व त्यौहारों के गूढ़ वैज्ञानिक रहस्यों को बहुत सलीके से समझने की आवश्यकता है। यहां नाग पंचमी को लेकर एक वैज्ञानिक विवेचन इतना आवश्यक लगता है जिससे अपने पर्वों की वैज्ञानिकता काफी हद तक समझ में आती है। पृथ्वी पर मौजूद समस्त प्राणि जगत को आधुनिक विज्ञान ने अपने ढंग से वर्गीकृत किया है। यह वर्गीकरण कशेरुकी और अकशेरुकी प्राणियों के रूप में यानि कार्डेटा और नानकार्डेटा के रूप में किया गया है। यानि प्राणियों के दो बड़े समूह हैं जिनको उनकी कशेरुकी यानि मेरूदंड के आधार पर विभाजित किया जाता है। समस्त प्राणिजगत में 95 फीसद जीव ऐसे हैं जो अकशेरुकी श्रेणी में आते हैं। शेष 5 प्रतिशत कशेरुकी प्राणियों का अधिकांश समूह जलचर है। एक सरीसृप वर्ग ऐसा है जो उभयचर है और इसी वर्ग से कार्डेट्स समूह की शुरुआत होती है। यानि सर्प प्रथम प्राणि है जो पृथ्वी पर जल से बाहर रहने वाले प्राणियों के समूह में भी रहता है। सावन में सभी ओर पर्याप्त जल होता है। उस महीने में जब सनातन संस्कृति अपने सबसे बड़े देवता भगवान शिव की आराधना कर रही हाती है उसी महीने में वह पंचमी तिथि को कार्डेटा जगत के सबसे प्रथम उभयचर जीव सरीसृप वर्ग के लिये समर्पित करती है। यानि प्राणी जगत का वह प्रथम जीव जो जल से इतर स्थलों में निवास करने वाले प्राणियों के साथ भी निवास करने आता है। यह जीव सर्प होता है। नाग पंचमी की पूजा के हमारे पारम्परिक कारण भी हो सकते हैं। वह आदि देव भगवान शिव के साथ सदैव रहता है। इसलिये भी उसकी पूजा की जाती है। शिव स्वयं प्रकृति हैं और प्रकृति के चिन्ह के रूप में ही शिव के आराधना का विज्ञान है। नाग हमोर लिये देवता हैं। सनातन शास्त्र इस बारे में काफी ज्ञान रखते हैं। अब क्रम देखिये कि सावन में हमने प्रकृति की पूजा की, फिर पितरों की पूजा की फिर शक्ति की साधना की और महारास की रात से भौतिक जीवन की साधनाओं में लग गये। सबसे पहला काम प्रकृति की शुद्धता और स्वच्छता का होता है। नरक चतुर्दशी से पूर्व तक प्रायः प्रत्येक घर और उसका कोना–कोना बिल्कुल स्वच्छ किया जा चुका होता है। इस स्वच्छता अभियान में हर घर से निकले कूड़े को घूर बनाकर उस पर नरक चतुर्दशी को दीया जलना और जलाना स्वयं में स्वच्छता के विज्ञान का संदेश वाहक है।

एक अन्य उदाहरण के रूप में पूर्णिमा को ही लेते हैं। अश्विन माह की शुरुआत से कार्तिक महीने के अंत तक शरद ऋतु रहती है। शरद ऋतु में दो पूर्णिमा पड़ती है। इनमें अश्विन माह की पूर्णिमा महत्वपूर्ण मानी गई हैं। इसी पूर्णिमा को

शरद पूर्णिमा कहा जाता है। इसे कोजगार पूर्णिमा भी कहते हैं वहीं इसके अलावा जागृति पूर्णिमा या कुमार पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। पुराणों के अनुसार कुछ रातों का बहुत महत्व है जैसे नवरात्रि, शिवरात्रि और इनके अलावा शरद पूर्णिमा भी शामिल है। श्रीमद्भागवत महापुराण के अनुसार चन्द्रमा को औषधि का देवता माना जाता है। इस दिन चांद अपनी 16 कलाओं से पूरा होकर अमृत की वर्षा करता है। मान्यताओं से अलग वैज्ञानिकों ने भी इस पूर्णिमा को खास बताया है, जिसके पीछे कई सैद्धांतिक और वैज्ञानिक तथ्य छिपे हुए हैं। इस पूर्णिमा पर चावल और दूध से बनी खीर को चांदनी रात में रखकर ब्रह्म बेला में सेवन किया जाता है। इससे रोग खत्म हो जाते हैं और रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।एक अन्य वैज्ञानिक शोध के अनुसार इस दिन दूध से बने उत्पाद को चांदी के पात्र में सेवन करना चाहिए। चांदी में प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। इससे विषाणु दूर रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम 30 मिनट तक शरद पूर्णिमा का स्नान करना चाहिए। इस दिन बनने वाला वातावरण दमा के रोगियों के लिए विशेषकर लाभकारी माना गया है। एक अध्ययन के अनुसार शरद पूर्णिमा पर औषधियों की स्पंदन क्षमता अधिक होती है। यानी औषधियों का प्रभाव बढ़ जाता है। रसाकर्षण के कारण जब अंदर का पदार्थ सांद्र होने लगता है, तब रिक्तिकाओं से विशेष प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती है। लंकाधिपति रावण शरद पूर्णिमा की रात किरणों को दर्पण के माध्यम से अपनी नाभि पर ग्रहण करता था। इस प्रक्रिया से उसे पुनर्यौवन शक्ति प्राप्त होती थी। चांदनी रात में 10 से मध्यरात्रि तक कम वस्त्रों में चंद्र स्नान कने वाले व्यक्ति को विशेष ऊर्जा प्राप्त होती है। सोमचक्र, नक्षत्रीय चक्र और अश्विन के त्रिकोण के कारण शरद ऋतु से ऊर्जा का संग्रह होता है और बसंत में निग्रह होता है। वैज्ञानिकों के अनुसार दूध में लैक्टिक अम्ल और अमृत तत्व होता है। यह तत्व किरणों से अधिक मात्रा में शक्ति का शोषण करता है। चावल में स्टार्च होने के कारण यह प्रक्रिया और भी आसान हो जाती है। इसी कारण ऋषि-मुनियों ने शरद पूर्णिमा की रात्रि में खीर खुले आसमान में रखने का विधान किया है और इस खीर का सेवन सेहत के लिए महत्वपूर्ण बताया है। इससे पुनर्यौवन शक्ति और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह परंपरा विशुद्ध विज्ञान है।

तात्पर्य यह कि सनातन संस्कृति के इन पर्वों को विशेष वैज्ञानिक दृष्टि से देखने की आवश्यकता है ताकि इनको केवल सामान्य लोकाचार या परम्परा मानकर समाज इनसे दूर न हो। खासतौर पर भारत की नई पीढ़ी का अपने पर्व त्यौहारों और उत्सवों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। यह कितना बड़ा विज्ञान हारे पूवर्जों ने हमें उपलब्ध कराया है जिस पर सभी को गर्व होना चाहिए। यदि केवल कार्तिक महीने को ही लेलें तो यह भौतिक जगत में जीवन के संस्कार के रूप में स्थापित दिखता है। सावन के शिव अश्विन की शक्ति के बाद कार्तिक में समृद्धि की देवी लक्ष्मी की आराधना और आवाहन के साथ मनुष्य नया जीवन शुरू करता है। इस नये जीवन में नये मांगलिक अनुभव, नया अन्न, नया बावग (कृषि) और नये अंकुर के साथ शुरू होने वाली यात्रा शरद के साथ आगे बढ़ती है जो बसंत में ज्ञान की देवी महासरस्वती की उपासना और रंग पर्व होली से होते हुए पुनः सावन की ओर चल देती है।यह भले ही भारत की सनातन परम्परा के दृश्य हैं किंतु यह भी चिंतन का विषय है कि इनमें जो कुछ भी संस्कार दिख रहे वे समग्र मानवता ही नहीं बल्कि सृष्टि के सुख और समन्वय के लिए हैं। ऐसे समय में जबकि दुनिया इस समय अनेक युद्धों का सामना कर रही है, असंख्य आयुध उपयोग में लाए जा रहे हैं, अनगिनत नकाराक शक्तियां आकार लेकर विध्वंस की साजिश में लगी हैं, बावजूद इनके भारत की सनातन संस्कृति ठीक से स्थापित भी हो रही है और विश्व के लिए उम्मीद की एक मात्र किरण बनकर सामने परिलक्षित भी हो रही है। विश्व भारत की ओर बड़े आशा के साथ देख रहा है। ऐसे में हमारी जिम्मेदारी बड़ी है। अपनी इस सनातन वैभवशाली विरासत की ऊर्जा से संपूर्ण मानवता को सुरक्षित और संरक्षित करने की दिशा में एकात्म भाव से प्रयास करें, यही कल्याण का भाव होना चाहिए। ज्योतिपथ पर अग्रसर सनातन भारत को श्रीराम के सनातन राष्ट्र के रूप में सजाकर प्राणियों में सद्भावना और विश्वकल्याण का मार्ग सुगम बनाने के लिए आगे बढ़ें, यही कामना हो।

श्रीराम का सनातन भारत

प्रमोद कुमार दुबे

आदिकवि वाल्मीकि ने कहा है-

न हि तद् भविता राष्ट्रं यत्र रामो न भूपतिः-

जहाँ राजा राम नहीं होते, वहाँ राष्ट्र नहीं होता। श्रीराम के बिना राष्ट्र का लोप हो जाता है। जब राक्षस राष्ट्र विकास को अवरुद्ध कर देते हैं, श्रीराम राक्षसों का संहार कर राष्ट्र का पुनर्सृजन करते है। महायशस्वी राम केवल संहार में ही सक्षम नहीं हैं, पुनर्सृजन में भी सक्षम हैं-

पुनरेव तथा स्त्रष्टुं शक्तो रामो महायशाः।

(39.स.51सुंदर. वा.रा.)

राष्ट्र की पुनर्स्थापना के लिए ही अयोध्या राज्य से श्रीराम का बहिर्गमन हुआ। उन्होंने समुद्र पर्यन्त पृथ्वी पर पुनः एक राष्ट्र स्थापित किया। समुद्र पर्यंत पृथ्वी एक राष्ट्र है-

पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया एक राष्ट्र इति।

(ऐतरेय ब्राह्मण)

राष्ट्र सामान्य भूखंड नहीं है। राक्षसों के तामसिक भूखंड को राष्ट्र नहीं कहा जा सकता। राष्ट्र

> राष्ट्र वैदिक शब्द है। राष्ट्र की धारणा यज्ञ संस्था द्वारा निर्मित है। राष्ट्र के लिए वेद, वेदी, यज्ञ और यज्ञभूमि होना अनिवार्य है। इसका अभिप्राय केवल आध्यात्मिक नहीं है, अपितु आधिदैविक, आधिभौतिक और भौतिक भी है। यज्ञ का सामान्य परिचय पाने के लिए हम षड्ऋतुओं का चक्र देखें, जिससे राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि होती है, कृषि उत्पादों सहित धरती पर उगनेवाली समस्त वनस्पतियों का आर्थिक लाभ मनुष्य को प्राप्त होता है।

लेखक प्रख्यात सनातन चिंतक एवं एनसीईआरटी के आचार्य हैं।

दीप्तमान भूमि है-राजृ-दीपौ, राजते दीपते प्रकाशते इति राष्ट्रम्। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने अपने भारत देश के लिए गाया-अरुण यह मधुमय देश हमारा। प्रभात की अरुणिमा से देदीप्यमान, ज्ञानमय और एकात्मता से मधुमय राष्ट्र है भारत।

राष्ट्र वैदिक शब्द है। राष्ट्र की धारणा यज्ञ संस्था द्वारा निर्मित है। राष्ट्र के लिए वेद, वेदी, यज्ञ और यज्ञभूमि होना अनिवार्य है। इसका अभिप्राय केवल आध्यात्मिक नहीं है, अपितु आधिदैविक, आधिभौतिक और भौतिक भी है। यज्ञ का सामान्य परिचय पाने के लिए हम षड्ऋतुओं का चक्र देखें, जिससे राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि होती है, कृषि उत्पादों सहित धरती पर उगनेवाली समस्त वनस्पतियों का आर्थिक लाभ मनुष्य को प्राप्त होता है।

सभी प्राणी इस प्राकृतिक यज्ञ के लाभार्थी हैं-यह देवों का यज्ञ है, इसमें वसंत घृत है, ग्रीष्म ईंधन और शरद हवि है-

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

(6.90.10. ऋग)

देव यज्ञ के अनुसरण में ही ऋषि यज्ञ करते हैं और प्रकृति के तदनुकूल जीवन यापन करते हैं। ऋषियों की संतानें आज भी खगोलीय दिक्काल चक्र के अनुसार व्रत, पर्व, त्योहार, उत्सव मनाती हैं। ऋषियों द्वारा स्थापित वैदिक आचार ही भारत के राष्ट्र होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जब राक्षस प्रवृत्ति की वृद्धि होती है, राष्ट्र संकुचित होने लगता है, टूटने-बिखरने लगता है। रावण के काल में ऋषि प्रणीत राष्ट्र का लोप होने लगा था। श्रीराम के आगमन से पुनः राष्ट्र रक्षक क्षात्र धर्म का संवहन हुआ। ऋषि कामना करते हैं कि हमारे राष्ट्र के क्षत्रिय वीर, धनुधर, महारथी हों-

आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यः अति
व्याधी महारथो जायताम्

(45.12. यजु.)।

जो अपने धनुर्विद्या के बल से अनेक भाषा बोलनेवाले और विविध धर्मों को मानने वाले और विभिन्न प्रकार के उद्यमों से अर्थार्जन करनेवाले जनजीवन को पारिवारिक आत्मीयता से पालन करें-

जनं बिभ्रती बहुधाविवाचसं
नाना धर्माणं पृथिवी यथैकसम्।
सहस्त्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां,
ध्रुवेव धनुरनपस्फुरन्ती।

(45.12. अथर्व)।

यही वैदिक धारणा रामराज्य में चरितार्थ होती है।

दुष्टों में भय उत्पन्न करनेवाले धनुष और बाणधारी रुद्रदेव का अनुसरण सतत बना रहा -**इषुमद् भयो ध्वन्वायिभ्यश्च वो नमो नमः।** युग बदला, त्रेता आया, रुद्र देव के धनुष का उत्तराधिकार श्रीराम को मिला। श्रीराम के धनुष-बाण से दुष्ट भयभीत होने लगे। समुद्र पर्यंत भारत राष्ट्र की पुनर्स्थापना के लिए अयोध्या राज्य की सीमा से निकल श्रीराम वनवासी हो गये, उनके निवास से वन भी राष्ट्र हो गये-तद् वनं भविता राष्टं यत्र रामो निवत्स्यति। शिव भूमि हिमालय से कन्याकुमारी तक उत्तर और दक्षिण की पावन भूमि धनुषाकार ही तो है। हिमालय की दो छोर हैं जनकपुर और अयोध्या, धनुष की इन दो छोरों से बँधी हुई प्रत्यचा समुद्र तक खिंची हुई है। इस में अर्धवृत्त और वर्ग दोनों 360 अंश के वृत्त में हैं, जिसमें त्रिसप्त विद्यमान है- ये त्रिसप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः। इस पूर्ण संरचना में रामायणी संस्कृति प्रवाहमान है।

आदिकवि की घोषणा है कि जबतक पृथ्वी पर नदियाँ रहेंगी, पर्वत रहेंगे लोक में रामायण की कथा प्रचारित होता रहेगी-

यावद् स्थास्यन्ति गिरयः सरिताश्च महीतले।
तावद् रामायण लोकेषु प्रचरिष्यति।

(36.2.बाल. वा.रा.)।

भारत राष्ट्र के रक्षक और प्रतिपालक कोदण्ड राम हैं। महर्षि भरद्वाज ने धनुष के विषय में कहा है कि धनुष से हम गौवें और धन की रक्षा करें, भयंकर संग्राम जीतें। धनुष शत्रु के आक्रमण को रोक देता है। धनुष से हम सारी दिशाओं में विजय प्राप्त करें-

धनुः शत्रोरपक्रामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयम।

(2.75. ऋग्.)।

राष्ट्र की स्वतंत्रता और संप्रभुता को स्थायित्व प्रदान करने के लिए वरुण, बृहस्पति, इन्द्र और अग्नि से कामना की गयी है। बृहद्देवता के अनुसार वरुण समस्त लोकों को जोड़ कर रखने वाली आद्रता है। बृहस्पति बृहद ज्ञानसत्ता, इन्द्र केन्द्रीय प्राण है-

मध्ये प्राण एष एवेन्द्रः

(1.1.1.6. शत.ब्रा.)

अर्थात ओज और अग्नि क्रियात्मक तेज है, इन चारों शक्तियों से राष्ट्र ध्रुवीकृत रहता है-

ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पति।
ध्रुवं ते इन्द्रश्चाग्नि राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्

(5. 171. 10 ऋ.)।

प्रजा रक्षक राजा को इन्द्र का चतुरांश माना गया है-

इन्द्रस्यैव चतुर्भागः प्रजा रक्षति राघवः।

श्रीराम नगर में रहें या वन में, वही राजा हैं वही समस्त जन समुदाय के पालक हैं-

नगरस्थो वनस्थो वा त्वं नो राजा जनेश्वरः।

श्रीराम यज्ञ पुरुष विष्णु विराट के मानुषी अवतार हैं, उन्हीं में स्वराट् है, वही सनातन राष्ट्र हैं। जब जब भारत राष्ट्र राममय होता है, सशक्त और प्रखर हो उठता है। श्रीराम का आधार रहेगा, तभी स्वराट् रहेगा,

स्वराज रहेगा, राष्ट्र रहेगा। श्रीराम के बिना भारत अन्यराट् बनकर क्षत-विक्षत होता रहा, जैसा कि पराधीनता काल में हुआ। राष्ट्र की स्वतंत्रता और संप्रभूता के ध्रुव श्रीराम को अद्यतन संदर्भों में पहचानना होगा। हमें अवश्य जानना चाहिए कि शताब्दियों तक ऐतिहासिक कुहरे में सतत संघर्ष करनेवाली अयोध्या की पीड़ा लगभग बतीस वर्ष पहले अपने अन्त की ओर बढ़ने लगी, उस समय वैश्विक और राष्ट्रीय परिस्थितियाँ कैसी थी? वर्तमान समय की राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों के सापेक्ष श्रीराम के आगमन का अभिप्राय क्या है और इसके साथ यह भी कि वर्तमान वैश्विक संकट में श्रीराम के सनातन राष्ट्र भारत की भूमिका क्या होगी?

लगभग उनतीस वर्ष पहले भारत में नई आर्थिक नीति आई और उससे तीन वर्ष पूर्व विश्व ने श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति अभियान में तीव्र जन सहभागिता देखी थी। आर्थिक विश्वीकरण के आरंभिक दौर में यह चिन्ता अधिक मुखर नहीं थी कि इससे सांस्कृतिक अस्मिता के सामने चुनौतियाँ खड़ी होगी। तेज गति से बाजारवाद का प्रभाव बढ़ेगा, फिल्म, टेलीविजन और फैशन इत्यादि सांस्कृतिक उत्पादों के दुष्प्रभाव पड़ेंगे।

भौतिक रूप से सबल देशों के सांस्कृतिक उत्पाद दुर्बल देशों के सांस्कृतिक उत्पादों को मारने लगेंगे। समाज की मानसिकता बदलने लगेगी, युवाओं के खानपान, वेशभूषा, बोलचाल में परिवर्तन होगा और सांस्कतिक पहचान खोने लगेगी। विगत दशकों में परिदृश्य बदला, उपभोक्ता प्रवृत्ति का विस्तार हुआ, सांस्कृतिक एकरूपता बढ़ने लगी, युवा मानस में आत्म विस्मृति बढ़ी।

सांस्कृतिक एकरूपता से होनेवाली हानि का एक उदाहरण मैक्सिको का फिल्म उद्योग है। विश्वव्यापार संगठन के पूर्व मैक्सिको में सौ से अधिक फिल्में बनती थी। 1995 के बाद मैक्सिकन फिल्मों की संख्या सौ से घटकर चालीस हो गई और 1998 आते-आते दस से भी कम हो गई। अमेरिका फिल्म उद्योग हॉलीवुड मैक्सिको के फिल्म उद्योग को निगलने लगा। भारतीय शब्दावली में यह मत्स्य न्याय है-मत्स्या इव भक्षन्ति परस्परम्। वाल्मीकीय रामायण के अनुसार यह अराजकता का लक्षण है।

वैश्विक समस्या से भारत प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, भारत के सामने भी अपनी भाषा, साहित्य, संस्कृति और राष्ट्रीय पहचान को सुरक्षित रखने की चुनौती खड़ी हुई। भारत में भी अँग्रेजी की मार से भारतीय भाषाएँ दम तोड़ रही हैं। विश्व के दूसरे देशों की तरह भारत के युवा भी सामयिक भौतिकता के बहाव में सुध-बुध खोकर बह रहे हैं। दिन-दिन विकृत होते गाँवों के चेहरे गवाही दे रहे हैं कि उनपर बाहरी प्रभाव सवार हो चुका है। यह नहीं भूलना चाहिए कि चुनौतियाँ हम से समाधान की उम्मीद करती हैं।

इसी तरह की चुनौतियाँ भारतीय समाज के सामने अँग्रेजी राज में भी आयी थीं, लोगों के आहार विहार में, आचार-विचार में परिवर्तन आने लगे थे और तब भारत के मनीषियों ने सांस्कृतिक अस्मिता के रक्षार्थ प्रत्येक स्तर पर कार्य किया था। आर्थिक मोर्चे पर स्वदेशी आंदोलन हुआ था, विदेशी उत्पादों के उपभोग का वहिष्कार और निजी उत्पादनों के उपभोग से अर्थ स्वालंबन का अलख जगाया गया था। पराधीन दशा में आयी सामाजिक विकृतियों को दूर करने के प्रयास हुए थे, राजनीतिक स्वाधीनता के मोर्चे पर 'रघुपति राघव राजा राम' की धुन गूँज रही थी।

अँग्रेजी राज के आर्थिक शोषण के विरुद्ध आर्थिक स्वालंबन और अन्यायी राज के विरुद्ध रामराज्य का अभियान चल रहा था। यह अभियान नया नहीं था। यह मुगल काल में भी सक्रिय था। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि जब-जब राष्ट्र जीवन संकट ग्रस्त हुआ, श्रीराम का आलंब मिला।

मुगल कालीन सांस्कृतिक संकट में लोग बादशाहों-नवाबों के अनुकरण कर रहे थे और तब संतों-महात्माओं ने धार्मिक, सांस्कृतिक अस्मिता के रक्षार्थ निरंतर कार्य किया था।

आज का संकट सूक्ष्म है, आज पराधीन बनानेवाली शक्तियों ने सूक्ष्म मकड़ जाल फैला रखा है जिसमें दासता का अनुभव नहीं होता और हम स्वयं के हितों से विस्थापित होकर अन्य की हस्ती के सामान बन गल-खप रहे होते हैं। बहुधा हमें शिक्षा, भाषा, विधि-विधान, साहित्य-कला की दासता का अनुभव नहीं होता। लेकिन जब जब इस व्यवस्था में भारत की धार्मिक-सांस्कृतिक अस्मिता उपेक्षित और प्रताड़ित होती है, मन अवश्य प्रश्नाकुल होता है कि क्या यह जनतांत्रिक राजनीति भारत का हित करने सक्षम है?

यह प्रश्न तथाकथित स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही उठने लगा था और सताइस वर्ष बाद यानि आज से पचास वर्ष पहले परिवर्तनकारी आन्दोलन का विकराल रूप ले लिया, जिसका ध्येय था-संपूर्ण क्रांति। इससे सिंहासन तो खाली हो गया, जनता भी सत्तासीन हो गई, लेकिन, व्यवस्था नहीं बदली। जिस जनतांत्रिक तानाशाही के विरुद्ध जनाक्रोश उभरा था, उसी जनतांत्रिक तानाशाही के नये-नये संस्करण बन गये। आज नेता वोट बैंक के अधीन है, वह स्वयं स्वाधीन नहीं है, जनता हित क्या करेगा।

अँग्रेज के बाद की जनतांत्रिक तानाशाही और संपूर्ण क्रांति के बाद की जनतांत्रिक तानाशाही में केवल जनाधार के समीकरण का अंतर था। वस्तुतः वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में इससे अधिक परिवर्तन संभव नहीं है। क्योंकि यह अँग्रेजी राज से प्रसूत राजनीतिक व्यवस्था है।

भारत में अँग्रेज कंपनी बनकर आया था। कंपनी को व्यवसाय के विस्तार के लिए राजसत्ता की अनुमति आवश्यक थी। भारत की आन्तरिक परिस्थितियों के कारण अँग्रेज को राजसत्ता हाथ लग गयी, उसकी राजसत्ता जनता के हित के लिए नहीं, धन की लूट के लिए थी। अँग्रेज ने धन लूटने और भारतीय को उलझाए रखने के लिए कानून बनाया और जन विद्रोह को ठंढा करने के लिए अपने चहेतों को सतही

स्तर पर मताधिकार और राजसत्ता में सहभागी बनाया। यही धनतांत्रिक जनतंत्र भारत में लागू हुआ, लगभग यही राजनीतिक व्यवस्था अन्य औपनिवेशिक देशों में और इग्लैण्ड में भी।

इस व्यवस्था में विरोधाभास यह है कि इसमें एक ओर वोट के लिए जनहित की प्रधानता दिखाई जाती है, दूसरी ओर औद्योगिक विकास के लिए सामान्य जन जीवन के प्राकृतिक आधार का अपहरण किया जाता है। नदियाँ जहरीली हो गई हैं, वायु विषाक्त, ग्लोबल वार्मिंग से प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है और प्राकृतिक आपदाओं से विश्व जीवन संत्रस्त हो गया है। दुनिया भर में 'डोमक्रेसी' के भीतर फलने फूलनेवाली 'कार्पोरेसी' के खिलाफ आवाज उठ रही है।

धनतांत्रिक जनतंत्र के भौतिक विकास और असीमित सुविधा भोग से केवल प्रकृति कुपित नहीं है, इससे एक और विडंवना विश्व के सम्मुख सुरसा की तरह मुँह खोलकर खड़ी हो गयी है, वह है जनसंख्या वृद्धि। जनसंख्या वृद्धि जनतंत्र पर कब्जा करने का हथियार बन गयी है। केवल भारत में ही जनसंख्या बढ़ाने के लिए बांग्लादेशी रोहिग्या का भराव नहीं हो रहा है, यूरोप के विकसित देशों में भी बाहरी लोग समाकर जनतंत्र का लाभ उठा रहे हैं और वहाँ की सरकार के लिए कंटक संकट बन गये हैं।

वर्तमान जनतंत्र से मोहभंग होने में अधिक समय नहीं लगेगा। निश्चय ही एक दिन विवश होकर आधुनिक जनतांत्रिक विश्व को राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन करना पड़ेगा। जनसंख्या आधारित राज्य व्यवस्था भारत में भी लागू है और इसके खतरे दिखाई देने लगे हैं।

क्या अँग्रेज के औपनिवेशिक व्यवस्था की सूक्ष्म दासता से मुक्ति का मार्ग है? अवश्य है, यह मुक्ति का मार्ग श्रीराम के पद चिह्नों से बना है, उन्हीं के अनुसरण में वर्तमान संकट कंटक से मुक्ति का मार्ग है। आज की आधुनिक मानसिकता को विश्वास हो या नहीं हो, लेकिन यह सत्य है कि जहाँ श्रीराम हैं, वहीं राष्ट्र है और वहीं राष्ट्र जीवन की पोषक राज्य व्यवस्था उत्पन्न होती है, जिसमें लोकमत ही प्रमुख होता है, राजा प्रमुख नहीं होता। प्रजा के कराधान से राज्यव्यवस्था चलती है। कराधान व्यवस्था प्रजा पालन के लिए होती है। कराधान लेने का औचित्य भूल जाए, तब क्या वर्तमान जनतंत्र में राजा को प्रजा का अपराधी माकर दण्डित करने का कोई विधान है ? जबकि भारत के पारंपरिक राज्य व्यवस्था में राजा धर्म दण्ड के अधीन है, राजा भी प्रजा के न्यायालय में दण्डित हो सकता है। उससे अपेक्षा की जाती है कि वह ब्रह्मचर्य और तप से राष्ट्र की रक्षा करेगा-ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति। क्या आज के सभी नेता कोई कठोर व्रत निभाएँगे या अँग्रेज के मार्ग पर चल कर घनार्जन करेंगे?

राजा राम होना तो संभव नहीं है। लेकिन, कुशल मार्ग दर्शन में भरत होने की अल्पांश संभावना अवश्य है। भरत को राजा राम की वास्तविक समझ है, वही बता सकते हैं कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थो से श्रेष्ठ पंचम पुरुषार्थ क्यों है-जनम जनम रति राम पद यह विवेक नहीं आन। भरत राम के अनन्य हैं, कोई अन्यता नहीं है। इस लिए वही श्रीराम की अनुपस्थिति और श्रीराम की उपस्थिति में रामराज्य के संचालक रहते हैं और भरत ही लोकादर्श हैं।

यह वैदिक राष्ट्र और राज्य आधुनिक राजनीति वैज्ञानिकों की समझ में नहीं आती, वे लोग डर्बिन के विकासवादी इतिहास के क्रम में ही कोई तथ्य समझ पाते हैं, वेद के त्रिकालिक सत्य को समझने में उनकी रुचि नहीं है, उनकी आँखों पर अनुवाद का चश्मा चढ़ा है, वे लोग राष्ट्र को नेशन देखते हैं। पता नहीं, राष्ट्र का अनुवाद नेशन किस आधार पर हुआ है, नेशन स्टेट अँग्रेज की शब्दावली है डेढसौ वर्ष पहले से लोगों की जानकारी में आयी है। इसी नेशन को लेकर 1888 ई. में जॉन स्ट्राची नाम के एक अँग्रेज प्रोफेसर ने शोर मचाया था कि भारत न कभी नेशन था, न है और न कभी होगा। वह अपनी अँग्रेजी भाषा में नेशन बोल रहा था। उसने यह तो नहीं कहा कि भारत न कभी राष्ट्र था, न है और न कभी होगा, लोगों ने नेशन को राष्ट्र मानकर उसे ललकरा और इसी बहाने राष्ट्र बनाम नेशन की बहस चल पड़ी।

यह सच है कि आधुनिक शिक्षा की अँधेर नगरी से राम और राष्ट्र का विषय दूर है, आधुनिक ज्ञानी राष्ट्र समझने लगे तब भी यह तथ्य समझने में उसे अवश्य कठिनाई आएगी कि जहाँ राम होते हैं वहीं राष्ट्र क्यों होता है, क्या राम और राष्ट्र अभेद हैं? यदि हम कहें कि हाँ, तो वह पूछेगा कोई व्यक्ति राष्ट्र कैसे हो सकता है?

कुछ तथ्य सामान्य मनुष्य नहीं जानता, ब्रह्म ज्ञानी जानते हैं-यह कि सदा विद्यमान रहनेवाली वह अष्ट चक्र और नौ द्वारों से युक्त देवताओं की अयोध्या नगरी कैसी है और वह कहाँ है? जिसमें तेज युक्त स्वर्ण कोश है, वह स्वर्गीय ज्योति से घिरा हुआ है। उस स्वर्ण कोश में एक पूज्य देवता है-

अष्ट चक्रा नवद्वारा देवानां पुरयोध्या।
तस्य हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।

(31. 2. 10. अथर्व.)।

चन्द्रमा और सूर्य जिसकी आँखें हैं, अग्नि जिसका मुख है। उस जेष्ठ ब्रह्म को नमन करता हूँ। नौ दलों के कमल में स्थित उस देव को ब्रह्मज्ञानी ही जान सकते हैं-

पुण्डरीकं नवद्वारं त्रिभिर्गुणोभिरावृतम्।
तस्मिन् यद्यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदोविदुः।

(43. 8. 10 अथर्व.)।

प्रकाशमयी यह अयोध्या पुरी ब्रह्मज्ञानियों के लिए प्रत्यक्ष है और सामान्य जन के लिए परोक्ष। इसे कोई बाबर नहीं तोड़ सकता और यह दिव्य अयोध्यापुरी इतिहास के अँधेरे ढक भी जाती है तो फिर से निकल कर प्रकट हो जाती है। श्रीराम का राष्ट्र सनातन है, श्रीराम ही सनातन भारत राष्ट्र के शाश्वत आधार हैं।

किसी को नहीं जिताते मजहब के युद्ध

नीलमणि लाल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं वैश्विक मामलों के विशेषज्ञ हैं।

दुनिया वैज्ञानिक रूप से बहुत तरक्की कर गई है। दुनिया में ऐसे ऐसे आविष्कार हो गए जिन्हें कभी असम्भव माना जाता था। अर्थव्यवस्थाएं ऊंची छलांग लगा रहीं हैं। मंगल पर बस्तियां बसाने की कवायद है। बहुत कुछ हो रहा है और हुआ है जो मानवता के लिए कल्याणकारी और प्रगतिवादी परिदृश्य को परिलक्षित करता है। लेकिन हर चीज की तरह एक दूसरा पहलू भी है। एक ऐसा पहलू जो न सिर्फ स्याह बल्कि डरावना और बेहद खतरनाक है। इतना खतरनाक कि वह तमाम तरक्कियों को धूल में मिला सकता है। ये पहलू है ख़ूनखराबे, आतंकवाद, युद्ध और मजहबी कट्टरता का। इसका मंजर हम दुनिया के अनेक कोनों में लम्बे समय से देखते आये हैं और बीते एक साल से तो स्थितियां बद से बदतर हुई हैं। नये मोर्चे खोले गए हैं, युद्ध की विभीषिका में लाखों-करोड़ों लोगों को झोंका गया है।

सच्चाई ये है कि आज न सिर्फ पश्चिम एशिया बेहद खराब स्थिति में है बल्कि यूरोप, अफ्रीका, नार्थ अमेरिका भी किसी न किसी रूप में एक अजीब से संजाल में फंसा हुआ है। बात करें पश्चिम एशिया की तो बीते एक साल से इस क्षेत्र में बेहिसाब जानें जा चुकीं हैं। बेशुमार नुकसान हुआ है। ये सिलसिला जारी है। घटने या कम होने की बात तो दूर है। ये सब आगे ही बढ़ रहा है। इसका अंजाम क्या होगा, ये कल्पना ही डराती है क्योंकि लड़ाइयों,

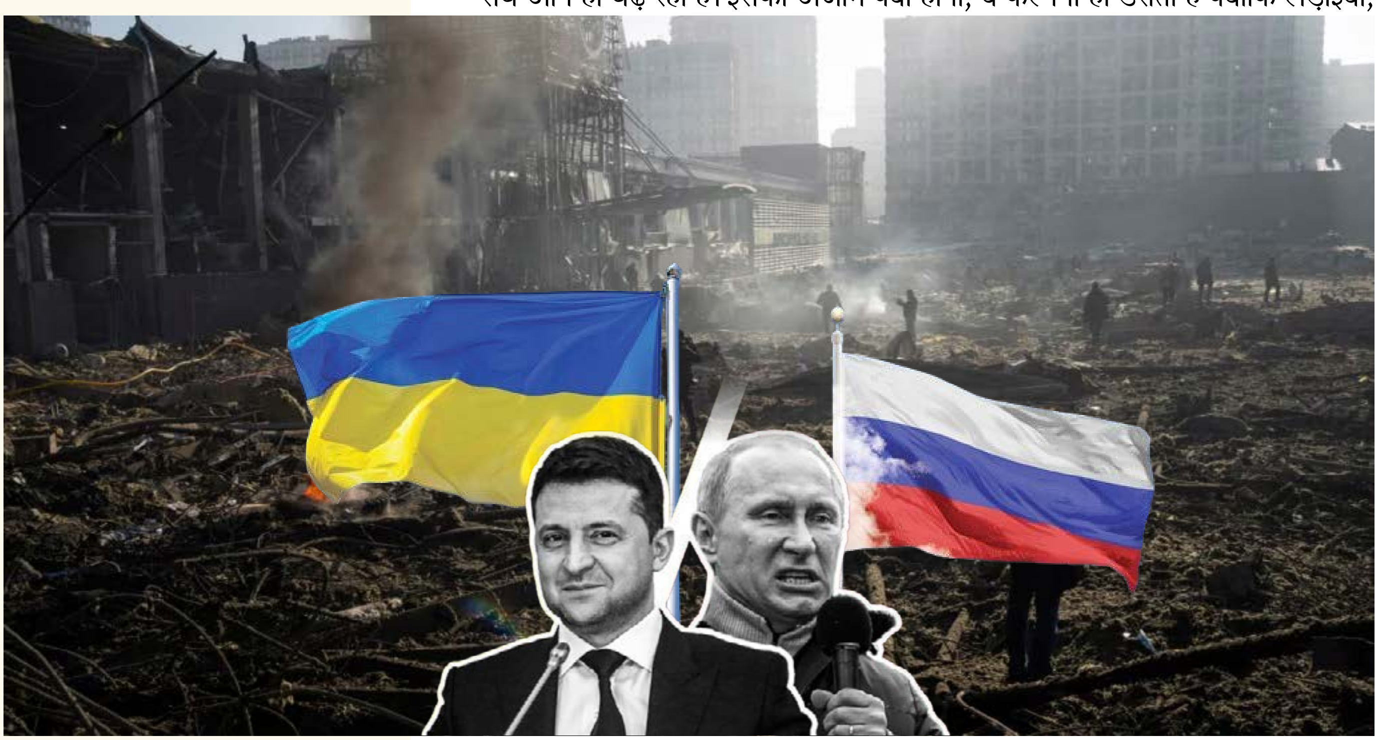

का अंजाम कभी अच्छा नहीं होता। किसी ने सही ही कहा है कि युद्ध में कोई विजेता नहीं होता। युद्ध में सब हारते हैं।

विडंबना ही है कि पश्चिम एशिया में चल रही लड़ाई का एक मकसद शांति है। मकसद विचारधारा और धर्म से नफरत भी है और मकसद जमीन भी है। सभी पक्ष इन्हीं के लिए मरे खपे जा रहे हैं, आज से नहीं बल्कि कई कई दशकों से। ईरान, फलस्तीन, यमन, लेबनान, सीरिया -ये सब के सब इजरायल के खिलाफ मोर्चा खोले हुए हैं। किसी जमाने में जॉर्डन, मिस्त्र तथा बाकी अरब देश भी इजरायल से दुश्मनी गांठे हुए थे, कई युद्ध भी लड़े लेकिन अंत में उनको अक्ल आ गई कि ये लड़ाई फिजूल है और उस तरफ ध्यान लगाने की बजाए अपने मुल्क के अंदरूनी हालातों, तरक्की और खुशहाली पर ध्यान देना चाहिए। इसीलिए मुट्ठी भर मुल्कों को छोड़ कर बाकी सब चुपचाप अपने काम में लग गए और आज भी लगे हैं। लेकिन इस्लामी जगत की चौधराहट के लिए बेताब ईरान को अपने काम से काम रखना रास नहीं आया और वह हिजबुल्लाह, हमास और यमनी हौथी जैसे विध्वंसकारी गुटों को पालने पोसने में ही दिमाग लगाए बैठा रहा है। इसी चौधराहट के चलते फलस्तीनी आतंकी गुट हमास को भी वह खुल्लमखुल्ला सपोर्ट करने लगा। वैसे तो तमाम इस्लामी देश हमास को सपोर्ट कर रहे थे लेकिन वो ज्यादातर जुबानी जमा खर्च तक ही सीमित था। ईरान तो बाजरिया अपने पिट्ठू हिजबुल्लाह, हमास को लड़ाई के साजोसामान तक देने लगा। कहां शिया ईरान और हिजबुल्लाह और कहां सुन्नी फलस्तीनी हमास। लेकिन ख़ूनखच्चर में दोनों एक हो गए। इनका मन इतना बढ़ गया कि ठीक साल भर पहले इजरायल के भीतर हमास आतंकी घुस गए और नरसंहार कर डाला। ये किसका दिमाग था, किसकी रणनीति थी और इसका अंजाम क्या सोचा गया था, ये तो पता चल नहीं पाया है लेकिन वास्तविक अंजाम ये हुआ कि इजरायल ने जो बदला लिया उसमें गाज़ा तबाह हो गया। हमास वालों ने इजरायल में घुस कर करीब 1200 लोगों को मार डाला था लेकिन इजरायली कार्रवाई में 50 हजार से ज्यादा लोग खत्म हो चुके हैं, सैकड़ों वर्ग किलोमीटर घने इलाके अब मलबे के ढेर हैं, हमास की मायावी सुरंगे उन्हीं के लिए मौत के कुएं साबित हुईं हैं। और अभी युद्ध खत्म नहीं हुआ है बल्कि जारी है।

बात रही लेबनान के हिजबुल्लाह की तो उसकी उत्पत्ति ही इजरायल के विरोध से हुई थी। उसे सिर्फ और सिर्फ इजरायल के खिलाफ लड़ना है। ऐसे में हिजबुल्लाह भी हमास के सपोर्ट में इजरायल पर गोलाबारी करने लगा। यही सपोर्ट यमन के हौथी आतंकी दिखाने लगे। इन सबों को मजबूर और निर्दोष लोगों की बजाए इस्लाम की ज्यादा फिक्र होने लगी और इनके पीछे ईरान का हाथ जो था। ईरान, जो 40 साल पहले एक आधुनिक, प्रगतिशील, और खुला समाज हुआ करता था वह अब पूरी तरह कट्टरता के चंगुल में है। ईरान सिर्फ और सिर्फ धर्मान्धता के लिए ही आतंकी गुटों को पास रहा है और इसे नाम दिया है 'प्रतिरोध की धुरी' यानी इजरायल के खिलाफ प्रतिरोध।

लेकिन बीते एक साल से जो हुआ वह इन प्रतिरोध की धुरी के तत्वों या उसके नियंत्रक ईरान ने तनिक अंदाज़ा लगाया नहीं होगा। दुनिया चिल्लाती रह गई, अमेरिका घुड़की देता रहा गया, संयुक्त राष्ट्र अमन की दुहाई देते थक गया लेकिन इजरायल ने गाज़ा से लेकर बेरूत और यमन तक ऐसा कहर बरपाया कि हमास और हिजबुल्लाह के सरगना जो जमीन के सैकड़ों फुट नीचे छिपे हुए थे, चुन चुन कर मार दिए गए। यमनी हौथी आतंकियों को बमों से तबाह कर दिया।और तो और पेजर -वाकी टाकी में टारगेटेड धमाके करके भविष्य की लड़ाइयों के लिए एक नई नजीर बना दी।

लेकिन क्या हमास, हिजबुल्लाह और हौथी नेस्तनाबूद हो जाएंगे तो आतंकी -आतंकवाद -कट्टरवाद खत्म हो जाएगा? शायद नहीं। क्योंकि इनकी जड़ में एक विचारधारा है जिसकी जड़ें बहुत गहरे फैली हैं। ये सब मजहबी कट्टरता पर टिके हैं। हमास हिजबुल्लाह तो प्राचीन

दंतकथाओं के हाईड्रा की तरह हैं जिसका एक सिर काटो तो दो नए सिर पैदा हो जाते थे। आज के जमाने के हाइड्रा के पोषक कई हैं। इनका ऑपिरेशन दुनियाभर में बच्चों और युवाओं को टारगेट करने से चलता है। जब पढ़ाई लिखाई के नाम पर नफरती विचारधारा और मजहबी कट्टरता की घुट्टी पिलाई जाएगी, तो हमास -हिजबुल्लाह -आईएसआईएस को पैदल सैनिकों और कमांडरों की क्या कमी रहेगी। जब स्कूलों-अस्पतालों के तहखानों में आतंक के जखीरे रखने की इजाजत खुद आम लोग देते रहेंगे तो उनसे क्या उम्मीद रखनी चाहिए।

जब बच्चों को विज्ञान की बजाए रूढ़िवादी, मजहबी, कट्टरपंथी, ब्रेनवाश करने वाली शिक्षा दी जाएगी तो आगे का हश्र साफ है। इतिहास है कि मजहबी कट्टरता का कभी अच्छा अंजाम नहीं हुआ है। मजहब के नाम पर, मजहबी सिद्धांतों और कट्टरता की नींव पर बने मुल्क कभी प्रगति नहीं कर पाए, कभी अमन चैन से नहीं रह पाए और आगे नहीं बढ़ पाए। खाड़ी या पश्चिम एशिया ही नहीं, अफ्रीका से लेकर एशिया तक में इसके उदाहरण साफ़ और सामने हैं। ईरान, हमास, हिजबुल्लाह की इजरायल से दुश्मनी सिर्फ जमीन तक सीमित नहीं है। दुश्मनी यहूदियों से भी है, यानी लड़ाई जमीन की ही नहीं बल्कि मजहबी भी है। उधर आईएसआईएस 'खलीफा' की स्थापना के लिए खूनखराबे में लगा हुआ है। अल कायदा, अल शबाब, बोको हरम जैसे अतिवादी गुट मजहबी राज्य की स्थापना के लिए आतंकवाद फैले हुए हैं। इनका और इनके जैसे तमाम छोटे-बड़े गुटों और संगठनों का जाल पूरी दुनिया में फैला हुआ है और इसने गरीब से लेकर अमीर देशों में अपनी विचारधारा का जहर मिला दिया है। समानता, लोकतंत्र, खुलेपन और मानवाधिकार के लम्बरदार पश्चिमी देश जिन्होंने खुले हाथ से सीरिया, अफगानिस्तान और अन्य देशों से शरणार्थियों को पनाह दी थी वो ही अब इनके मजहबी अतिवादी स्वरूप से परेशान हैं।

ईरान, हमास, हिजबुल्लाह की इजरायल से दुश्मनी सिर्फ जमीन तक सीमित नहीं है। दुश्मनी यहूदियों से भी है, यानी लड़ाई जमीन की ही नहीं बल्कि मजहबी भी है। उधर आईएसआईएस 'खलीफा' की स्थापना के लिए खूनखराबे में लगा हुआ है।

कनाडा का ही उदाहरण लेते हैं। अलगाववाद और आतंकवाद फैलाने के लिए सहारा किस चीज का लिया जा रहा है? मजहब का। जब तक इसे इस्तेमाल नहीं किया गया था तब तक हालात एकदम अलग थे। लेकिन एक अल्पावधि में ही स्थितियां कहाँ से कहाँ पहुंचा दी गईं हैं। वहां अलगाववाद के नाम पर धर्मस्थलों को निशाना बनाया जाता है, धर्मस्थलों को अपवित्र किया जाता है। इसे राजनीति का मजहबीकरण कहना ज्यादा उचित और प्रासंगिक होगा। अखिर क्या वजह रही है कि पढ़ाई के नाम पर स्टूडेंट वीसा में कनाडा जाने वाले युवा वहां जा कर कुछ ही समय में कट्टर हो गए? कैसे विदेशी सरजमीं पर ऐसे ही युवा बड़े गैंगस्टर बन कर अपनी ही जन्मभूमि के खिलाफ षड्यंत्र रचने लगे, अपराध करने लगे?

बांग्लादेश एक और उदाहरण है। पाकिस्तान से अलग होकर इसकी स्थापना एक स्वतंत्र और सेक्युलर देश के रूप में की गयी थी लेकिन देखते देखते ये एक मजहबी देश हो गया और मजहबी कट्टरता का केंद्र बन चला। जो देश कभी दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में जगह बनाने की पोजीशन में था वह अब लगातार नीचे ही जा रहा है। सरकार और शासन के खिलाफ असंतोष तथा विद्रोह को मजहबी रंग में रंग दिया गया है। बांग्लादेश में चरमपंथी मजहबी तत्वों का नियंत्रण और दखल जिस तरह तेजी से बढ़ा है वह निश्चित ही बहुत खराब संकेत है।

मजहबी नींव पर बने पाकिस्तान, खाड़ी और पश्चिम एशिया के ईरान, अफगानिस्तान, यमन जैसे देश, अफ्रीका के देश आखिर क्यों इन हालातों में हैं? वजह है तरक्की और खुशहाली की बजाये मजहबी दृष्टिकोण को जबरन फ़ैलाने, थोपने और उसी को हर चीज आधार का बनाने की जिद। समझ से परे है कि इस जिद के क्या परिणाम सोचे गए हैं? इजरायल की भी स्थापना मजहबी आधार पर की गयी थी लेकिन उसने रूढ़ीवाद, कट्टरपंथ और एकल मजहबी दृष्टिकोण को पकड़ कर रखा ही नहीं। ध्यान रखा आगे बढ़ने, आर्थिक मजबूती और तरक्की का और यही वजह है कि आज वह कहाँ है और उसके विरोधी कहाँ हैं।

इस परिदृश्य में खाड़ी के देशों का सन्दर्भ प्रासंगिक होगा। खाड़ी के देश भी मजहब की आड़ में ऑपरेट करने वाले चरमपंथी तत्वों के पोषक रहे हैं लेकिन धीरे धीरे इनकी पोजीशन में बदलाव आया है। इसकी कई वजहें हो सकतीं हैं जिनमें आर्थिक और भूराजनैतिक मजबूरियां शामिल हैं। हमास, हिजबुल्ला और हौथी को अब ये देश भी आतंकी कहने लगे हैं।

एक विकृत रूप

सवाल ये स्वाभाविक है कि ऐसा कैसे है कि मजहब -जो कथित तौर पर शांति, प्रेम और सद्भाव का समर्थन करते हैं वो ही असहिष्णुता और हिंसक आक्रामकता से इतने जुड़े हुए कैसे हैं? इस मुद्दे पर समाज विज्ञानियों की राय अलग-अलग है। कुछ विद्वानों का तर्क है कि जब चरमपंथी अपने कार्यों को सही ठहराने के लिए मजहबी ग्रंथों का उपयोग करते हैं, तब भी ₹मजहब के लिए₹ हिंसा बिल्कुल भी मजहबी नहीं होती -बल्कि मूल शिक्षाओं का अत्यंत विकृत रूप होती है। कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि चूँकि मजहब निश्चितताओं को बढ़ावा देते हैं और शहादत को पवित्र मानते हैं, इसलिए वे अक्सर संघर्ष का मूल कारण होते हैं। दरअसल धर्मान्धता एक दुर्भाग्यपूर्ण मानवीय गुण है। चरमपंथी शायद यह दूसरों पर अपने विश्वासों को थोपने की इच्छा है,

तर्क या धर्मोपदेश के माध्यम से नहीं, बल्कि जबरदस्ती के माध्यम से। एक उदाहरण जिहादी विचारधारा से आता है। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्ती टोनी ब्लेयर ने लिखा है कि -आईएस, अरब प्रायद्वीप में अल-कायदा और जबात अल-नुसरा के प्रचार के विश्लेषण से पता चलता है कि ये गुट अपनी पहचान के लिए मुख्यधारा की इस्लामी अवधारणाओं पर निर्भर हैं, लेकिन उन अवधारणाओं की उनकी व्याख्या सिर्फ रूढ़िवादी है। अरबी शब्द ईमान की व्याख्या पूरी तरह से हिंसक जिहाद पर केंद्रित करने के लिए की गई थीः केवल वे लोग जो आईएसआईएस में शामिल हुए थे, उनके बारे में कहा जा सकता है कि उनमें आस्था है। इसी तरह इहसान (अच्छे काम) पर भी जोर दिया गया था -लेकिन अंतिम अच्छे काम को हिंसक जिहाद के रूप में परिभाषित किया गया था।

भारत के सन्दर्भ में

इतिहासकारों का मानना है कि भारतीय इतिहास के विभिन्न चरणों में 600 से अधिक राज्य एक साथ अस्तित्व में थे। राज्यों के बीच शांति बनाए रखने के लिए, धर्म के सिद्धांतों के माध्यम से शासन ने सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद की। उत्तर में गुप्त (320-550 ई.) और दक्षिण में विजयनगर (1336-1614) शामिल थे। कई मौकों पर, पड़ोसी राज्यों में विवाद हो जाते थे, जिसके कारण युद्ध होते थे, जो कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसे धार्मिक ग्रंथों में बताए गए नियमों के अनुसार संचालित होते थे। इन राज्यों के भीतर शांति तब बाधित हुई जब मध्य एशियाई या यूरोपीय लोगों ने आक्रमण किया और सनातन परंपराओं को अपने स्वयं के विश्वास, इस्लामी या ईसाई से बदलने की कोशिश की। आक्रमणकारियों की लहरों में फारसी, यूनानी, शक, अफगान और हूण, साथ ही ब्रिटिश, फ्रांसीसी और पुर्तगाली शामिल थे। दिल्ली सल्तनत (1211-1386) और मुगल साम्राज्य (1526-1750) के दौरान उपमहाद्वीप की आबादी का एक बड़ा हिस्सा इस्लाम में परिवर्तित हो गया। पंजाब में गुरु नानक (1469-1537) द्वारा स्थापित सिख धर्म ने अपने दसवें नेता, गुरु गोबिंद सिंह (1666-1708) से शुरू होकर एक सैन्यवादी परंपरा विकसित की। ईसा मसीह की मृत्यु के तुरंत बाद के दशकों में ईसाई धर्म ने दक्षिण भारत में प्रवेश किया, और कुछ क्षेत्रों में इसके अनुयायी भी बढ़े। यूरोपीय आक्रमणों (1650-1947) के दौरान कुछ लोगों ने ईसाई धर्म अपना लिया।

भारत में धार्मिक आस्थाओं के बीच विभिन्न रूपों में हिंसा इन्ही सबके बाद हुई है। तथ्य ये है कि भारत ने कभी 'धर्मयुद्ध' न छेड़े, न लड़े। दरअसल, सनातन में विचारधाराएँ, आस्थाएं, परम्पराएँ थोपने का कोई विचार है ही नहीं। चूँकि सनातन अनादिकाल से है और सभी इसके हिस्से हैं सो इसके विस्तार-प्रचार का प्रश्न ही नहीं उठता। सनातन में धर्म को एक जीवन शैली के रूप में माना गया है। कर्मकांड, पूजन पद्धति, प्रतीकों, संकेतों को धर्म के वर्गीकरण में सीमित नहीं किया गया

है। धर्म मनुष्य के कर्तव्यों जीवन कृत्यों का रोड मैप रहा है। यही वजह है भी भारत ने 'क्रुसेड' जैसे 'धर्मयुद्ध' नहीं लादे। 'धर्म' प्रसार के लिए आक्रान्ता स्वरुप धारण नहीं किया। मगध-अंग युद्ध चन्द्रगुप्त के युद्ध, कलिंग युद्ध, शातवाहन युद्ध, कनिष्क युद्ध समुद्र गुप, कुमारगुप्त, द्वारा किये गए युद्ध को देखें तो उनका कोई धार्मिक स्वरूप नहीं रहा। आधुनिक कैलेंडर के अनुसार 642 ईसवी के बाद भारत में विदेशी आक्रान्ताओं – आक्रमणकारियों द्वारा मजहबी आधार वाले युद्ध लाये गए-थोपे गए। भारत ने हमेशा अपना बचाव किया, कभी युद्ध नहीं थोपे, भले ही हमारे आन्तरिक वैचारिक मतभेद कितने ही क्यों न रहे हों।

बहुत कुछ करना होगा

ग्रीक पौराणिक कथाओं में एक समुदी जीव 'हाईड्रा' का जिक्र है। ये नौ सिर वाला एक बेहद जहरीला नाग था जिसकी विशेषता थी कि उसका एक सिर काटने पर दो नए सिर उग आते थे। इस वजह से उसका नाश असम्भव सा था। बहुत प्रयास हुए लेकिन हाईड्रा को कोई मार न सका। लेकिन हरक्यूलिस नामक एक योद्धा आया जिसने अपनी समझदारी और अद्भुत पराक्रम से हाईड्रा नाग को उसी के विष से मार डाला और सभी नौ सिर ख़त्म कर दिए। आज भी हाईड्रा हमारे बीच है। अलग अलग स्वरूप में। इस हाइड्रा को कुचलने के लिए बहुत कुछ करना होगा। कुछ देशों ने किया भी है लेकिन ज्यादातर देशों ने जरूरत से ज्यादा उदार होने के चलते हाइड्रा को पोषित ही किया है जिसका अंजाम वे खुद भी भुगत रहे हैं।

बहरहाल, आज जो लड़ाइयां दिन ब दिन उग्र होती जा रही हैं उसके बुरे नतीजे वो भी भुगतेंगे जो इसमें शामिल नहीं हैं। पश्चिम एशिया की आग कब और कहां और फैल जाए, कुछ पता नहीं। ये रास्ता खतरनाक है और मंजिल विनाशकारी। दुनिया की तमाम तरक्की, खुशहाली, स्वतंत्रता, समानता दांव पर है। युद्ध कभी किसी को नहीं जिताते, वो सभी को हराते हैं।

सनातन ज्योति से जगमग भारत

आमोद कान्त मिश्र

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

यह सच में सृष्टि का सबसे बड़ा सामाजिक पर्व है जो इससे पूर्व के आनुष्ठानिक शास्त्रीयताओ से इतर विशुद्ध भौतिक सन्साधनो के समन्वय की व्यस्थापक भूमिका में हर साल हम मनाते है। अब तक किये जा चुके अनुष्ठानों के बाद अब मानवीय उत्सव की बारी है। दीपोत्सव में केवल अनुष्ठान भर नहीं है बल्कि जीवन को आरोग्य, सुंदर और सुखी बनाने के लिए हर प्रकार के उपाय यही से उपजते है। धनतेरस को भगवान् धन्वन्तरि की पूजा के साथ आयुर्वेद और धातु संग्रह से यह शुरू होता है। दूसरे दिन नरक चतुर्दशी को यमदीप और दरिद्रखेदण होता है। तीसरे दिन दीपोत्सव,चौथे दिन अन्नपूर्णा के लिए अन्नकूट और पांचवे दिन गोवर्धनपूजा के साथ ही भाई दूज। इसी दिन कायस्थ समाज का चित्रगुप्त पूजन यानी कलम दावत की पूजा। तात्पर्य यह की इस पंचदिवसीय आयोजन के साथ ही भारतीय संस्कृति उसके भौतिक जीवन में सुखमय प्रवेश के द्वार खोलती है। भारतीय जीवन दर्शन में दीपावली

विश्व के वर्तमान परिदृश्य में जारी युद्धों के बीच भारत का शांति का उद्घोष भारत की सनातन ज्योतिर्मय यात्रा का वह संदेश है जिसके कारण भारत सदैव विश्व के लिए पथ प्रदर्शक रहा है। श्रीराम की लंका विजय के उत्सव के साथ शुरू हुए इस ज्योतिपथ में ही विश्व के कल्याण का बीज स्थापित है। अयोध्या में विगत् कई वर्षों से यह ज्योति संदेश विश्व तक प्रसारित करने का प्रयास हो रहा है।

से पूर्व व्यक्ति हर प्रकार के पुराने भौतिक लें दें से खुद को मुक्त कर लेता है। दरअसल यही वास्तविक खता बही सपूर्णाङ्क तिथि भी है। आजकल जो आथिक क्लोजिंग मार्च में होती है वह वास्तव में भारतीय व्यवस्था में इसी दीपावली तक कर ली जाती थी। दीपावली केवल दिया जलाकर खा पी लेने का उत्सव भर नहीं है, यही है पृथ्वी पर सृष्टि के भौतिक संसाधनों के साथ क्रियाशील होने का मुहूर्त। सृष्टि में मानव जीवन की भौतिक जरूरतों के संग्रह के पंचदिवसीय उत्सव की व्याख्या विशद है। विश्व के वर्तमान परिदृश्य में जारी युद्धों के बीच भारत का शांति का उद्घोष भारत की सनातन ज्योतिर्मय यात्रा का वह संदेश है जिसके कारण भारत सदैव विश्व के लिए पथ प्रदर्शक रहा है। श्रीराम की लंका विजय के उत्सव के साथ शुरू हुए इस ज्योतिपथ में ही विश्व के कल्याण का बीज स्थापित है। अयोध्या में विगत् कई वर्षों से यह ज्योति संदेश विश्व तक प्रसारित करने का प्रयास हो रहा है। ऐसे वैश्विक परिदृश्य में सनातन की ज्योतिर्मय यात्रा को बिंदुवार तो समझना ही होगा क्योंकि दशहरा, दीपावली और इससे क्रमिक रूप से जुड़े हुए सभी पर्व भारत के उसी सनातन संदेश को प्रसारित करते हैं।

ज्योति पर्व

दिवाली या दीपावली अर्थात रोशनी का त्यौहार शरद ऋतु (उत्तरी गोलार्द्ध) में हर वर्ष मनाया जाने वाला एक प्राचीन हिंदू त्यौहार है। दीवाली भारत के सबसे बड़े और प्रतिभाषाली त्यौहारों में से एक है। यह त्यौहार आध्यात्मिक रूप से अंधकार पर प्रकाश की विजय को दर्शाता है। भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है। इसे दीपोत्सव भी कहते हैं। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् 'अंधेरे से ज्योति अर्थात प्रकाश की ओर जाइए' यह उपनिषदों की आज्ञा है। इसे सिख, बौद्ध तथा जैन धर्म के

काँधे पर धनुष और आँखों में प्रेम

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, मैं पवित्र करने वालों में वायु और शस्त्रधारियों में राम हूं। मछलियों में मगरमच्छ हूं और नदियों में भागीरथी गंगा जाह्नवी हूं। कृष्ण कहते हैं, शस्त्रधारियों में मैं राम हूं। कृष्ण का राम होना, यह बहुत प्यारा प्रतीक है। राम के हाथ में शस्त्र बहुत असंगत है। राम जैसे व्यक्ति के हाथ में शस्त्र होने नहीं चाहिए। राम के व्यक्तित्व, उनकी आंखों का थोड़ा ध्यान करें। न तो राम के मन में हिंसा है। ना राम के मन में प्रतिस्पर्धा है। ना राम के मन में ईर्ष्या है। न राम किसी को दुख पहुंचाना चाहते हैं। ना किसी को पीड़ा देना चाहते हैं। फिर भी उनके हाथ में शस्त्र हैं।

राम का चित्र देखता हूं, उनके कंधे में लटका हुआ धनुष देखता हूं और उनके कंधे पर बंधा हुआ तूणीर देखता हूं तो राम के व्यक्तित्व से उनका कोई भी संबंध नहीं मालूम पड़ता। राम का व्यक्तित्व एक काव्य की प्रतिमा मालूम होती है। राम की आंखें प्रेम की आंखें मालूम होती हैं। राम पैर भी रखते हैं, तो ऐसा रखते हैं कि किसी को चोट न लग जाए। राम का सारा व्यक्तित्व फूल जैसा है। कंधे पर बंधे हुए तीर और हाथ में लिए हुए धनुष-बाण समझ में नहीं आते! इनकी कोई संगति नहीं है। राम कुछ अनूठे हैं। कृष्ण को यही प्रतीक मिलता है कि शस्त्रधारियों में मैं राम हूं! शस्त्रधारियों की कोई कमी नहीं है। कृष्ण ने राम को क्यों चुना होगा?उन्होंने बहुत विचार से चुना है, बहुत हिसाब से चुना है। शस्त्र खतरनाक है रावण के हाथ में, क्योकि रावण के भीतर सिवाय हिंसा के और कुछ भी नहीं है। हिंसा के हाथ में शस्त्र का होना, जैसे कोई आग में पेट्रोल डालता हो। इस दुनिया की पीड़ा ही यही है कि गलत लोगों के हाथ में ताकत है। राम के हाथ में भी शक्ति है। भ्रष्ट आचार नहीं देखा। शक्ति का कोई व्यभिचार नहीं देखा। राम और शस्त्र के बीच कोई सेतु नहीं है। एक खाई है। अलंघ्य खाई है। यही राम की विशेषता भी है। रावण के हाथ में शस्त्र खतरनाक हैं। जब भीतर हिंसा हो और शस्त्र हाथ में हों, तो हिंसा गुणित होती चली जाएगी।हिंसा हो भीतर, वैमनस्य हो भीतर। प्रतिस्पर्धा हो भीतर। शत्रुता हो भीतर। तो अस्त्र-शस्त्र घातक हैं। शक्ति रावण जैसी है। शायद दुनिया अच्छी न हो सकेगी।

जब तक अच्छे आदमी और बुरे आदमी की ताकत के बीच ऐसा कोई संबंध स्थापित ना हो। अच्छे आदमी सदा शांतिवादी होंगे। तो हट जाएंगे। बुरे आदमी हमेशा हमलावर होंगे। लड़ने को तैयार रहेंगे। अच्छे आदमी प्रार्थना-पूजा करते रहेंगे, बुरे आदमी ताकत को बढ़ाए चले जाएंगे।इसलिए राम हमारे राम है। आराध्य हैं। विजय हैं। संकल्प हैं। विजय का घोष है। विजय का दिन है विजयादशमी।

धनतेरस : उद्भव एवं महत्व

जिस प्रकार देवी लक्ष्मी सागर मंथन से उत्पन्न हुई थी उसी प्रकार भगवान धनवन्तरि भी अमृत कलश के साथ सागर मंथन से उत्पन्न हुए हैं। देवी लक्ष्मी हालांकि की धन देवी हैं परन्तु उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए आपको स्वस्थ्य और लम्बी आयु भी चाहिए यही कारण है दीपावली दो दिन पहले से ही यानी धनतेरस से ही दीपामालाएं सजने लगती हें।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन ही धन्वन्तरि का जन्म हुआ था इसलिए इस तिथि को धनतेरस के नाम से जाना जाता है। धन्वन्तरी जब प्रकट हुए थे तो उनके हाथो में अमृत से भरा कलश था। भगवान धन्वन्तरि चूंकि कलश लेकर प्रकट हुए थे इसलिए ही इस अवसर पर बर्तन खरीदने की परम्परा है। कहीं कहीं लोकमान्यता के अनुसार यह भी कहा जाता है कि इस दिन धन (वस्तु) खरीदने से उसमें 13 गुणा वृद्धि होती है। इस अवसर पर धनिया के बीज खरीद कर भी लोग घर में रखते हैं। दीपावली के बाद इन बीजों को लोग अपने बाग-बगीचों में या खेतों में बोते हैं।

धनतेरस के दिन चांदी खरीदने की भी प्रथा है। अगर सम्भव न हो तो कोइ बर्तन खरिदे। इसके पीछे यह कारण माना जाता है कि यह चन्द्रमा का प्रतीक है जो शीतलता प्रदान करता है और मन में संतोष रूपी धन का वास होता है। संतोष को सबसे बड़ा धन कहा गया है। जिसके पास संतोष है वह स्वस्थ है सुखी है और वही सबसे धनवान है। भगवान धन्वन्तरि जो चिकित्सा के देवता भी हैं उनसे स्वास्थ्य और सेहत की कामना के लिए संतोष रूपी धन से बड़ा कोई धन नहीं है।

आयुर्वेद

भगवान् धन्वन्तरि को देवताओ के चिकित्सक के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। वास्तव में धन्वन्तरि ही आयुर्विज्ञान के देवता है इसलिए धनतेरस को आयुर्वेद के लिए शुभदिवस के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन लोग यम देवता के नाम पर व्रत भी रखते हैं। धनतेरस के दिन दीप जलाककर भगवान धन्वन्तरि की पूजा की जाती है तथा भगवान धन्वन्तरी से स्वास्थ और सेहतमंद बनाये रखने हेतु प्रार्थना की जाती है।

लोग भी मनाते हैं। जैन धर्म के लोग इसे महावीर के मोक्ष दिवस के रूप में मनाते हैं तथा सिख समुदाय इसे बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाता है। माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। अयोध्यावासियों का ह्रदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से उल्लसित था। श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीए जलाए। कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं। यह पर्व अधिकतर ग्रिगेरियन कैलन्डर के अनुसार अक्टूबर या नवंबर महीने में पड़ता है। दीपावली दीपों का त्यौहार है। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है झूठ का नाश होता है। दीवाली यही चरितार्थ करती है-असतो मां सद्गमय, तमसो मां ज्योतिर्गमय। दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है। कई सप्ताह पूर्व ही दीपावली की तैयारियां आरंभ हो जाती हैं। लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई का कार्य आरंभ कर देते हैं। घरों में मरम्मत, रंग-रोगन, सफेदी आदि का कार्य होने लगता है। लोग दुकानों को भी साफ सुथरा कर सजाते हैं। बाज़ारों में गलियों को भी सुनहरी झंडियों से सजाया जाता है। दीपावली से पहले ही घर-मोहल्ले, बाज़ार सब साफ-सुथरे व सजे-धजे नज़र आते हैं। दिवाली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों दीप अर्थात दिया व आवली अर्थात लाइन या श्रृंखला के मिश्रण से हुई है। इसके उत्सव में घरों के द्वारों, घरों व मंदिरों पर लाखों प्रकाशकों को प्रज्वलित किया जाता है।

आध्यात्मिक महत्व

प्राचीन ग्रन्थ रामायण में बताया गया है कि, कई लोग दीपावली को 14 साल के वनवास पश्चात भगवान राम व पत्नी सीता और उनके भाई लक्ष्मण की वापसी के सम्मान के रूप में मानते हैं। अन्य प्राचीन हिन्दू महाकाव्य महाभारत अनुसार कुछ दीपावली को 12 वर्षों के वनवास व 1 वर्ष के अज्ञातवास के बाद पांडवों की वापसी के प्रतीक रूप में मानते हैं। कई हिंदु दीपावली को भगवान विष्णु की पत्नी तथा उत्सव, धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी से जुड़ा हुआ मानते हैं। दीपावली का पांच दिवसीय महोत्सव देवताओं और राक्षसों द्वारा दूध के लौकिक सागर के मंथन से पैदा हुई लक्ष्मी के जन्म दिवस से शुरू होता है। दीपावली की रात वह दिन है जब लक्ष्मी ने अपने पति के रूप में विष्णु को चुना और फिर उनसे शादी की। लक्ष्मी के साथ-साथ भक्त बाधाओं को दूर करने के प्रतीक गणेश, संगीत, साहित्य की प्रतीक सरस्वती; और धन प्रबंधक कुबेर को प्रसाद अर्पित करते हैं कुछ दीपावली को विष्णु की वैकुण्ठ में वापसी के दिन के रूप में मनाते है। मान्यता है कि इस दिन लक्ष्मी प्रसन्न रहती हैं और जो लोग उस दिन उनकी पूजा करते है वे आगे के वर्ष के दौरान मानसिक,

नरक चतुर्दशी

नरक चतुर्दशी की जिसे छोटी दीपावली भी कहते हैं। इसे छोटी दीपावली इसलिए कहा जाता है क्योंकि दीपावली से एक दिन पहले रात के वक्त उसी प्रकार दीए की रोशनी से रात के तिमिर को प्रकाश पुंज से दूर भगा दिया जाता है जैसे दीपावली की रात। इस रात दीए जलाने की प्रथा के संदर्भ में कई पौराणिक कथाएं और लोकमान्यताएं हैं। एक कथा के अनुसार आज के दिन ही भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी और दुराचारी दुर्दान्त असुर नरकासुर का वध किया था और सोलह हजार एक सौ कन्याओं को नरकासुर के बंदी गृह से मुक्त कर उन्हें सम्मान प्रदान किया था। इस उपलक्ष में दीयों की बारत सजायी जाती है। यह त्यौहार नरक चौदस या नर्क चतुर्दशी या नर्का पूजा के नाम से भी प्रसिद्ध है। मान्यता है कि कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी के दिन प्रातःकाल तेल लगाकर अपामार्ग (चिचड़ी) की पत्तियाँ जल में डालकर स्नान करने से नरक से मुक्ति मिलती है। विधि-विधान से पूजा करने वाले व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो स्वर्ग को प्राप्त करते हैं। शाम को दीपदान की प्रथा है जिसे यमराज के लिए किया जाता है। दीपावली को एक दिन का पर्व कहना न्योचित नहीं होगा। इस पर्व का जो महत्व और महात्मय है उस दृष्टि से भी यह काफी महत्वपूर्ण पर्व व हिन्दुओं का त्यौहार है। यह पांच पर्वों की श्रृंखला के मध्य में रहने वाला त्यौहार है जैसे मंत्री समुदाय के बीच राजा। दीपावली से दो दिन पहले धनतेरस फिर नरक चतुर्दशी या छोटी दीपावली फिर दीपावली और गोधन पूजा, भाईदूज।

यम द्वितीया (भाई दूज)

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाए जाने वाला हिन्दू धर्म का पर्व है जिसे यम द्वितीया भी कहते हैं। भाईदूज में हर बहन रोली एवं अक्षत से अपने भाई का तिलक कर उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीष देती हैं। भाई अपनी बहन को कुछ उपहार या दक्षिणा देता है। भाईदूज दिवाली के दो दिन बाद आने वाला ऐसा पर्व है, जो भाई के प्रति बहन के स्नेह को अभिव्यक्त करता है एवं बहनें अपने भाई की खुशहाली के लिए कामना करती हैं। इस त्यौहार के पीछे एक किंवदंती यह है कि यम देवता ने अपनी बहन यमी (यमुना) को इसी दिन दर्शन दिया था, जो बहुत समय से उससे मिलने के लिए व्याकुल थी। अपने घर में भाई यम के आगमन पर यमुना ने प्रफुल्लित मन से उसकी आवभगत की। यम ने प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया कि इस दिन यदि भाई-बहन दोनों एक साथ यमुना नदी में स्नान करेंगे तो उनकी मुक्ति हो जाएगी। इसी कारण इस दिन यमुना नदी में भाई-बहन के एक साथ स्नान करने का बड़ा महत्व है।

इसके अलावा यमी ने अपने भाई से यह भी वचन लिया कि जिस प्रकार आज के दिन उसका भाई यम उसके घर आया है, हर भाई अपनी बहन के घर जाए। तभी से भाईदूज मनाने की प्रथा चली आ रही है। जिनकी बहनें दूर रहती हैं, वे भाई अपनी बहनों से मिलने भाईदूज पर अवश्य जाते हैं और उनसे टीका कराकर उपहार आदि देते हैं। बहनें पीढियों पर चावल के घोल से चौक बनाती हैं। इस चौक पर भाई को बैठा कर बहनें उनके हाथों की पूजा करती हैं।

शारीरिक दुखों से दूर सुखी रहते हैं।

भारत के पूर्वी क्षेत्र उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में हिन्दू लक्ष्मी की जगह काली की पूजा करते हैं, और इस त्यौहार को काली पूजा कहते हैं। मथुरा और उत्तर मध्य क्षेत्रों में इसे भगवान कृष्ण से जुड़ा मानते हैं। अन्य क्षेत्रों में, गोवर्धन पूजा (या अन्नकूट) की दावत में कृष्ण के लिए 56 या 108 विभिन्न व्यंजनों का भोग लगाया जाता है और सांझे रूप से स्थानीय समुदाय द्वारा मनाया जाता है।दीप जलाने की प्रथा के पीछे अलग-अलग कारण या कहानियां हैं। राम भक्तों के अनुसार दीवाली वाले दिन अयोध्या के राजा राम लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध करके अयोध्या लौटे थे। उनके लौटने कि खुशी मे आज भी लोग यह पर्व मनाते है। कृष्ण भक्तिधारा के लोगों का मत है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था। इस नृशंस राक्षस के वध से जनता में अपार हर्ष फैल गया और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दीए जलाए। एक पौराणिक कथा के अनुसार विंष्णु ने नरसिंह रुप धारणकर हिरण्यकश्यप का वध किया था तथा इसी दिन समुद्रमंथन के पश्चात लक्ष्मी व धन्वंतरि प्रकट हुए।

अन्नकूट या परुवा

यह परुवा बचपन से सभी सुनते आ रहे है। अनेक पीढ़िया बीत चुकी.अनगिनत सभ्यताए विकसित होकर खत्म हो चुकी. अनगिनत विद्वान आये और जगत से विदा हो गये. यह परुवा यूं ही आता है और चला जाता है। कोई लोक भाषा में परुवा कहता है। कोई परेवा कहता है। आज के दिन हर घर के दरवाजे पर यानी गोष्ठ में गोबर से

अन्नकूट बनाकर उसे पशुओ से ही कूटने के लिए छोड़ दिया जाता है। हमारी वैष्णव परम्परा में यह अन्नकूट होता है। आज के दिन ही भगवान विष्णु को ५६ भोग लगाने की परम्परा है। सभी वैष्णव मंदिरो में इस दिन छप्पन भोग बनाकर भगवान् को भोग लगाया जाता है। दरअसल यह परुवा है क्या? यह संधि बेला है सृष्टि के एक दिन के अवसान का। यह संधिकाल है कल की प्रगति का। यह संधिकाल है सृष्टि के जीवन की गति का। यह संधिकाल है संस्कृति के उत्थान का। इसी संधि को पोर कहते है। जैसे बांस के पोर के साथ ही बॉस की लम्बाई बढाती जाती है यह वाही पोई है सृष्टि का, इसे ही पोर भी कहते है और शुद्ध भाषा में यही होता है पर्व।यह सच में सृष्टिपर्व है जो हर साल यह बताने आता है की कल तक जो था आज के बाद वह नया होगा। ठीक वैसा ही नहीं होगा जैसा कल था। इसीलिए इस दिन यानी परुवा के दिन किसी प्रकार के लेंन देंन, दुनियावी कार्य, कृषि कार्य या किसी भी प्रकार की सक्रियता से दूर रहने का विधान है। इस दिन को जीवन के अवकाश के रूप में मनाने का विधान हमारी संस्कृति ने बना दिया है। दरअसल यह सृष्टि के सांसारिक अवकाश का दिन है। आज के ही 11 सांसारिक दिवस बीतने के बाद भगवान विष्णु अपनी क्षीर निद्रा से बाहर आते है उस दिन देव दीपावली होती है। एकादशी को देवोत्थानी एकादशी कहा जाता है। इसी दिन के बाद सृष्ट की सभ्यताए सक्रिय हो जाती है। इसी दिन के बाद सांसारिक कार्यो के लिए सभी रास्ते खुल जाते है। सृष्टि की काल गणना में यहॉ एक पर्व है जो विरामतः गतिमान सृष्टि की यात्रा को बताने लिए हर साल धरती को मिला हुआ एक संस्कार है। इसी को संस्कृति का आधार मान कर सांस्कृतिक यात्रा चलती है।

गोवर्धन पूजा

अन्नकूट की अगली सुबह गोवर्धन पूजा की जाती है। इस त्यौहार का भारतीय लोकजीवन में काफी महत्व है। इस पर्व में प्रकृति के साथ मानव का सीधा सम्बन्ध दिखाई देता है। इस पर्व की अपनी मान्यता और लोककथा है। गोवर्धन पूजा में गोधन यानी गायों की पूजा की जाती है। शास्त्रों में बताया गया है कि गाय उसी प्रकार पवित्र होती जैसे नदियों में गंगा। गाय को देवी लक्ष्मी का स्वरूप भी कहा गया है।

देवी लक्ष्मी जिस प्रकार सुख समृद्धि प्रदान करती हैं उसी प्रकार गौ माता भी अपने दूध से स्वास्थ्य रूपी धन प्रदान करती हैं। इनका बछड़ा खेतों में अनाज उगाता है। इस तरह गौ सम्पूर्ण मानव जाती के लिए पूजनीय और आदरणीय है। गौ के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए ही कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन गोर्वधन की पूजा की जाती है और इसके प्रतीक के रूप में गाय की। जब कृष्ण ने ब्रजवासियों को मूसलधार वर्षा से बचने के लिए सात दिन तक गोवर्धन पर्वत को अपनी सबसे छोटी उँगली पर उठाकर रखा और गोप-गोपिकाएँ उसकी छाया में सुखपूर्वक रहे। सातवें दिन भगवान ने गोवर्धन को नीचे रखा और हर वर्ष गोवर्धन पूजा करके अन्नकूट उत्सव मनाने की आज्ञा दी। तभी से यह उत्सव अन्नकूट के नाम से मनाया जाने लगा।

कृष्णः प्रियो हि कार्तिकः कार्तिकः कृष्ण वल्लभः

सनातन संस्कृति में भौतिक जीवन का आधार मास कार्तिक है। भगवान् शंकर के यशस्वी पुत्र भगवान् कार्तिकेय के नाम को समर्पित यह महीना भगवान् कृष्ण को अतिप्रिय तो है ही, यह जीव लोक में जीवन के संस्कारो के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। भौतिक जीवन की सबसे आवश्यक जरूरतों के लिए कार्तिक में ही विधान निहित किये गए हैं।यह महारास का महीना है। समृद्धि, ऐश्वर्य एवं संस्कारों के लिए इस पूरे महीने प्रतिदिन कुछ न कुछ अतिरिक्त करने का विधान हमारी संस्कृति में किया गया है। कार्तिक को पुण्य मास भी कहा जाता है।

हमारे शास्त्रों और पुराणों आदि में हर दिवस व मास को मनाए जाने वाले पर्व, उत्सव, व्रत आयोजनों आदि का उल्लेख उनके फलादि के साथ किया गया है। साल के सभी बारह महीनों को किसी-न-किसी देवता के साथ संयुक्त कर उसके महत्व का उल्लेख उनमें किया गया है। जैसे श्रावण मास शिव को समर्पित है, फाल्गुन कामदेव को, उसी तरह पुरुषोत्तम मास विष्णु को और कार्तिक मास कृष्ण को। कार्तिक मास के बारे में, ऐसी मान्यता है कि कृष्ण को वनस्पतियों में तुलसी, पुण्यक्षेत्रों में द्वारिका, तिथियों में एकादशी, प्रियजनों में राधा, महीनों में कार्तिक विशेष प्रिय हैं। इस महीने का प्रारम्भ ही महारास की रात यानी शरदपूर्णिमा से होती है। करवा चौथ, बहुलाष्टमी, गोपाष्टमी, धनतेरस, नरकचतुर्दशी, दीपावली, अन्नकूट, गोबर्धन पूजा, भाई दूज, डाला छठ, तुलसी विवाह, अक्षय नवमी, देवोत्थानी एकादशी और पूर्णिमा स्नान जैसे अतिमहत्वपूर्ण पर्वों का पुंज लिए कार्तिक हर वर्ष आता है और हमारे जीवन को नयी ऊर्जा से संचालित

> कार्तिक मास एक विशेष मास है जिसमें राधा दामोदर भगवान की उपासना की जाती है। कार्तिक मास की अधिष्ठात्री देवी श्रीमती राधिका है इसलिए ये मास श्रीकृष्ण को प्रिय है। इस मास में अल्प प्रयास द्वारा राधारानी शीघ्र प्रसन्न हो जाती है, अगर व्यक्ति उनकी आराधना उनके प्रियतम दामोदर के साथ करता है।

करने का मन्त्र दे जाता है। इसी महीने से सभी प्रकार के मंगल कार्य भी प्रारम्भ हो जाते हैं।

भविष्य पुराण की एक कथा के अनुसार कृष्ण की प्रतीक्षा में राधा कुंज में बैठी थी, कृष्ण की प्रतीक्षा में समय बीत रहा था और राधा की चिंता भी। काफी प्रतीक्षा के बाद कृष्ण आए तब राधा क्रोधित हो उठी और उन्होंने अपना गुस्सा उतारने के लिए कृष्ण को लताओं की रस्सी से बांध दिया पर कृष्ण मंद-मंद मुस्कराते रहे। यह देख राधा शीघ्र ही सामान्य संयत हो गई और कृष्ण से देरी का कारण पूछा। कृष्ण ने बतलाया कि उस दिन कार्तिक में मनाया जाने वाला एक पर्व था और मैया यशोदा ने उन्हें रोक लिया और आयोजन के बाद ही उन्हें आने दिया।

कारण जानकर राधा को अपनी भूल का पछतावा हुआ और कृष्ण से क्षमा मांगने लगी। इस पर कृष्ण ने कहा कि राधा क्षमा मत मांगो मैं तो तुम्हारे साथ बंधा ही हूं और चूंकि आज तुमने प्रत्यक्ष रूप से मुझे बांधा इसलिए यह महीना मुझे विशेष रूप से प्रिय होगा। इस तरह कार्तिक महीने को एक और नाम मिला 'राधा-दामोदर मास।

इसके बारे में एक मान्यता यह है कि इस महीने में राधा रानी का विधिपूर्वक पूजन-अर्चन करने से श्रीकृष्ण अत्यंत प्रसन्न होते हैं और वे सभी कामनाओं की पूर्ति करते हैं क्योंकि राधा को प्रसन्न करने के समस्त उपक्रम कृष्ण को अतिप्रिय होते हैं।

कार्तिक मास एक विशेष मास है जिसमें राधा दामोदर भगवान की उपासना की जाती है। कार्तिक मास की अधिष्ठात्री देवी श्रीमती राधिका है इसलिए ये मास श्रीकृष्ण को प्रिय है। इस मास में अल्प प्रयास द्वारा राधारानी शीघ्र प्रसन्न हो जाती है, अगर व्यक्ति उनकी आराधना उनके प्रियतम दामोदर के साथ करता है। सर्वप्रथम भगवान् की बंधन-लीला अथवा राधा कृष्ण के चित्र को सुंदरता के साथ अपने घर के मन्दिर में अथवा किसी अन्य स्वच्छ स्थान पर विराजमान करें। सायं अपने परिवार के सभी सदस्यों को वहाँ एकत्रित करें। प्रति व्यक्ति एक घी (संभव हो तो देसी गाय का घी उपयोग करें) के दीपक की व्यवस्था रखे। मिटटी के छोटे दीपक ठीक रहेंगें। प्रतिदिन नये दीपक का प्रयोग करें। घी के स्थान पर तिल का तेल भी प्रयोग किया जा सकता है।

अब 'दामोदराष्टकम्' को सभी सदस्य पढ़ने का प्रयास करें। यह मास भगवान को अत्यंत प्रिय है और इस मास में भगवान ने अधिकतम लीलाएँ की है। हमें इस मास में कैसे भक्ति करनी है जिससे अधिक से अधिक फल प्राप्त कर सकें। भगवान कृष्ण का एक चित्र माता यशोदा और ओखल के संग रख लें।

दामोदराष्टकम (आठ श्लोक की भगवान दामोदर कृष्ण की प्रार्थना है जिसे नित्य कार्तिक में गाना चाहिए) तुलसी महारानी की विशेष पूजा इस माह में होती है। इसलिए तुलसी महारानी का पौधा गमले में लगा लें और गमले को अच्छे से रंगरोगन कर दें।

तुलसी महारानी के पूजन की विधि समझ लें

मिट्टी के दीपक खरीद लें (कार्तिक में भगवान् कृष्ण के समक्ष मिट्टी के दीप प्रज्वलित करने का विशेष महत्त्व है) और साथ ही रुई की बत्ती, गाय का घी और तिल का तेल भी ले लें। अगर 10 दीप एक बार में प्रज्वलित करने हैं तो 300 दीप ले लें। ब्रह्म मुहूर्त में उठे, स्नान के बाद तुलसी -पूजन (सूर्योदय से पहले) करें और तुलसी महारानी के समक्ष हरे कृष्ण महामंत्र का जप करें।

(पवित्र कार्तिक मास में ब्रह्मा मुहुर्त में स्नान अनिवार्य है)

शाम को स्नान करके सूर्यास्त के बाद भगवान दामोदर के समक्ष दामोदराष्टकम गाते हुए या सुनते हुए दीप प्रज्जलवित करें और साथ ही तुलसी महारानी के समक्ष भी दीप प्रज्जलवित करें। इस महीने किया हुआ हरि नाम जाप, पुण्य, दान, दीप दान कई गुना फल देता है। इसलिए वैष्णव भक्त अपने कृष्ण की प्रसन्नता के लिए सब कुछ करने को तत्पर रहते हैं।

भविष्य पुराण

भविष्य पुराण की कथा के अनुसार, एक बार कार्तिक महीने में श्रीकृष्ण को राधा से कुंज में मिलने के लिए आने में विलंब हो गया। कहते हैं कि इससे राधा क्रोधित हो गईं। उन्होंने श्रीकृष्ण के पेट को लताओं की रस्सी बनाकर उससे बांध दियां वास्तव में माता यशोदा ने किसी पर्व के कारण कन्हैया को घर से बाहर निकलने नहीं दिया था। जब राधा को वस्तुस्थिति का बोध हुआ, तो वे लज्जित हो गईं। उन्होंने तत्काल क्षमा याचना की और दामोदर श्रीकृष्ण को बंधनमुक्त कर दिया। इसलिए कार्तिक माह 'श्रीराधा-दामोदर मास' भी कहलाता है।

स्कंदपुराण

स्कंद पुराण के अनुसार, कार्तिक के माहात्म्य के बारे में नारायण ने ब्रह्मा को, ब्रह्मा ने नारद को और नारद ने महाराज पृथु को अवगत

कराया था। पद्मपुराण के अनुसार, रात्रि में भगवान विष्णु के समीप जागरण, प्रातः काल स्नान करने, तुलसी की सेवा, उद्यापन और दीपदान ये सभी कार्तिक मास के पांच नियम हैं। इस मास के दौरान विधिपूर्वक स्नान-पूजन, भगवद्कथा श्रवण और संकीर्तन किया जाता है। इस समय वारुण स्नान, यानी जलाशय में स्नान का विशेष महत्व है। तीर्थ-स्नान का भी असीम महत्व है। भक्तगण ब्रज में इस माह के दौरान श्रीराधाकुंड में स्नान और परिक्रमा करते हैं। 'नमो रमस्ते तुलसि पापं हर हरिप्रिये' मंत्रोच्चार कर तुलसी की पूजा की जाती है।

माना जाता है कि दामोदर मास में राधा के विधिपूर्वक पूजन से भगवान श्रीकृष्ण प्रसन्न होते हैं, क्योंकि राधा को प्रसन्न करने के सभी उपक्रम भगवान दामोदर को अत्यंत प्रिय हैं।

श्रीदामोदराष्टकम्

नमामीश्वरं सच्चिदानंदरूपं
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम्।
यशोदाभियोलूखलाद्धावमानं
परामृष्टमत्यं ततो द्रुत्य गोप्या।। १।।

जिनके कपोलों पर लटकते मकराकृत-कुंडल क्रीड़ा कर रहे हैं, जो गोकुल के चिन्मय धाम में परम शोभायमान हैं, जो दूध की हांडी फोड़ने के कारण माँ यशोदा से भयभीत होकर उखल के उपर से कूदकर अत्यन्त वेग से दौड़ रहे हैं और जिन्हें माँ यशोदा ने उनसे भी अधिक वेग से दौड़कर पकड़ लिया है, ऐसे सच्चिदानंद-स्वरूप सर्वेश्वर श्रीकृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ।

रुदन्तं मुहुर्नेत्रयुग्मं मृजन्तं
कराम्भोज-युग्मेन सातंकनेत्रं।
मुहुःश्वास कम्प -त्रिरेखांक -कण्ठ
स्थित ग्रैव -दामोदरं भक्तिबद्धम्।। २।।

जननी के हाथ में लाठी को देखकर मार खाने के भय से जो रोते-रोते बारंबार अपनी दोनों आँखों को अपने हस्तकमल से मसल रहे हैं, जिनके दोनों नेत्र भय से अत्यन्त विह्वल हैं, रूदन के कारण बारंबार साँस लेने के कारण तीन रेखाओं से युक्त शंख रूपी जिनके कंठ में पड़ी मोतियों की माला काँप रही है, और जिनका उदर (माँ यशोदा की वात्सल्य भक्ति द्वारा) रस्सी से बँधा हुआ है, उन सच्चिदानन्द -स्वरूप सर्वेश्वर श्रीकृष्ण की मैं वंदना करता हूँ।

इतिदृक् स्वलीलाभिरानंद कुण्डे
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम्।
तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे।। ३।।

जो इस प्रकार की बाल्य-लीलाओं द्वारा गोकुलवासियों को आनन्द सरोवर में नित्यकाल सराबोर करते रहते हैं,और जो ऐश्वर्यपूर्ण ज्ञानी भक्तों के समक्ष यह उजागर करते हैं कि ₹ मैं केवल ऐश्वर्यविहीन प्रेम और भक्ति द्वारा ही जीता जा सकता हूँ,₹ उन दामोदर श्रीकृष्ण की मैं प्रेमपूर्वक बारम्बार वंदना करता हूँ।

वरं देव! मोक्षं न मोक्षावधिं वा
न चान्यं वृणेअहं वरेशादपीह।
इदं ते वपुर्नाथ गोपाल बालं
सदा मे मनस्याविरस्तां किमन्यैः।। ४।।

हे देव! आप सब प्रकार से वर देने में पूर्ण सक्षम हैं, तो भी मैं आप से मोक्ष या मोक्ष की चरम सीमारूप वैकुण्ठ आदि लोक भी नहीं चाहता और न ही अन्य कोई (नवधा भक्ति द्वारा प्राप्त किये जाने वाले) वरदान चाहता हूँ। हे नाथ! मैं तो केवल एक ही वर चाहता हूँ कि आपका यह बालगोपाल रूप मेरे हृदय में सदा -सदा के लिये विराजमान रहे।मुझे अन्य दूसरे वरदानों से कोई प्रयोजन नहीं है।

इदं ते मुखाम्भोजमत्यन्तनीलै-
र्वृतं कुन्तलैः स्निग्ध-रक्तैश्च गोप्या।
मुहुश्चुम्बितं बिम्बरक्ताधरं मे
मनस्याविरस्तामलं लक्षलाभैः।। ५।।

हे देव! कुछ -कुछ लालिमा लिये हुये कोमल तथा घुँघराले बालों से घिरा आपका मुखकमल माँ यशोदा द्वारा बारम्बार चुम्बित है और आपके होंठ बिम्ब फल के समान लाल हैं। आपका यह मधुर रूप नित्यकाल तक मेरे हृदय में प्रकट होता रहे। मुझे लाखों प्रकार के अन्य लाभों की आवश्यकता नहीं है।

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो

प्रसीद प्रभो दुःख जलाब्धि-मग्नम्।
कृपादृष्टि-वृष्टियातिदीनं बतानु
गृहाणेश मामज्ञमेध्यक्षि दृश्यः।। ६।।

हे परमदेव! हे दामोदर! हे अनन्त! हे विष्णो! हे प्रभो! हे भगवन! मुझपर प्रसन्न होवें। मैं दुःखों के समुद्र में डूबा जा रहा हूँ।अतएव आप अपनी कृपादृष्टि रूपी अमृतवर्षा कर मुझ दीन-हीन शरणागत पर अनुग्रह कीजिये एवं मेरे नेत्रों के समक्ष साक्षात् दर्शन दीजिये।

कुबेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्
त्वयामोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च।
तथा प्रेमभक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ
न मोक्षे गृहो मेअस्ति दामोदरेह।। ७।।

हे दामोदर! जिस प्रकार आपने दामोदर रूप से उखल में बँधे रहकर भी नलकूबर और मणिग्रीव नामक कुबेर के दोनों पुत्रों को नारदमुनि के शाप से मुक्त करके अपनी भक्ति प्रदान की थी, उसी प्रकार मुझे भी आप अपनी प्रेमभक्ति प्रदान कीजिये।यही मेरा एकमात्र आग्रह है।किसी अन्य प्रकार के मोक्ष की मेरी तनिक भी इच्छा नहीं है।

नमस्तेअस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने।
नमो राधिकायै त्वदीय -प्रियायै
नमोअनंत लीलाय देवाय तुभ्यम्।। ८।।

हे दामोदर ! आपके उदर को बाँधने वाली महान् रस्सी को प्रणाम है, निखिल ब्रह्मतेज के आश्रय और सम्पूर्ण विश्व के आधारस्वरूप आपके उदर को नमस्कार है।आपकी प्रियतमा श्री राधारानी के चरणों में मेरा बारम्बार प्रणाम है और हे अनन्त लीलाविलास करने वाले भगवन्! मैं आपको भी सैकड़ों प्रणाम अर्पित करता हूँ।

बहुलाष्टमी

यह श्यामकुण्ड तथा राधा कुण्ड के आविर्भाव का स्मराणोत्सव है। दीपावली पर्वः कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है।

गौ-पूजा तथा गोर्वधन पूजाः दिपावली के पश्चात् मनाया जाता है।

गोपाष्टमीः शुक्ल पक्ष की अष्टमी को मनाई जाती है।

उत्थान-द्वादशी

कातिर्क के शुक्ल पक्ष को उत्थान द्वादशी मनाई जाती है। रासयात्रा या श्रीकृष्ण का रास-नृत्य कार्तिक की पूर्णिमा की रात्रि को मनाया जाता है।

सृष्टि, प्रकृति और संस्कृति के समन्वय का पर्व

अहोई अष्टमी

अनिता अग्रवाल

विश्व भर में भारत अपनी अनोखी संस्कृति और परंपराओं के लिए जाना जाता है। यह देश त्योहारों का देश है। यह सभी त्योहार हमारे संस्कारों तथा वैदिक परंपराओं को आज की पीढ़ी तक पहुंचाने का एक माध्यम हैं। सृष्टि में प्रकृति के साथ जीवन को संस्कारित और संतुलित ढंग से जीने की यह विधा भारतीय समाज को पीढ़ियों से प्राप्त है। इस कार्य में स्त्री की महत्ता है। स्त्री स्वयं प्रकृति स्वरूप है, इसलिए लोक के यह सभी पर्व स्त्री केंद्रित स्थापना के साथ मनाए जाते हैं।

> अहोई अष्टमी वास्तव में सृष्टि, प्रकृति और संस्कृति के समन्वय का पर्व है लोक परंपरा में अहोई अष्टमी में सभी माताएं अपनी संतान की दीर्घायु और मंगल मय जीवन के लिए उपवास रखती हैं। महिलाएं ही वह माध्यम है जो इन परंपराओं, संस्कारों, मान्यताओं और धर्म ध्वज की वाहक बनकर इन्हें अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करती हैं। अहोई अष्टमी के नाम से किया जाने वाला यह व्रत कार्तिक मास में कृष्ण पक्ष की सप्तमी और अष्टमी दोनों तिथियों में किया जाता है।

लेखिका प्रख्यात साहित्यकार, कवयित्री और पर्यावरण विशेषज्ञ हैं।

अहोई अष्टमी वास्तव में सृष्टि, प्रकृति और संस्कृति के समन्वय का पर्व है लोक परंपरा में अहोई अष्टमी में सभी माताएं अपनी संतान की दीर्घायु और मंगल मय जीवन के लिए उपवास रखती हैं। महिलाएं ही वह माध्यम है जो इन परंपराओं, संस्कारों, मान्यताओं और धर्म ध्वज की वाहक बनकर इन्हें अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करती हैं। अहोई अष्टमी के नाम से किया जाने वाला यह व्रत कार्तिक मास में कृष्ण पक्ष की सप्तमी और अष्टमी दोनों तिथियों में किया जाता है। यह अपने - अपने परिवार में चली आ रही मान्यता के आधार पर (किसी के यहां सप्तमी का व्रत होता है तो वहीं किन्हीं और परिवारों में इसे अष्टमी तिथि को)करते हैं। इसके अतिरिक्त भी एक और मत है वह यह कि कुछ परिवारों में कोई तिथि ही नहीं पता करते बल्कि जिस दिन (रविवार से शनिवार तक) की भी दिवाली होनी है, उससे पहले सप्ताह में ठीक उसी दिन यह व्रत किया जाता है। भले ही उस दिन कोई भी तिथि हो। पुत्रवती महिलाओं के लिए यह व्रत अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्राचीन मान्यताओं के अनुसार केवल बेटे की मां ही इस व्रत को कर सकती है किंतु आज की महिला जागरुक है और अपनी संतान चाहे वह पुत्र हो या पुत्री... दोनों के लिए व्रत उतनी ही श्रद्धा से करती हैं। यहां तक कि कुछ महिलाएं गर्भावस्था से ही (यदि उसे दौरान इस व्रत का समय आता है) यह व्रत उठा लेती हैं। माताएं अहोई अष्टमी के व्रत में दिनभर उपवास रखती हैं। उत्तर भारत के विभिन्न अंचलों में होई माता का स्वरूप वहां की स्थानीय परंपरा के अनुसार बनता है। संपन्न घर की महिलाएं चांदी की ही बनवाती हैं।

पूजन सामग्री

एक थाली मेंएक कटोरी गेहूं रोली,चावल, कलावा, जल का लोटा, एक कटोरी में हलवा एक मिट्टी का करवा, उसके ऊपर कोसा, घी का दीपक,बत्ती, माचिस सिंघाड़े बताशे कुछ रुपए। मोली के धागे में पिरोकर स्याऊ और दो मनके

व्रत की विधि

किसीके यहां दीवार पर होई मांडते हैं (दीवार पर चूने से पोतकर उस पर गेरू से मांड लेते हैं) आजकल बाजार में विभिन्न प्रकार के पोस्टर उपलब्ध हैं जिन पर होई माता की रंग - बिरंगी तस्वीर बनी होती है। ज्यादातर घरों में वही लाकर दीवार पर चिपका लेते हैं। शाम होने से पहले तस्वीर के सामने बैठकर कहानी सुनते हैं। एक पाटे पर पूजन की सारी सामग्री रख लेते हैं।सबसे पहले करवे और लोटे पर गोलाई में कलावे की डोरी लपेटते हैं, उस पर साथिया बनाते हैं और करवे पर कोसा रखकर उस पर सात बिन्दी लगा देते हैं।कोसे में थोड़ा सिंघाड़ा, बताशा रख देते हैं।साथ ही एक छोटी प्लेट में हलवा रुपया रखते हैं। अहोई माता,करवा,स्याऊ और बायने की प्लेट -- सबको रोली चावल से चिरच लेते हैं। माता की तस्वीर और स्याऊ को हलवे का भोग लगाते हैं,जल छिड़कते हैं।फिर अपने माथे पर रोली चावल से तिलक करके, हाथ में गेहूं के दाने लेकर कथा सुनते हैं। कथा के बाद हाथ के दाने चुनरी के आंचल में बांध लेते हैं, फिर बायना निकाल कर सासजी को देकर पैर छू लेते हैं।पाटे पर से स्याऊ उठाकर गले मे पहन लेते हैं। गेहूं, थोड़ा हलवा और रुपया ब्राह्मणी को दे दें। तारे उगने पर करवे के जल से आंचल के गेहूं के दाने निकालकर तारों को अर्घ्य दें, और रोली, चावल,हलवा चढ़ा दें। फिर खाना खा लें।

होई की कहानी

एक साहूकार के सात बेटे, सात बहुएं और एक बेटी थी। एक दिन सातों बहुएं और बेटी खन्दे में से मिट्टी लेने गईं। मिट्टी खोदते समय नंद के हाथ से स्याऊ के बच्चे मर गए। स्याऊ माता ने कहा अब मैं तुम्हारी कोख बांधूगी। नंद ने अपनी सारी भाभियों से कहा मेरे बदले कोख बंधवा लो। छः भाभियों ने तो मना कर दिया पर छोटी भाभी ने सोचा नहीं बंधवाऊंगी तो सासजी नाराज हो जाएंगी तो उसने अपनी कोख बंधवाली। उसके बच्चे होते और होई सप्तमी के दिन मर जाते।एक दिन उसने पंडित को बुलाकर पूछा कि यह क्या दोष है ? मेरे बच्चे होते ही मर जाते हैं। पंडित ने कहा तुम सुरही गाय की सेवा किया करो। वह स्याऊ माता की सहेली है।वही तुम्हारी कोख छुड़वाएंगी और तभी तुम्हारे बच्चे बचेंगे। वह खूब सुबह उठकर सुरही गाय का सारा काम करके आ जाती थी। एक दिन गाय माता ने सोचा कि आजकल कौन मेरा इतना काम करता है ? बहुएं तो लड़ाई किया करती थी। आज देखना चाहिए कि कौन सी बहू काम कर रही है। गौ माता खूब सुबह उठकर बैठ गई। देखा तो साहूकार के बेटे की बहू काम कर रही है। माता ने पूछा - तुमको क्या चाहिए कि मेरे इतने काम कर रही हो वह बोली मुझे वचन दो। गौ माता ने उसे वचन दे दिया। बहू बोली स्याऊ माता के पास मेरी कोख बंधी हुई है, वह आपकी सहेली है। मेरी कोख को छुड़वा कर दो। तब गौ माता उसे सात समुद्र पार अपनी सहेली के पास ले जाने लगी। रास्ते में धूप थी। वह लोग एक पेड़ के नीचे बैठ गईं। थोड़ी देर में एक सांप आया। उस पेड़ पर गरुड़ पक्षी के बच्चे थे, जिनको सांप डंसने लगा। साहूकार की बहू ने देख लिया और सांप को मार कर ढक दिया। गरुड़ पंखनी आई और जाकर साहूकार की बहू को चोंच मारने लगी। वह बोली- मैंने तुम्हारे बच्चों को नहीं मारा। यह सांप मारने आया था, मैंने बचाया है। गरुड़ पक्षी ने कहा तुमने मेरे बच्चों को बचाया है तो कुछ मांगो। वह बोली सात समुद्र पार स्याऊ माता रहती है तुम हमें वहां पहुंचा दो। गरुड़ ने अपनी पीठ पर बैठाकर दोनों को स्याऊ माता के पास पहुंचा दिया। स्याऊ माता ने गौ माता से कहा-आओ बहन बहुत दिन बाद आई। मेरे सिर में जूं पड़ गई है, निकाल दो। गौ माता ने कहा- मेरे साथ आई है उससे निकलवा लो। साहूकार की बहू

ने उसकी जुंए निकाल दी। स्याऊ माता बोली- तुमने मेरी बड़ी मदद की है तुम्हारे सात बेटे, सात बहुएं हों। तब उसने कहा- मेरे तो एक भी नहीं है सात कहां से होंगे ? स्याऊ माता ने पूछा - एक भी क्यों नहीं है? बोली - वचन दो तो बताऊंगी। स्याऊ माता बोली -वचन दिया। साहूकार की बहू ने कहा कि मेरी कोख तो आपके पास बंधी पड़ी है। स्याऊ माता बोली- तुमने तो मुझे ठग लिया। मैं तेरी कोख नहीं खोलती पर अब तो खोलनी पड़ेगी। अपने घर जाओ, तुम्हें सात बेटे, सात बहुएं मिलेंगी। तुम सात उजमन करना, सात होई मांडना,सात कड़ाही करना। वह घर गई। जाकर देखा तो सात बेटे,सात बहुएं बैठी हैं। तब उसने सात होई मंडवाई। कोई दीवार पर, कोई मटके पर, और कोई कहीं और। उसकी देवरानी- जेठानी बात कर रही थी।जल्दी-जल्दी पूजा कर लो नहीं तो वह रोना- धोना शुरू कर देगी। थोड़ी देर बाद अपने बच्चों को भेजा, देख कर आओ आज वह रोई कैसे नहीं? बच्चों ने आकर कहा -आज तो चाची के घर खूब होई मंड रही है, खूब उजमन हो रहे हैं। देवरानी- जेठानी दौड़ी- दौड़ी गई,देखा कि उसने अपनी कोख छुड़ा ली है। वे पूछने लगीं कि कैसे छुड़ाई? वह बोली कि तुम लोगों ने तो कोख बंधवाई नहीं, मैं बच्ची थी तो मैंने बंधवा ली। पर स्याऊ माता ने दया करके मेरी कोख खोल दी। हे स्याऊ माता! जैसे उस साहूकार की बहू की कोख खोली,वैसे ही हमारी भी खोलना। कहते,सुनते सबकी खोलना। इसके बाद गणेश जी की कहानी

गणेश जी की कहानी

एक गणेश जी महाराज थे, जो चुटकी में चावल, चम्मच में दूध लेकर घूम रहे थे और कह रहे थे कि कोई खीर बना दो। एक बुढ़िया माई बोली- ला मैं बना दूं। कटोरी लाई तो गणेश जी बोले- बुढ़िया माई !कटोरी क्यों लाई? टोप चढ़ा दो। बुढ़िया माई ने कहा- इतने बड़े का क्या होगा? यह कटोरी बहुत है। गणेश जी बोले- तू चढ़ा कर तो देख। बुढ़िया माई ने टोप चढ़ा दिया। चढ़ाते ही टोप दूध से भर गया। गणेश जी बोले कि मैं नहा कर आता हूं।तुम खीर बना कर रखना।खीर बनकर तैयार हो गई। गणेश जी आए नहीं तो बुढ़िया माई को लालच आने लगा। वह दरवाजे के पीछे बैठकर खीर खाने लगी और बोली-जय गणेश जी भोग लगाओ।इतने में गणेश जी ने आकर पूछा कि बुढ़िया माई !खीर बना ली क्या? बुढ़िया मा बोली- हां बना ली, आओ खाओ। तब गणेश जी ने कहा- मैंने तो तभी खा लिया,जब तुमने भोग लगाया।बुढ़िया मा बोली - हे महाराज! आपने मेरे सारे राज खोल दिए लेकिन और कोई का मत खोलना। गणेश जी ने बुढ़िया माई को खूब सारा धन दे दिया और बोले कि मैं तुझे सात पीढ़ी तक भरा रखूंगा। हे गणेश जी महाराज! जैसा बुढ़िया मा को दिया ऐसा सबको देना। कहते- सुनते को अपने सारे परिवार को देना।

होई का उजमन

किसी के यहां लड़का पैदा हो या लड़के का विवाह हुआ हो, तो उस साल होई का उजमन करते हैं। कहानी सुनते समय होई की माला में दो चांदी का मनका बढ़ा लें।एक थाली में सात जगह चार -चार पूरी हलवा तील और रुपया रखकर, हाथ फेर कर सासजी को पैर छू कर दे दें। सासजी तील(साडी-ब्लाउज) खुद रख लेती हैं और पूरी- हलवा का बाना बांट देती हैं।

आलेख

देव प्रबोधिनी एकादशी

सनातन संस्कृति में एकादशी का व्रत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रत्येक वर्ष चौबीस एकादशियाँ होती हैं। जब अधिकमास या मलमास आता है तब इनकी संख्या बढ़कर 26 हो जाती है। आषाढ शुक्ल एकादशी को देव-शयन हो जाने के बाद से प्रारम्भ हुए चातुर्मास का समापन कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन देवोत्थान-उत्सव होने पर होता है। इस दिन वैष्णव ही नहीं, स्मार्त श्रद्धालु भी बडी आस्था के साथ व्रत करते हैं।

आचार्य लालमणि तिवारी

> कार्तिक शुक्ल एकादशी अर्थात् आषाढ महीने में सोए हुए भगवान को चार महीनों के दीर्घ निद्रा में से जगाने का दिवस। प्रबोधन अर्थात् जागृत करना, इसीलिए उसको प्रबोधिनी एकादशी नाम दिया गया है। हमारे अन्तर के राम जागृत हो, हमें अपने उतरदायित्व का भान हो इसलिए लक्षणात्मक ढंग से हमारे ऋषियों ने भगवान को सुला दिया। वास्तव में देखा जाए तो भगवान को जगाना यानी स्वयं को जागृत करना है।

लेखक सनातन चिंतक और गीता प्रेस के प्रबंधक हैं।

वेदाध्ययन, तपस्या व त्याग की दृष्टि से चातुर्मास्य का नियम अति महत्त्वपूर्ण है। भगवान श्रीहरि की भक्ति में लीन होने के लिए यह समय अति उत्तम होता है। गृहस्थ व्यक्ति भी चातुर्मास्य में भगवान विष्णु की भक्ति का पूरा लाभ उठा सकते हैं। भगवान विष्णु को चार मास की योग-निद्रा से जगाने के लिए घण्टा, शंख, मृदंग आदि वाद्यों की मांगलिक ध्वनि के बीचये श्लोक पढकर जगाते हैं-

उत्तिष्ठोत्तिष्ठगोविन्द त्यजनिद्रांजगत्पते।
त्वयिसुप्तेजगन्नाथ जगत् सुप्तमिदंभवेत्॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठवाराह दंष्ट्रोद्धतवसुन्धरे।
हिरण्याक्षप्राणघातिन्त्रैलोक्येमंगलम्कुरु॥

संस्कृत बोलने में असमर्थ सामान्य लोग-उठो देवा, बैठो देवा कहकर श्रीनारायण को उठाएं।

सुप्त मानवीय मानस को जागृत करने का भाव

कार्तिक शुक्ल एकादशी अर्थात् आषाढ महीने में सोए हुए भगवान को चार महीनों के दीर्घ निद्रा में से जगाने का दिवस। प्रबोधन अर्थात् जागृत करना, इसीलिए उसको प्रबोधिनी एकादशी नाम दिया गया है। हमारे अन्तर के राम जागृत हो, हमें अपने उत्तरदायित्व का भान हो इसलिए लक्षणात्मक ढंग से हमारे ऋषियों ने भगवान को सुला दिया। वास्तव में देखा जाए तो भगवान को जगाना यानी स्वयं को जागृत करना है। सोए हुए को जगाने वाली,

बैठे हुए को खड़ा करने वाली, खड़े हुए को चलाने वाली और चलते हुए को दौड़ाने वाली यह प्राणवान और प्रेरणादायी संस्कृति है। मानव जीवन कमलपत्र पर गिरे हुए पानी के बिन्दु के समान चपल है। उसको व्यर्थ प्रमाद में समाप्त न कर मनुष्य को जागृत रहकर उसका योग्य उपयोग करना चाहिए। मुर्गे के बोलने से या सूर्य के उदय होने सबुह नहीं होती, अपितु मनुष्य के जागने से सुबह होती है।

ऋषि कहते हैं कि ज्ञान ही सद्गुण है। कोई भी व्यक्ति सोच-समझकर बुरा नहीं बनता। आवश्यकता है उसको सत्य समझाने की। उसके बाद के विद्वानों ने सुकरात की इस मान्यता का विरोध किया। उन्होंने कहा, सुकरात प्रामाणिक हैं। वे जो जानते हैं या सोचते हैं, उसके अनुसार आचरण करते हैं, परन्तु दुनिया के सभी लोग वैसे नहीं होते। वे सत्य क्या है, यह जानते हुए भी उसके विरुद्ध आचरण करते हैं।

सोए हुए को जगाने वाली, बैठे हुए को खड़ा करने वाली, खड़े हुए को चलाने वाली और चलते हुए को दौड़ाने वाली यह प्राणवान और प्रेरणादायी संस्कृति है। मानव जीवन कमलपत्र पर गिरे हुए पानी के बिन्दु के समान चपल है।

आज प्रत्येक व्यक्ति सोया हुआ दिखाई देता है। मात्र वह 'जाग रहा' है इसका दिखावा करने में अति कुशल बना है। दूसरी भाषा में कहना हो तो मनुष्य दंभी बना है। इस प्रकार आलस्य, अज्ञान और अंधकार की घोर निद्रा में सोये हुए मानव को जगाने वाली एकादशी अर्थात् यह प्रबोधिनी एकादशी है।

शास्त्रकार भी हमें हिला-हिलाकर जगाते हैं। वेदों की गर्जना है कि 'उत्तिष्ठित् जाग्रत प्राप्यवरान् निबोधत।' श्रुति का आदेश है कि उठो और जागो। अब प्रश्न यह है कि मनुष्य प्रथम उठता है या जागता है? उठने के बाद जागने को कहने वाली श्रुति हमें समझाती है कि कितने ही उठे हुए लोग जागृत हुए नहीं होते हैं। वर्षों तक मनुष्य अपना सारा व्यवहार नींद जैसी निष्क्रिय और बेजान अवस्था में करता रहता है।

कथा एवं पूजा विधि

श्रीहरि को जगाने के पश्चात् उनकी षोडशोपचार विधि से पूजा करें। अनेक प्रकार के फलों के साथ नैवेद्य (भोग) निवेदित करें। संभव हो तो उपवास रखें अन्यथा केवल एक समय फलाहार ग्रहण करें। इस एकादशी में रातभर जागकर हरि नाम-संकीर्तन करने से भगवान विष्णु अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। ये तथ्य है या केवल एक राय है विवाहादि समस्त मांगलिक कार्योके शुभारम्भ में संकल्प भगवान विष्णु को साक्षी मानकर किया जाता है। अतएव चातुर्मासमें प्रभावी प्रतिबंध देवोत्थान एकादशी के दिन समाप्त हो जाने से विवाहादिशुभ कार्य प्रारम्भ हो जाते हैं। पद्मपुराणके उत्तरखण्डमें वर्णित एकादशी-माहात्म्य के अनुसार श्री हरि-प्रबोधिनी (देवोत्थान) एकादशी का व्रत करने से एक हजार अश्वमेध यज्ञ तथा सौ राजसूय यज्ञों का फल मिलता है। इस परमपुण्यप्रदाएकादशी के विधिवत व्रत से सब पाप भस्म हो जाते हैं तथा व्रती मरणोपरान्त बैकुण्ठ जाता है। इस एकादशी के दिन भक्त श्रद्धा के साथ जो कुछ भी जप-तप, स्नान-दान, होम करते हैं, वह सब अक्षय फलदायक हो जाता है। देवोत्थान एकादशी के दिन व्रतोत्सवकरना प्रत्येक सनातनधर्मी का आध्यात्मिक कर्तव्य है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु की नींद अनियमित थी। कभी-कभी वह महीनों के लिए जागते रहते थे और कभी-कभी कई महीनों तक लगातार सोते थे। इससे देवी लक्ष्मी नाखुश थी।

यहां तक कि भगवान शिव, भगवान ब्रह्मा, देवों और सन्यासियों को भगवान विष्णु के दर्शन के लिए लंबे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी जबकि भगवान विष्णु सो रहे होते था। यहाँ तक की राक्षस भगवान विष्णु की नींद की अवधि का लाभ लेते थे और मनुष्यों पर अत्याचार करते थे और धरती पर अधर्म फेल रहा था।

एक दिन जब भगवान विष्णु नींद से जागे तो उन्होंने देवों और संतों को देखा जो उनसे सहायता मांग रहे थे। उन्होंने भगवान विष्णु को बताया कि शंख्यायण नाम का दानव सभी वेदों को चुरा लिया था जिससे लोग ज्ञान से वंचित हो गए थे। भगवान विष्णु ने वेदों को वापस लाने का वादा किया इसके बाद वह दानव शंख्यायण के साथ कई दिनों तक लड़े और वेद वापस लेकर आये।

भगवान विष्णु इस लडाई के बाद जागते रहे और उन्होंने अपनी नींद को चार महीनों रखने के प्रण लिया।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा-"हे अर्जुन! तुम मेरे बड़े ही प्रिय सखा हो। हे पार्थ! अब मैं तुम्हें पापों का नाश करने वाली तथा पुण्य और मुक्ति प्रदान करने वाली प्रबोधिनी एकादशी की कथा सुनाता हूँ, श्रद्धापूर्वक श्रवण करो-

इस विषय में मैं तुम्हें नारद और ब्रह्माजी के बीच हुए वार्तालाप को सुनाता हूं। एक समय नारदजी ने ब्रह्माजी से पूछा-'हे पिता! प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का क्या फल होता है, आप कृपा करके मुझे यह सब विधानपूर्वक बताएं।'

ब्रह्माजी ने कहा-'हे पुत्र! कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्त्र अश्वमेध तथा सौ राजसूय यज्ञ के फल के बराबर होता है।'

नारदजी ने कहा-'हे हिता! एक संध्या को भोजन करने से, रात्रि में भोजन करने तथा पूरे दिन उपवास करने से क्या-क्या फल मिलता है। कृपा कर सविस्तार समझाइए'

ब्रह्माजी ने कहा-'हे नारद! एक संध्या को भोजन करने से दो जन्म के तथा पूरे दिन उपवास करने से सात जन्म के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस वस्तु का त्रिलोक में मिलना दुष्कर है, वह वस्तु भी प्रबोधिनी एकादशी के व्रत से सहज ही प्राप्त हो जाती है। प्रबोधिनी एकादशी के व्रत के प्रभाव से बड़े-से-बड़ा पाप भी क्षण मात्र में ही नष्ट हो जाता है। पूर्व जन्म के किए हुए अनेक बुरे कर्मों को प्रबोधिनी एकादशी का व्रत

क्षण-भर मे नष्ट कर देता है।

जो मनुष्य अपने स्वभावानुसार प्रबोधिनी एकादशी का विधानपूर्वक व्रत करते हैं, उन्हें पूर्ण फल प्राप्त होता है।

हे पुत्र! जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक इस दिन किंचित मात्र पुण्य करते हैं, उनका वह पुण्य पर्वत के समान अटल हो जाता है।

जो मनुष्य अपने हृदय के अंदर ही ऐसा ध्यान करते हैं कि प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करूंगा, उनके सौ जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं।

जो मनुष्य प्रबोधिनी एकादशी को रात्रि जागरण करते हैं, उनकी बीती हुई तथा आने वाली दस पीढ़ियां विष्णु लोक में जाकर वास करती हैं और नरक में अनेक कष्टों को भोगते हुए उनके पितृ विष्णुलोक में जाकर सुख भोगते हैं।

हे नारद! ब्रह्महत्या आदि विकट पाप भी प्रबोधिनी एकादशी के दिन रात्रि को जागरण करने से नष्ट हो जाते हैं। प्रबोधिनी एकादशी को रात्रि को जागरण करने का फल अश्वमेध आदि यज्ञों के फल से भी ज्यादा होता है।

सभी तीर्थों में जाने तथा गौ, स्वर्ण भूमि आदि के दान का फल प्रबोधिनी के रात्रि के जागरण के फल के बराबर होता है।

हे पुत्र! इस संसार में उसी मनुष्य का जीवन सफल है, जिसने प्रबोधिनी एकादशी के व्रत द्वारा अपने कुल को पवित्र किया है। संसार में जितने भी तीर्थ हैं तथा जितने भी तीर्थों की आशा की जा सकती है, वह प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करने वाले के घर में रहते हैं।

प्राणी को सभी कर्मों को त्यागते हुए भगवान श्रीहरि की प्रसन्नता के लिए कार्तिक माह की प्रबोधिनी एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिए। जो मनुष्य इस एकादशी व्रत को करता है, वह धनवान, योगी तपस्वी तथा इंद्रियों को जीतने वाला होता है, क्योंकि एकादशी भगवान विष्णु की अत्यंत प्रिय है। इसके व्रत के प्रभाव से मनुष्य जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है।

इस एकादशी व्रत के प्रभाव से कायिक, वाचिक और मानसिक तीनों प्रकार के पापों का शमन हो जाता है। इस एकादशी के दिन जो मनुष्य भगवान विष्णु की प्राप्ति के लिए दान, तप, होम, यज्ञ आदि करते हैं, उन्हें अनंत पुण्य की प्राप्ति होती है।

प्रबोधिनी एकादशी के दिन भगवान श्रीहरि का पूजन करने के बाद, यौवन और वृद्धावस्था के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी की रात्रि को जागरण करने का फल, सूर्य ग्रहण के समय स्नान करने के फल से सहस्त्र गुना ज्यादा होता है। मनुष्य अपने जन्म से लेकर जो पुण्य करता है, वह पुण्य प्रबोधिनी एकादशी के व्रत के पुण्य के सामने व्यर्थ हैं। जो मनुष्य प्रबोधिनी एकादशी का व्रत नहीं करता, उसके सभी पुण्य व्यर्थ हो जाते हैं। इसलिए हे पुत्र! तुम्हें भी विधानपूर्वक भगवान विष्णु का पूजन करना चाहिए। जो मनुष्य कार्तिक माह के धर्मपरायण होकर अन्य व्यक्तियों का अन्न नहीं खाते, उन्हें चांद्रायण व्रत के फल की प्राप्ति होती है।

कार्तिक माह में प्रभु दान आदि से उतने प्रसन्न नहीं होते, जितने कि शास्त्रों की कथा सुनने से प्रसन्न होते है।

कार्तिक माह में जो मनुष्य प्रभु की कथा को थोड़ा-बहुत पढ़ते हैं या सुनते हैं, उन्हें सो गायों के दान के फल की प्राप्ति होती है।

ब्रह्माजी की बात सुनकर नारदजी बोले-'हे पिता! अब आप एकादशी के व्रत का विधान कहिए और कैसा व्रत करने से किस पुण्य की प्राप्ति होती है? कृपा कर यह भी समझाइए।

नारद की बात सुन ब्रह्माजी बोले-'हे पुत्र! इस एकादशी के दिन मनुष्य को ब्रह्म मुहूर्त में उठ जाना चाहिए और स्नानादि से निवृत्त होकर व्रत का संकल्प करना चाहिए। उस समय भगवान विष्णु से प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु! आज मैं निराहार रहूंगा और दूसरे दिन भोजन करूंगा, इसलिए आप मेरी रक्षा करें।

इस प्रकार प्रार्थना करके भगवान का पूजन करना चाहिए और व्रत प्रारंभ करना चाहिए। उस रात्रि को भगवान के समीप गायन, नृत्य, बाजे तथा कथा-कीर्तन करते हुए रात्रि व्यतीत करनी चाहिए। प्रबोधिनी एकादशी के दिन कृपणता को त्यागकर बहुत से पुष्प, अगर, धूप आदि से भगवान की आराधना करनी चाहिए।

शंख के जल से भगवान को अर्घ्य देना चाहिए। इसका फल तीर्थ दान आदि से करोड़ गुना अधिक होता है। जो मनुष्य अगस्त्य पुष्प से भगवान का पूजन करते हैं, उनके सामने इंद्र भी हाथ जोड़ता है। कार्तिक माह में जो बिल्व पत्र से भगवान का पूजन करते हैं, उन्हें अंत में मुक्ति मिलती है। कार्तिक माह में जो मनुष्य तुलसीजी से भगवान का पूजन करता है, उसके दस हजार जन्मों के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

जो मनुष्य इस माह में श्री तुलसीजी के दर्शन करते हैं या स्पर्श करते हैं या ध्यान करते हैं या कीर्तन करते हैं या रोपन करते हैं अथवा सेवा करते हैं, वे हजार कोटियुग तक भगवान विष्णु के लोक में वास करते हैं। जो मनुष्य तुलसी का पौधा लगाते हैं उनके कुल में जो पैदा होते हैं, वे प्रलय के अंत तक विष्णुलोक में रहते हैं।

जो मनुष्य भगवान का कदंब पुष्प से पूजन करते हैं, वह यमराज के कष्टों को नहीं पाते। सभी कामनाओं को पूरा करने वाले भगवान विष्णु कदंब पुष्प को देखकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं। यदि उनका कदंब पुष्प से पूजन किया जाए तो इससे उत्तम बात और कोई नहीं है। जो गुलाब के पुष्प से भगवान का पूजन करते हैं, उन्हें निश्चित ही मुक्ति प्राप्त होती है। जो मनुष्य बकुल और अशोक के पुष्पों से भगवान का पूजन करते हैं, वे अनंत काल तक शोक से रहित रहते हैं। जो मनुष्य भगवान विष्णु का सफेद और लाल कनेर के फूलों से पूजन करते हैं, उन पर भगवान अत्यंत प्रसन्न होते हैं। जो मनुष्य भगवान श्रीहरि का दूर्वादल ज्ञे पूजन करते हैं, वे पूजा के फल से सौ गुना ज्यादा फल पाते हैं।

आलेख

सनातन का आधार पवमान मंत्र

कैप्टन सुभाष ओझा

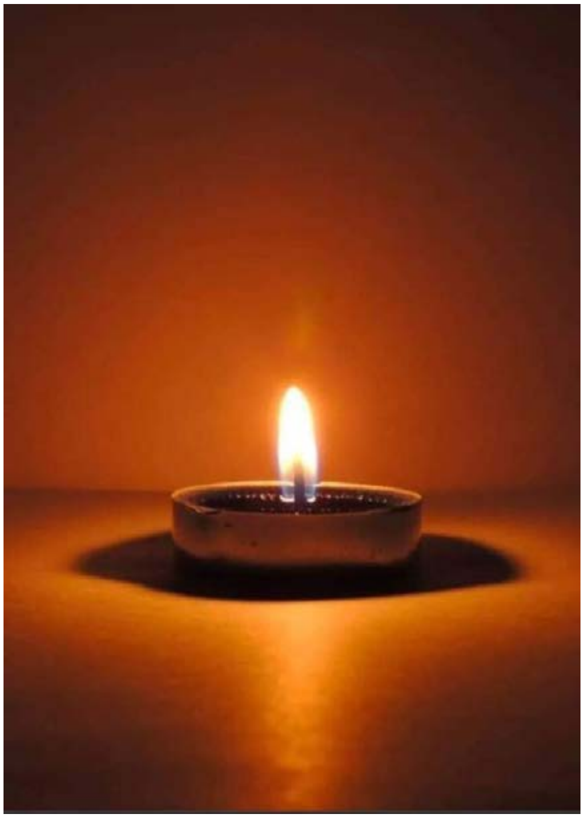

सभी उत्सव कल-कल करती नदियों और अनाज उगाती रत्नगर्भा धरती जैसे प्राकृतिक संसाधनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये मनाए जाते हैं। ये आस्था और उत्सव के विविध रंग हैं जिन्हें भारतीय समाज ने महापुरुषों की कथाओं से जोड़कर तथा धार्मिक संस्कारों में ढालकर जीवनशैली का हिस्सा बनाया है। दीपावली को विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं, कहानियों या मिथकों को चिह्नित करने के लिए हिंदू, जैन और सिखों द्वारा मनायी जाती है लेकिन वे सब बुराई पर अच्छाई, अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान और निराशा पर आशा की विजय के दर्शाते हैं।

लेखक सनातन चिंतक और उच्च न्यायालय लखनऊ में वरिष्ठ अधिवक्ता हैं।

पवमान मन्त्र या पवमान अभयारोह बृहदारण्यक उपनिषद में विद्यमान एक मन्त्र है। यह मन्त्र भारतीय सनातन संस्कृति का आधार मन्त्र जैसा ही है। इसके शब्द सनातन को अनंत प्रकाश से जोड़ते हैं। इसी प्रकाश की यात्रा मनुष्य को मनुष्य होने का प्रमाण प्रदान कराती है। यह मंत्र वस्तुतः सनातन संस्कृति का आधार है।

ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय।

॥ ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥

– बृहदारण्यकोपनिषद् 1.3.28।

उपनिषदों की आज्ञा है, अँधेरे से प्रकाश की ओर जाइये मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो।

मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

॥ ॐ शांति शांति शांति।।

बृहदारण्यक उपनिषद की ये प्रार्थना जिसमें प्रकाश उत्सव चित्रित है: 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् 'अंधेरे से ज्योति अर्थात प्रकाश की ओर जाइए' यह उपनिषदों की आज्ञा है। उपनिषद् अर्थात मानव जीवन दर्शन के मूल नैसर्गिक, संवैधानिक निर्देश। यही नियम है जिनसे स्वस्थ, सुखी, शांत,और विकासोन्मुखी समाज और विश्व की अवधारणा पुष्ट हो सकती है। ज्योति पर्व फिर आया है और यही सन्देश लेकर आया है। याद दिलाने के लिए आया है। आज की

दुनिया की समस्त अशांति, उद्विग्नता और अव्यवस्था एक मात्र उपाय यही है की हम उपनिषद की इस आज्ञा के अनुपालक बने। यह मात्रा एक उत्सव नहीं है बल्कि जीवन जीने का मांत्रिक आयोजन है जिससे सीख कर आगे चलना है। यह केवल सामान्य त्यौहार नहीं है बल्कि सृष्टि और प्रकृति में संस्कृति कौर सभ्यता के समन्वय का पर्व है। यह सच में प्रकृति और सृष्टि की स्वच्छता का पर्व है।

भारत में भरपूर बरसात के सूचक उत्तरा नक्षत्र की विदाई के साथ त्यौहारों यथा हरितालिका, ऋषि पंचमी, राधाष्टमी, डोल ग्यारस, अनन्त चतुर्दशी, नवरात्रि उत्सव, विजयादशमी, शरदपूर्णिमा और फिर दीपावली का सिलसिला प्रारम्भ होता है। लगता है, उत्सवों और त्यौहारों का यह सिलसिला -महज संयोग नहीं है। प्रतीत होता है मानों यह परम्परागत कृषक समाज द्वारा मनाया जाने वाला खरीफ उत्सव है। इसके अन्तर्गत दीपावली पर लक्ष्मी पूजन होता है। फिर गोवर्धन पूजा। उसके बाद, धन-धान्य और मिष्ठानों की महक बिखेरते अन्नकूट का आयोजन होता है। सभी उत्सव कल-कल करती नदियों और अनाज उगाती रत्नगर्भा धरती जैसे प्राकृतिक संसाधनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये मनाए जाते हैं। ये आस्था और उत्सव के विविध रंग हैं जिन्हें भारतीय समाज ने महापुरुषों की कथाओं से जोड़कर तथा धार्मिक संस्कारों में ढालकर जीवनशैली का हिस्सा बनाया है। दीपावली को विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं, कहानियों या मिथकों को चिह्नित करने के लिए हिंदू, जैन और सिखों द्वारा मनायी जाती है लेकिन वे सब बुराई पर अच्छाई, अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान और निराशा पर आशा की विजय के दर्शाते हैं। भारत में प्राचीन काल से दीवाली को हिंदू कैलेंडर के कार्तिक माह में गर्मी की फसल के बाद के एक त्यौहार के रूप में दर्शाया गया। दीवाली का पद्म पुराण और स्कन्द पुराण नामक संस्कृत ग्रंथों में उल्लेख मिलता है जो माना जाता है कि पहली सहस्त्राब्दी के दूसरे भाग में किन्हीं केंद्रीय पाठ को विस्तृत कर लिखे गए थे। दीये (दीपक) को स्कन्द पुराण में सूर्य के हिस्सों का प्रतिनिधित्व करने वाला माना गया है, सूर्य जो जीवन के लिए प्रकाश और ऊर्जा का लौकिक दाता है और जो हिन्दू कैलंडर अनुसार कार्तिक माह में अपनी स्तिथि बदलता है। कुछ क्षेत्रों में हिन्दू दीवाली को यम और नचिकेता की कथा के साथ भी जोड़ते हैं। नचिकेता की कथा जो सही बनाम गलत, ज्ञान बनाम अज्ञान, सच्चा धन बनाम क्षणिक धन आदि के बारे में बताती है; पहली सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व उपनिषद में दर्ज़ की गयी है। इसे सिख, बौद्ध तथा जैन धर्म के लोग भी मनाते हैं। जैन धर्म के लोग इसे महावीर के मोक्ष दिवस के रूप में मनाते हैं तथा सिख समुदाय इसे बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाता है।

7 वीं शताब्दी के संस्कृत नाटक नागनंद में राजा हर्ष ने इसे दीपप्रतिपादुत्सवः कहा है जिसमें दिये जलाये जाते थे और नव दुल्हन और दूल्हे को तोहफे दिए जाते थे। 9 वीं शताब्दी में राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इसे दीपमालिका कहा है जिसमें घरों की पुताई की जाती थी और तेल के दीयों से रात में घरों, सड़कों और बाजारों सजाया जाता था। फारसी यात्री और इतिहासकार अल बेरुनी, ने भारत पर अपने 11 वीं सदी के संस्मरण में, दीवाली को कार्तिक महीने में नये चंद्रमा के दिन पर हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला त्यौहार कहा है। हिंदू दर्शन में योग, वेदांत, और सामख्या विद्यालय सभी में यह विश्वास है कि इस भौतिक शरीर और मन से परे वहां कुछ है जो शुद्ध अनंत, और शाश्वत है जिसे आत्मन् या आत्मा कहा गया है। दीवाली, आध्यात्मिक अंधकार पर आंतरिक प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान, असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई का उत्सव है।

कुछ लोग दीपावली पर जलाए जाने वाले दियों की भूमिका को दूसरे नजरिए से देखते हैं। उनकी मान्यता है कि दीपावली का उत्सव, बरसाती कीट-पतंगों से मुक्ति दिलाने का आयोजन है इसलिये हर घर में तीन से चार दिन तक, अधिक-से-अधिक दीये जलाये जाते हैं। विचार, मान्यताएँ तथा लोक गाथाएँ अनेक हो सकती हैं पर यह निर्विवाद है कि हर साल दीपों का त्यौहार पूरी श्रद्धा तथा धूमधाम से मनाया जाता है। मानवीय प्रवृत्ति अदभुत है। उसने, हर दिन कुछ नया और बेहतर करने की दृष्टि से दीपावली उत्सव को भव्यता से जोड़ा। इस क्रम में सबसे पहले दीपों की संख्या बढ़ी होगी। कालान्तर में जब बारूद की खोज हुई तो मानवीय प्रज्ञा ने दीपोत्सव में आतिशबाजी को जोड़ा। रसायनशास्त्र ने आतिशबाजी में मनभावन रंग भरे और उसे आवाज दी। पटाखे बनना प्रारम्भ हुआ और उनमें विविधता आई। विविधता से आकर्षण उपजा। उसका उपयोग, समृद्धि दर्शाने का जरिया बना। मौजूदा बाजार उनसे पटा पड़ा है। दूसरे देश, पटाखों के निर्माण में आर्थिक समृद्धि और रोज़गार के अवसर देख रहे हैं। पटाखों की लोकप्रियता और सामाजिक स्वीकार्यता ने उन्हें विवाह समारोहों और ख़ुशियों के इज़हार का प्रभावशाली जरिया बना दिया है। पटाखे जलाते समय यह जरूर ध्यान रहे कि प्रकृति की शान्ति और वातावरण की शुद्धता में कोई क्षति न हो। दीपावली आज केवल भारत के ही नहीं बल्कि समूचे एशिया और उससे भी इतर और व्यापक योरप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका आदि महाद्वीपो के सैकड़ो देशो में इसी उत्साह और श्रद्धा से मनाया जाने लगा है। दीपावली को विशेष रूप से हिंदू, जैन और सिख समुदाय के साथ विशेष रूप से दुनिया भर में मनाया जाता है। ये, श्रीलंका, पाकिस्तान, म्यांमार, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, फिजी, मॉरीशस, केन्या, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगो, नीदरलैंड, कनाडा, ब्रिटेन शामिल संयुक्त अरब अमीरात, और संयुक्त राज्य अमेरिका। भारतीय संस्कृति की समझ और भारतीय मूल के लोगों के वैश्विक प्रवास के कारण दीवाली मानाने वाले देशों की संख्या तेजीसे बढ़ रही है।

आलेख

तुलसी विवाह

सरिता यादव

"एक अन्य विष्णु जी को यह शाप दिया था कि तुमने मेरा सतीत्व भंग किया है। अतः तुम पत्थर के बनोगे। विष्णु बोले, 'हे वृंदा! यह तुम्हारे सतीत्व का ही फल है कि तुम तुलसी बनकर मेरे साथ ही रहोगी। जो मनुष्य तुम्हारे साथ मेरा विवाह करेगा, वह परम धाम को प्राप्त होगा।' बिना तुलसी दल के शालिग्राम या विष्णु जी की पूजा अधूरी मानी जाती है। शालिग्राम और तुलसी का विवाह भगवान विष्णु और महालक्ष्मी के विवाह का प्रतीकात्मक विवाह है।"

तुलसी विवाह कार्तिक माह की देवोत्थान एकादशी के दिन मनाया जाने वाला विशुद्ध मांगलिक और आध्यात्मिक प्रसंग है। सनातन मान्यता के अनुसार इस तिथि पर भगवान विaष्णु के साथ तुलसी का विवाह होता है, क्योंकि इस दिन भगवान विष्णु चार महीने तक सोने के बाद जागते हैं। भगवान विष्णु को तुलसी बेहद प्रिय हैं। तुलसी का एक नाम वृंदा भी है। देवता जब जागते हैं, तो सबसे पहली प्रार्थना हरिवल्लभा तुलसी की ही सुनते हैं। इसीलिए तुलसी विवाह को देव जागरण के पवित्र मुहूर्त के स्वागत का आयोजन माना जाता है। तुलसी विवाह का सीधा अर्थ है, तुलसी के माध्यम से भगवान का आवाहन।

कार्तिक, शुक्ल पक्ष, एकादशी को तुलसी पूजन का उत्सव मनाया जाता है। वैसे तो तुलसी विवाह के लिए कार्तिक, शुक्ल पक्ष, नवमी की तिथि ठीक है, परन्तु कुछ लोग एकादशी से पूर्णिमा तक तुलसी पूजन कर पाँचवें दिन तुलसी विवाह करते हैं। आयोजन बिल्कुल वैसा ही होता है, जैसे हिन्दू रीति-रिवाज से सामान्य वर-वधु का विवाह किया जाता है।

धार्मिक मान्यता

मंडप, वर पूजा, कन्यादान, हवन और फिर प्रीतिभोज, सब कुछ पारम्परिक रीति-रिवाजों के साथ निभाया जाता है। इस विवाह में शालिग्राम वर और तुलसी कन्या की भूमिका में होती है। यह सारा आयोजन यजमान सपत्नीक मिलकर करते हैं। इस दिन तुलसी के पौधे को यानी लड़की को लाल चुनरी-ओढ़नी ओढ़ाई जाती है। तुलसी विवाह में सोलह श्रृंगार के सभी सामान चढ़ावे के लिए रखे जाते हैं। शालिग्राम को दोनों हाथों में लेकर यजमान लड़के के रूप में यानी भगवान विष्णु के रूप में और यजमान की पत्नी तुलसी के पौधे को दोनों हाथों में लेकर अग्नि के फेरे लेते हैं। विवाह के पश्चात् प्रीतिभोज का आयोजन किया जाता है। कार्तिक मास में स्नान करने वाले स्त्रियाँ भी कार्तिक शुक्ल एकादशी को शालिग्राम और तुलसी का विवाह रचाती है। समस्त विधि विधान पूर्वक गाजे बाजे के साथ एक सुन्दर मण्डप के नीचे यह कार्य सम्पन्न होता है विवाह के स्त्रियाँ गीत तथा भजन गाती है।

मगन भई तुलसी राम गुन गाइके मगन भई तुलसी।
सब कोऊ चली डोली पालकी रथ जुडवाये के।।
साधु चले पाँय पैया, चीटी सो बचाई के।
मगन भई तुलसी राम गुन गाइके।।

तुलसी विवाह कथा

प्राचीन काल में जालंधर नामक राक्षस ने चारों तरफ़ बड़ा उत्पात मचा रखा था। वह बड़ा वीर तथा पराक्रमी था। उसकी वीरता का रहस्य था, उसकी पत्नी वृंदा का पतिव्रता धर्म। उसी के प्रभाव से वह सर्वजंयी बना हुआ था। जालंधर के उपद्रवों से परेशान देवगण भगवान विष्णु के पास गये तथा रक्षा की गुहार लगाई। उनकी प्रार्थना सुनकर भगवान विष्णु ने वृंदा का पतिव्रता धर्म भंग करने का निश्चय किया। उधर, उसका पति जालंधर, जो देवताओं से युद्ध कर रहा था, वृंदा का सतीत्व नष्ट होते ही मारा गया। जब वृंदा को इस बात का पता लगा तो क्रोधित होकर उसने भगवान विष्णु को शाप दे दिया, 'जिस प्रकार तुमने छल से मुझे पति वियोग दिया है, उसी प्रकार तुम भी अपनी स्त्री का छलपूर्वक हरण होने पर स्त्री वियोग सहने के लिए मृत्यु लोक में जन्म लोगे।' यह कहकर वृंदा अपने पति के साथ सती हो गई। जिस जगह वह सती हुई वहाँ तुलसी का पौधा उत्पन्न हुआ।

एक अन्य प्रसंग के अनुसार वृंदा ने विष्णु जी को यह शाप दिया था कि तुमने मेरा सतीत्व भंग किया है। अतः तुम पत्थर के बनोगे। विष्णु बोले, 'हे वृंदा ! यह तुम्हारे सतीत्व का ही फल है कि तुम तुलसी बनकर मेरे साथ ही रहोगी। जो मनुष्य तुम्हारे साथ मेरा विवाह करेगा, वह परम धाम को प्राप्त होगा।' बिना तुलसी दल के शालिग्राम या विष्णु जी की पूजा अधूरी मानी जाती है। शालिग्राम और तुलसी का विवाह भगवान विष्णु और महालक्ष्मी के विवाह का प्रतीकात्मक विवाह है।

जिस घर में तुलसी होती हैं, वहाँ यम के दूत भी असमय नहीं जा सकते।

मृत्यु के समय जिसके प्राण मंजरी रहित तुलसी और गंगा जल मुख में रखकर निकल जाते हैं, वह पापों से मुक्त होकर वैकुंठ धाम को प्राप्त होता है। जो मनुष्य तुलसी व आंवलों की छाया में अपने पितरों का श्राद्ध करता है, उसके पितर मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं।

साहित्य में रामकथा रामलीला और बुन्देलखण्ड

प्रो मुन्ना तिवारी

"बुंदेलखंड के कोंच की रामलीला 172 साल पुरानी है और लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में इसका नाम भी दर्ज है। इस रामलीला की खासियत यह है कि इसमें रामलीला के पात्रों का मंचन करने वाले सारे युवा होते हैं और वह सारे ब्राह्मण कुल से होते हैं। राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का पात्र निभाने वाले 10 से 15 साल के किशोर होते है। कोंच की रामलीला में पारसी रंगमंच शैली बखूबी नजर आती है।"

अध्यक्ष, हिंदी विभाग एवं अधिष्ठाता कला संकाय, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी

राम भारत के चेतना पुरुष हैं,मर्यादा पुरुष है,आधार पुरुष हैं। इस रूप को गढ़ने में, गुनने में,बुंदेलखंड के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। बुंदेलखंड में महर्षि वाल्मीकि तथा गोस्वामी तुलसीदास के जन्म को लेकर प्रश्न उठा सकते हैं किंतु उनकी कर्मस्थली निर्विवाद चित्रकूट है। रामकथा बुंदेलखंड के रग रग में व्याप्त है। लोक से लेकर शास्त्र तक राम कथा बुंदेलखंड ने उनके चरित्र निर्माण,लोक बोध, जन बोध रचाने में कहीं पीछे नहीं रही है। रीतिकालीन केशव दास की रामचंद्रिका के बाद राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तक यह साधना अनवरत चली है।

आज भी डॉ रविन्द्र शुक्ल का शत्रुघ्न चरित सहित बुंदेली भाषा में अनगिनत कविताओं को देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति और साहित्य का आधार हैं रामायण-रामचरितमानस ग्रंथ और रामलीला। प्रत्येक भारतीय की चेतना में बसा है रामलीला के रूप में राम का जीवन संदेश।मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, कर्तव्यनिष्ठ लक्ष्मण, दुख-सुख में एक समान रहने वाली सीता, कभी विचलित नहीं होने वाली उर्मिला, सर्वोत्तम सेवक हनुमान, त्यागमूर्ति भरत और महाबली रावण और कुंभकर्ण।ये सभी रामलीला के पात्र कुछ न कुछ सीख दे रहे हैं, इसलिए हिंदी साहित्य में भी रामलीला का उल्लेख मिलता है। रामलीला कहीं आस्था की प्रतीक है तो कहीं लोक सीख की। राम का जीवन प्रेमचंद की कहानी 'रामलीला' को लीजिए जहां रामलीला के बहाने इस कहानी में

लेखक ने तात्कालिक सामाजिक परिवेश पर तंज कसा है। इसमें व्यक्ति परोपकार पर खर्च नहीं करना चाहता है। वहीं दूसरी ओर, झूठी शान-शौकत और दिखावे के लिए वह अपना धन लुटा देना चाहता है।

"रवि हुआ अस्त; ज्योति के पत्र पर लिखा
अमर रह गया राम-रावण का अपराजेय समर"

ये पंक्तियां महान कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के राम के जीवन की एक खास लीला पर आधारित काव्य 'राम की शक्तिपूजा' से ली गयी है। यह काव्य उनके कविता संग्रह 'अनामिका' के प्रथम संस्करण में मौजूद है। निराला ने 'राम की शक्ति पूजा' में राम को अंतर्द्वंदों से जूझकर शक्ति अर्जित करते हुए दिखाया है। इस काव्य में कवि ने अलौकिक जगत के निवासी राम को लौकिक जगत में स्थापित कर दिया है। राम भावबोध से जुड़ जाते हैं। 'राम की शक्ति पूजा ' में कवि ने राम को रावण जय-पराजय की आशंका को दूर कर शक्ति अर्जित करते हुए दिखाया है। राम की जीवनलीला पर नरेंद्र कोहली ने कई पुस्तकें लिखीं, लेकिन सबसे अधिक लोकप्रिय "रामकथा" और "दीक्षा" हुईं। "दीक्षा" उपन्यास का तो कई देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। राम की लीला पर आधारित यह किताब सर्वकालिक पुस्तक बन गयी और नरेंद्र कोहली सर्वमान्य पौराणिक आख्यानकार। "दीक्षा" पुस्तक में राम राजा रामचंद्र नहीं, बल्कि जन-जन के राम हैं। वे सामान्य इंसान की तरह स्वयंवर के धनुष तोड़ने के लिए प्रयास करते हैं, पत्नी से बिछड़ने और भाई के मरणासन्न होने पर बिलख-बिलख कर रोते भी हैं। ऐसे राम जो सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करने के लिए वन में रहते हैं, कंद-मूल खाते हैं। "दीक्षा" के राम पत्नी प्रिय हैं, जो जनता की मांग पर सीता का परित्याग कर देते हैं। लेकिन सीता के वनगमन करने पर स्वयं भी राजमहल में वनवासी-सा जीवन जीते हैं। डॉ महेश विद्यालंकार ने राम के जीवन लीलाओं पर पुस्तक लिखी "मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का प्रेरक स्वरूप"। इसमें राम के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंगों को लिया गया है। राम के सत्य, न्याय, परोपकार, क्षमा, दान, सेवा, यज्ञ, धर्म पालन और गरिमामय जीवन को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक बताना चाहते हैं कि व्यक्ति जीवन से मरण तक (शव ले जाते समय राम नाम सत्य है का उच्चारण) राम नाम लेता रहता है, लेकिन उनके आदर्शों और जीवन दर्शन का अनुसरण करने की कोशिश कभी नहीं करता।

बद्री सिंह चौहान की "रामरस सुधा"

यह भगवान राम के चरित्र पर लिखी गयी रामलीला की पुस्तक है। इसकी रचना लेखक बद्री सिंह चौहान ने की है। इसमें रामलीला के प्रसंगों को रोचकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। श्री राम जन्म, श्री राम वनगमन, सीता हरण, राम-रावण युद्ध आदि को सरलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। साथ ही साथ, कुछ न कुछ संदेश देने की भी कोशिश की गयी है। हालांकि उत्तर प्रदेश में

कई रामलीला मंच इस पुस्तक को आधार बनाकर राम के जीवन को मंचित करते हैं, लेकिन अब इस किताब के संस्करण का बाजार में मिलना मुश्किल है। "रामरस सुधा" की तर्ज पर कई आध्यात्मिक गुरुओं की किताबें भी रामलीला का वर्णन करती हैं। राम का संदेश रामलीला में है मौजूद रामलीला से जुड़े पात्र सीता पर "मैं जनक नंदिनी' और उर्मिला पर 'उर्मिला' लिखा है। मैंने स्त्री मनोभावों को ध्यान में रखकर ये किताबें लिखीं। जब मैं छोटी थी, तो सुना था कि स्त्री की 'ना' भी 'हां' के समान है। यह स्त्री की त्रासदी है। सीता और उर्मिला के मनोभावों को मैंने शब्द दिया। आज भी स्त्रियों की स्थिति बहुत अधिक नहीं बदली है। पुरुष वर्ग स्त्री की त्रासदी को चाह कर भी नहीं समझ सकता है।

अगर रामलीला की बात की जाये, तो जन-जन में आज भी राम-सीता की जीवन लीलाएं जिंदा हैं। इसका बड़ा कारण गांव, कस्बे और शहर में भी रामलीला का आयोजित होना है। रामलीला ने पात्रों को जन-जन में जीवित रखा। जो कथा बाल्मीकि रामायण में नहीं है, वह संदेश के रूप में रामलीला में मौजूद है, जैसे कि लक्ष्मण का लक्ष्मण रेखा खींचना। लक्ष्मण ऐसा कर सीता की शक्ति को कम आंकने की धृष्टता नहीं कर सकते थे। कब शुरू हुआ रामलीला का मंचन।यह स्पष्ट नहीं कहा जा सकता है कि रामलीला का पहला प्रदर्शन कब हुआ था। माना जाता है कि 16वीं शताब्दी में तुलसीदास रचित रामचरितमानस का पहला मंचन हुआ था। उनके शिष्य मेघा भगत ने 1625 में रामचरितमानस पर आधारित रामलीला शुरू की थी। बुंदेलखंड के चित्रकूट में इसके पहले लोक मंचन से इंकार नहीं किया जा सकता। 19 वीं शताब्दी में काशीराज के संरक्षण में वाराणसी के रामनगर में शुरू हुई रामलीला यूनेस्को के विश्व धरोहरों की सूची में भी शामिल है। देश में तमाम जगहों पर रामलीला का मंचन हो रहा है।

बुंदेलखंड के कोच की रामलीला 172 साल पुरानी है और लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में इसका नाम भी दर्ज है। इस रामलीला की खासियत यह है कि इसमें रामलीला के पात्रों का मंचन करने वाले सारे युवा होते हैं और वह सारे ब्राह्मण कुल से होते हैं। राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का पात्र निभाने वाले 10 से 15 साल के किशोर होते है। कोंच की रामलीला में पारसी रंगमंच शैली बखूबी नजर आती है। रामलीला का अंतिम दिन बेहद महत्वपूर्ण होता है, जिसमें रावण का वध होता है। मैदानों में रावण के परिवार का अंत किया जाता है और यह सब लाइव टेलीकास्ट जैसा होता है।

दरअसल, जालौन के कोंच में होने वाली ऐतिहासिक अनुष्ठानी रामलीला का विधि-विधान के साथ शुरूआत हो गई थी। यह इस मनमोहक रामलीला में अभिनय करने वाले पात्र किसी भी प्रकार का कोई भी पारिश्रमिक नहीं लेते हैं और सारे अभिनय

बिल्कुल जीवंत-रूप में स्थानीय लोग ही निभाते हैं। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न 10 से 15 वर्ष के बीच के ही ब्राह्मण बालकों को बनाया जाता है। इनकी पूरे नगर में यात्रा के दौरान भक्ति भाव से पूजा अर्चना भी की जाती है। ऐसा ही 1905 में शुरू हुआ रादेवल चोरी गांव में रामलीला की यह परंपरा ब्रिटिश काल में सन 1950 में शुरू हुई थी। जब स्थानीय मालगुजार छोटेलाल तिवारी द्वारा रामलीला के मंचन का फैसला लिया गया था। तय किया गया था कि, गांव के लोग ही रामलीला के पात्रों का अभिनय करेंगे। गांव में ही रामलीला का मंचन किया जाएगा। मालगुजार छोटेलाल तिवारी के फैसले के बाद स्थानीय युवकों और बुजुर्गों ने मिलकर पात्र तय हो जाने के बाद कई दिनों तक अभ्यास किया। सीमित संसाधनों में रामलीला के मंचन की शुरुआत की गई। बुंदेलखंड साहित्य में राम का अन्वेषक है। उनके चरित्र का गायक है। लोक मर्यादा का भाव पिरोने वाला साधक है। तुलसी का लोक मन बुंदेलखंड के लोकभूमि में रमता है,सीता से बुंदेलखंड के गांव की स्त्रियों द्वारा पूछे जाने पर कि आपके साथ चलने वाले दोनों पुरुष कौन हैं। लक्ष्मण को "राम लखन लघु देवर मोरे" कहकर राहत पा लेती हैं लेकिन राम को बताने की कला,पति का नाम लिए बिना समझा देने की लोकभूमि तुलसी को पसन्द है,जिस पर लोक चेतस मन रीझ जाता है। यही लोक भूमि है। लोकमन है।

सुनि सुन्दर बैन सुधारस-साने,
सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन दै सैन तिन्हें,
समुझाइ कछू मुसकाइ चली॥
तुलसी तेहि औसर सोहै सबै,
अवलोकति लोचन-लाहु अली।
अनुराग-तड़ाग में भानु उदै,
बिगसीं मनो मंजुल कंज-कली।

जयंती पर विशेष

स्वाधीनता संग्राम के सरदार

अखण्डता में एकता ही सपना

के. के. उपाध्याय

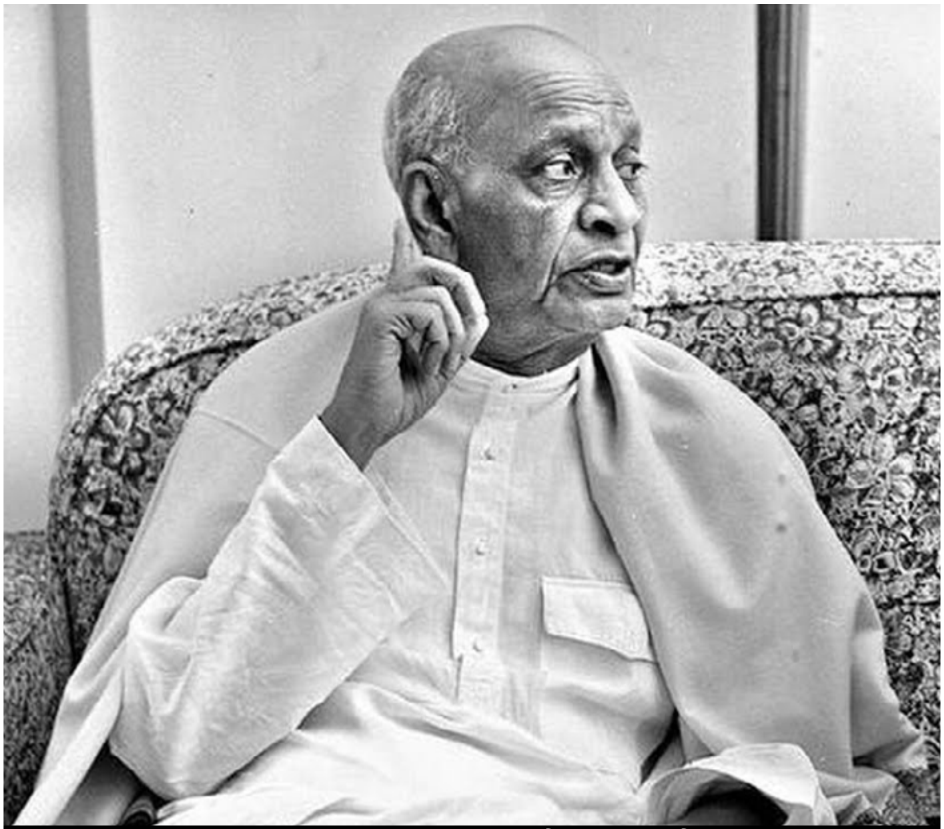

जन्म: 31 अक्टूबर 1875 निधन:15 दिसम्बर 1950

नेहरू जी की गलती से अधर में लटके जम्मू और कश्मीर को लेकर सरदार की चिंता को गुजरात की आज की जोड़ी अर्थात प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने सदा के लिए समाप्त कर उस भूभाग को भी भारत के ध्वज और संविधान के अंतर्गत स्थापित कर एक प्रकार से सरदार के प्रति श्रद्धांजलि ही दी है। सरदार पटेल हमेशा ही एकीकरण के पक्षधर रहे। वह पूरे जीवन एकता के लिए ही संघर्ष करते रहे। सरदार पटेल के उसी एकता के संदेश और चिंतन को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब प्रत्येक भारतीय को ''एक हैं तो सेफ हैं'' का मंत्र देकर विश्वगुरु भारत के निर्माण के लिए प्रयासरत हैं। सरदार पटेल की जीवन यात्रा में केवल और केवल अखंड भारत का सपना ही दिखता है।

"गुजरात की जोड़ियों ने भारत के स्वरूप को गढ़ा है। पराधीन भारत की मुक्ति से लेकर आधुनिक सशक्त भारत के निर्माण की सतत प्रक्रिया में गुजरात की जोड़ी का योगदान पहले भी विश्व ने देखा है और आज भी केवल देख नहीं रहा बल्कि ऐसी जोड़ी की शक्ति और रणनीति को अनुभव भी कर रहा है। ब्रिटिश गुलामी से त्रस्त भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में जिन भी नायकों की गाथा पर हम दृष्टि डालते हैं, वहीं गुजरात की एक अद्भुत जोड़ी दिख जाती है जिनके उल्लेख के बिना भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती।"

लेखक वरिष्ठ पत्रकार, स्तंभकार और राष्ट्रवादी चिन्तक हैं।

गुजरात की जोड़ियों ने भारत के स्वरूप को गढ़ा है। पराधीन भारत की मुक्ति से लेकर आधुनिक सशक्त भारत के निर्माण की सतत प्रक्रिया में गुजरात की जोड़ी का योगदान पहले भी विश्व ने देखा है और आज भी केवल देख नहीं रहा बल्कि ऐसी जोड़ी की शक्ति और रणनीति को अनुभव भी कर रहा है। ब्रिटिश गुलामी से त्रस्त भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में जिन भी नायकों की गाथा पर हम दृष्टि डालते हैं, वहीं गुजरात की एक अद्भुत जोड़ी दिख जाती है जिनके उल्लेख के बिना भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अप्रतिम नायक मोहनदास करमचंद गांधी की कोई यात्रा सरदार वल्लभ भाई पटेल के बिना पूरी नहीं होती। इतिहास के गूढ़ तथ्य प्रमाणित करते हैं कि गांधी जी की शक्ति के एकमात्र संस्थान सरदार पटेल ही थे।सरदार की शक्ति के बिना गांधी जी कई बार निर्जीव दिखते हैं, जैसा प्रमाण कहते हैं। जवाहर लाल नेहरू से कई मुद्दों पर असहमत होकर भी सरदार भारत भले के लिए आगे आते हैं। स्वतंत्रता पूर्व 2 सितंबर 1946 को नेहरू के नेतृत्व में बनी भारत सरकार में अहम जिम्मेदारी संभालने वाले सरदार की संकल्प शक्ति और दूरदृष्टि अद्भुत रही जिसके कारण 562 रियासतों वाले भूमि को एक राष्ट्र की संज्ञा में आज हम देख रहे हैं। नेहरू जी की गलती से अधर में लटके जम्मू और कश्मीर को लेकर सरदार की चिंता को गुजरात की आज की जोड़ी अर्थात प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की जोड़ी ने सदा के लिए समाप्त कर उस भूभाग को भी भारत के ध्वज और संविधान के अंतर्गत स्थापित कर एक प्रकार से सरदार के प्रति श्रद्धांजलि ही दी है। सरदार पटेल हमेशा ही एकीकरण के पक्षधर रहे। वह पूरे जीवन एकता के लिए ही संघर्ष करते रहे। सरदार पटेल के उसी एकता के संदेश और चिंतन को आगे बढ़ाते हुए प्रधामंत्री नरेंद्र मोदी अब प्रत्येक भारतीय को एक हैं तो सेफ हैं का मंत्र देकर विश्वगुरु भारत के निर्माण के लिए प्रयासरत हैं। सरदार पटेल की जीवन यात्रा में केवल और केवल अखंड भारत का सपना ही दिखता है। अंग्रेजों की लगाई हुई हिंदू समुदाय में जाति की आग और अंग्रेजों के ही षडयंत्र से मजबूत किए गए मोहम्मद अली जिन्ना की लीगी राजनीति से चिंतित और उससे लगातार लड़ते हुए सरदार पटेल ने उन विषम परिस्थितियों में किस तरह से 562 टुकड़े वाले भारत को एक किया होगा, आज इसकी कल्पना भी संभव नहीं है। पहले भारत के विभाजन के बिल्कुल विरुद्ध और प्रत्येक मुसलमान को राष्ट्रवाद से जोड़ने की कल्पना करने वाले सरदार को भारत में लगाई गई जातिवाद की आग से भी लड़ने को विवश होना पड़ा। उस समय के परिवेश में जमीन से जुड़ा एक ऐसा व्यक्ति जिसके एक आवाहन पर तीन लाख किसानों ने एक विशाल आंदोलन को शक्ति देकर अंग्रेजों को घुटने टेकने को विवश कर दिया हो, तो वह कोई सामान्य तो नहीं ही होगा। सरदार पटेल का जन्म नडियाद, गुजरात में एक लेवा पटेल (पाटीदार) जाति में हुआ था। वे झवेरभाई पटेल एवं लाडबा देवी की चौथी संतान थे। सोमाभाई, नरसीभाई और विट्टलभाई उनके अग्रज थे। उनकी शिक्षा मुख्यतः स्वाध्याय से ही हुई। लन्दन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में सरदार पटेल का सबसे पहला और बड़ा योगदान 1918 में खेडा संघर्ष में हुआ। गुजरात का खेडा खण्ड (डिविजन) उन दिनों भयंकर सूखे की चपेट में था। किसानों ने अंग्रेज सरकार से भारी कर में छूट की मांग की। जब यह स्वीकार नहीं किया गया तो सरदार पटेल, गांधीजी एवं अन्य लोगों ने किसानों का नेतृत्व किया और उन्हे कर न देने के लिये प्रेरित किया। अन्त में सरकार झुकी और उस वर्ष करों में राहत दी गयी। यह सरदार पटेल की पहली सफलता थी।

बारडोली सत्याग्रह

बारडोली सत्याग्रह, भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान वर्ष 1928 में गुजरात में हुआ एक प्रमुख किसान आंदोलन था, जिसका नेतृत्व वल्लभभाई पटेल ने किया । उस समय प्रांतीय सरकार ने किसानों के लगान में तीस प्रतिशत तक की वृद्धि कर दी थी। पटेल ने इस लगान वृद्धि का जमकर विरोध किया। सरकार ने इस सत्याग्रह आंदोलन को

कुचलने के लिए कठोर कदम उठाए, पर अंततः विवश होकर उसे किसानों की मांगों को मानना पड़ा। एक न्यायिक अधिकारी ब्लूमफील्ड और एक राजस्व अधिकारी मैक्सवेल ने संपूर्ण मामलों की जांच कर 22 प्रतिशत लगान वृद्धि को गलत ठहराते हुए इसे घटाकर 6.03 प्रतिशत कर दिया। इस सत्याग्रह आंदोलन के सफल होने के बाद वहां की महिलाओं ने वल्लभभाई पटेल को 'सरदार' की उपाधि प्रदान की। किसान संघर्ष एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के अंर्तसबंधों की व्याख्या बारदोली किसान संघर्ष के संदर्भ में करते हुए गांधीजी ने कहा कि इस तरह का हर संघर्ष, हर कोशिश हमें स्वराज के करीब पहुंचा रही है और हम सबको स्वराज की मंजिल तक पहुंचाने में ये संघर्ष सीधे स्वराज के लिए संघर्ष से कहीं ज्यादा सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

यह संयोग ही है कि सरदार के गुजरात की ही जोड़ी ने 5 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री मोदीजी और गृहमंत्री अमित शाह जी के प्रयास से कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाला अनुच्छेद 370 और 35(अ) समाप्त हुआ। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बन गया और सरदार पटेल का अखण्ड भारत बनाने का स्वप्न साकार हुआ। 31 अक्टूबर 2019 को जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख के रूप में दो केन्द्र शासित प्रदेश अस्तित्व में आये। अब जम्मू-कश्मीर केन्द्र के अधीन रहेगा और भारत के सभी कानून वहाँ लागू होंगे। पटेल जी को कृतज्ञ राष्ट्र की यह सच्ची श्रद्धांजलि है।

यद्यपि अधिकांश प्रान्तीय कांग्रेस समितियाँ पटेल के पक्ष में थीं, गांधी जी की इच्छा का आदर करते हुए पटेल जी ने प्रधानमंत्री पद की दौड से अपने को दूर रखा और इसके लिये नेहरू का समर्थन किया। उन्हे उपप्रधान मंत्री एवं गृह मंत्री का कार्य सौंपा गया। किन्तु इसके बाद भी नेहरू और पटेल के सम्बन्ध तनावपूर्ण ही रहे। इसके चलते कई अवसरों पर दोनो ने ही अपने पद का त्याग करने की धमकी दे दी थी। गृह मंत्री के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता देसी रियासतों (राज्यों) को भारत में मिलाना था। इसको उन्होने बिना कोई खून बहाये सम्पादित कर दिखाया। केवल हैदराबाद स्टेट के आपरेशन पोलो के लिये उनको सेना भेजनी पडी। भारत के एकीकरण में उनके महान योगदान के लिये उन्हे भारत का लौह पुरूष के रूप में जाना जाता है। सन 1950 में उनका देहान्त हो गया। इसके बाद नेहरू का कांग्रेस के अन्दर बहुत कम विरोध शेष रहा।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत के सर्जक

स्वतंत्रता के समय भारत में 562 देसी रियासतें थीं। इनका क्षेत्रफल भारत का 40 प्रतिशत था। सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल में) ही वीपी मेनन के साथ मिलकर कई देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था। पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हे स्वायत्तता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणामस्वरूप तीन को छोडकर शेष सभी राजवाडों ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। केवल जम्मू एवं कश्मीर, जूनागढ तथा हैदराबाद स्टेट के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा। जूनागढ सौराष्ट्र के पास एक छोटी रियासत थी और चारों ओर से भारतीय भूमि से घिरी थी। वह पाकिस्तान के समीप नहीं थी। वहाँ के नवाब ने 15 अगस्त 1947 को पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी। राज्य की सर्वाधिक जनता हिंदू थी और भारत विलय चाहती थी। नवाब के विरुद्ध बहुत विरोध हुआ तो भारतीय सेना जूनागढ़ में प्रवेश कर गयी। नवाब भागकर पाकिस्तान चला गया और 9 नवम्बर 1947 को जूनागढ भी भारत में मिल गया। फरवरी 1948 में वहाँ जनमत संग्रह कराया गया, जो भारत में विलय के पक्ष में रहा। हैदराबाद भारत की सबसे बड़ी रियासत थी, जो चारों ओर से भारतीय भूमि से घिरी थी। वहाँ के निजाम ने पाकिस्तान के प्रोत्साहन से स्वतंत्र राज्य का दावा किया और अपनी सेना बढ़ाने लगा। वह ढेर सारे हथियार आयात करता रहा। पटेल चिंतित हो उठे। अन्ततः भारतीय सेना 13 सितंबर 1948 को हैदराबाद में प्रवेश कर गयी। तीन दिनों के बाद निजाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और नवंबर 1948 में भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। नेहरू ने कश्मीर को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह समस्या एक

अन्तरराष्ट्रीय समस्या है। कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्रसंघ में ले गये और अलगाववादी ताकतों के कारण कश्मीर की समस्या दिनोदिन बढ़ती गयी। यह संयोग ही है कि सरदार के गुजरात की ही जोड़ी ने 5 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री मोदीजी और गृहमंत्री अमित शाह जी के प्रयास से कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाला अनुच्छेद 370 और 35(अ) समाप्त हुआ। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बन गया और सरदार पटेल का अखण्ड भारत बनाने का स्वप्न साकार हुआ। 31 अक्टूबर 2019 को जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख के रूप में दो केन्द्र शासित प्रेदश अस्तित्व में आये। अब जम्मू-कश्मीर केन्द्र के अधीन रहेगा और भारत के सभी कानून वहाँ लागू होंगे। पटेल जी को कृतज्ञ राष्ट्र की यह सच्ची श्रद्धांजलि है।

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू व प्रथम उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल में आकाश-पाताल का अंतर था। यद्यपि दोनों ने इंग्लैण्ड जाकर बैरिस्टरी की डिग्री प्राप्त की थी परंतु सरदार पटेल वकालत में पं॰ नेहरू से बहुत आगे थे तथा उन्होंने सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के विद्यार्थियों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। नेहरू प्रायः सोचते रहते थे, सरदार पटेल उसे कर डालते थे। नेहरू शास्त्रों के ज्ञाता थे, पटेल शस्त्रों के पुजारी थे। पटेल ने भी ऊंची शिक्षा पाई थी परंतु उनमें किंचित भी अहंकार नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे, "मैंने कला या विज्ञान के विशाल गगन में ऊंची उड़ानें नहीं भरीं। मेरा विकास कच्ची झोपड़ियों में गरीब किसान के खेतों की भूमि और शहरों के गंदे मकानों में हुआ है।" पं॰ नेहरू को गांव की गंदगी, तथा जीवन से चिढ़ थी। पं॰ नेहरू अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के इच्छुक थे तथा समाजवादी प्रधानमंत्री बनना चाहते थे।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात सरदार पटेल उप प्रधानमंत्री के साथ प्रथम गृह, सूचना तथा रियासत विभाग के मंत्री भी थे। सरदार पटेल की महानतम देन थी 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण करना। विश्व के इतिहास में एक भी व्यक्ति ऐसा न हुआ जिसने इतनी बड़ी संख्या में राज्यों का एकीकरण करने का साहस किया हो। 5 जुलाई 1947 को एक रियासत विभाग की स्थापना की गई थी। एक बार उन्होंने सुना कि बस्तर की रियासत में कच्चे सोने का बड़ा भारी क्षेत्र है और इस भूमि को दीर्घकालिक पट्टे पर हैदराबाद की निजाम सरकार खरीदना चाहती है। उसी दिन वे परेशान हो उठे। उन्होंने अपना एक थैला उठाया, वी.पी. मेनन को साथ लिया और चल पड़े। वे उड़ीसा पहुंचे, वहां के 23 राजाओं से कहा, "कुएं के मेढक मत बनो, महासागर में आ जाओ।" उड़ीसा के लोगों की सदियों पुरानी इच्छा कुछ ही घंटों में पूरी हो गई। फिर नागपुर पहुंचे, यहां के 38 राजाओं से मिले। इन्हें सैल्यूट स्टेट कहा जाता था, यानी जब कोई इनसे मिलने जाता तो तोप छोड़कर सलामी दी जाती थी। पटेल ने इन राज्यों की बादशाहत को आखिरी सलामी दी। इसी तरह वे काठियावाड़ पहुंचे। वहां 250 रियासतें थी। कुछ तो केवल 20-20 गांव की रियासतें थीं। सबका एकीकरण किया। एक शाम मुम्बई पहुंचे। आसपास के राजाओं से बातचीत की और उनकी राजसत्ता अपने थैले में डालकर चल दिए। पटेल पंजाब गये। पटियाला का खजाना देखा तो खाली था। फरीदकोट के राजा ने कुछ आनाकानी की। सरदार पटेल ने फरीदकोट के नक्शे पर अपनी लाल पैंसिल घुमाते हुए केवल इतना पूछा कि "क्या मर्जी है?" राजा कांप उठा। आखिर 15 अगस्त 1947 तक केवल तीन रियासतें-कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद छोड़कर उस लौह पुरुष ने सभी रियासतों को भारत में मिला दिया। इन तीन रियासतों में भी जूनागढ़ को 9 नवम्बर 1947 को मिला लिया गया तथा जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया। 13 नवम्बर को सरदार पटेल ने सोमनाथ के भग्न मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया, जो पंडित नेहरू के तीव्र विरोध के पश्चात भी बना। 1948 में हैदराबाद भी केवल 4 दिन की पुलिस कार्रवाई द्वारा मिला लिया गया। न कोई बम चला, न कोई क्रांति हुई, जैसा कि डराया जा रहा था। जहां तक कश्मीर रियासत का प्रश्न है इसे पंडित नेहरू ने स्वयं अपने अधिकार में लिया हुआ था, परंतु यह सत्य है कि सरदार पटेल कश्मीर में जनमत संग्रह तथा कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने पर बेहद क्षुब्ध थे। निःसंदेह सरदार पटेल द्वारा यह 562 रियासतों का एकीकरण विश्व इतिहास का एक आश्चर्य था। भारत की यह रक्तहीन क्रांति थी। महात्मा गांधी ने सरदार पटेल को इन रियासतों के बारे में लिखा था, रियासतों की समस्या इतनी जटिल थी जिसे केवल तुम ही हल कर सकते थे। यद्यपि विदेश विभाग पं॰ नेहरू का कार्यक्षेत्र था, परन्तु कई बार उप प्रधानमंत्री होने के नाते कैबिनेट की विदेश विभाग समिति में उनका जाना होता था। उनकी दूरदर्शिता का लाभ यदि उस समय लिया जाता तो अनेक वर्तमान समस्याओं का जन्म न होता। 1950 में पंडित नेहरू को लिखे एक पत्र में पटेल ने चीन तथा उसकी तिब्बत के प्रति नीति से सावधान किया था और चीन का रवैया कपटपूर्ण तथा विश्वासघाती बतलाया था। अपने पत्र में चीन को अपना दुश्मन, उसके व्यवहार को अभद्रतापूर्ण और चीन के पत्रों की भाषा को किसी दोस्त की नहीं, भावी शत्रु की भाषा कहा था। उन्होंने यह भी लिखा था कि तिब्बत पर चीन का कब्जा नई समस्याओं को जन्म देगा। 1950 में नेपाल के संदर्भ में लिखे पत्रों से भी पं॰ नेहरू सहमत न थे। 1950 में ही गोवा की स्वतंत्रता के संबंध में चली दो घंटे की कैबिनेट बैठक में लम्बी वार्ता सुनने के पश्चात सरदार पटेल ने केवल इतना कहा "क्या हम गोवा जाएंगे, केवल दो घंटे की बात है।" नेहरू इससे बड़े नाराज हुए थे। यदि पटेल की बात मानी गई होती तो 1961 तक गोवा की स्वतंत्रता की प्रतीक्षा न करनी पड़ती।

गृहमंत्री के रूप में सरदार जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय नागरिक सेवाओं (आई.सी.एस.) का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय

प्रशासनिक सेवाएं (आई.ए.एस.) बनाया। अंग्रेजों की सेवा करने वालों में विश्वास भरकर उन्हें राजभक्ति से देशभक्ति की ओर मोड़ा। यदि सरदार पटेल कुछ वर्ष जीवित रहते तो संभवतः नौकरशाही का पूर्ण कायाकल्प हो जाता। सरदार पटेल जहां पाकिस्तान की छद्म व चालाकी पूर्ण चालों से सतर्क थे वहीं देश के विघटनकारी तत्वों से भी सावधान करते थे। विशेषकर वे भारत में मुस्लिम लीग तथा कम्युनिस्टों की विभेदकारी तथा रूस के प्रति उनकी भक्ति से सजग थे। अनेक विद्वानों का कथन है कि सरदार पटेल बिस्मार्क की तरह थे। लेकिन लंदन के टाइम्स ने लिखा था "बिस्मार्क की सफलताएं पटेल के सामने महत्वहीन रह जाती हैं। यदि पटेल के कहने पर चलते तो कश्मीर, चीन, तिब्बत व नेपाल के हालात आज जैसे न होते। पटेल सही मायनों में मनु के शासन की कल्पना थे। उनमें कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरदर्शिता थी। वे केवल सरदार ही नहीं बल्कि भारतीयों के हृदय के सरदार थे।

नेहरू, जिन्ना और भारत विभाजन

सरदार पटेल के लिए जिन्ना की लीगी नीतियां और कट्टर सोच हमेशा दुख देने वाली रहीं। भारत विभाजन से पहले से ही उनकी सोच थी कि मुसलमान भारतीय होकर सोचें और कार्य करें लेकिन अंतरिम सरकार से लेकर स्वतंत्रता के बाद भी सरकार में शामिल मुसलमानों में उन्हें राष्ट्रीय भावना नहीं मिली। नेता से लेकर मुसलमान अधिकारी तक जिन्ना की ही सोच से काम कर रहे थे। सरदार बार बार कहते थे कि जिन्ना के प्रभाव में तुम अलग तो हो रहे हो लेकिन बाद में तुम्हे अखंड भारत में ही रहना होगा। भारत विभाजन के आधार , मंथन और अंग्रेजी साजिशों में जिन्ना के शामिल होने और लगातार अलगाववाद को बढ़ावा देने से चिंतित सरदार ने 17 जनवरी 1930 से लेकर 19 दिसंबर 1947 तक 116 पत्र अलग अलग समय पर अलग अलग लोगों को लिखा जिनमें उनकी गंभीर चिंता देखी जा सकती है। आजादी के बाद तक उनकी यह चिंता उसी रूप में बढ़ती रही। लखनऊ में 7 जनवरी 1948 को एक आयोजन में एक लाख लोगों की सभा में उन्होंने कहा कि हम लोग शांति से रहना चाहते हैं। पाकिस्तान को भी शांति से रहना चाहिए परन्तु पाकिस्तान को युद्ध और संघर्ष के लिए खुजली हो रही है तो उसे कश्मीर में छिपे रूप से युद्ध न कर के खुले में सामने आना चाहिए। पाकिस्तान अपने झूठों और कपटताओं से बर्बाद हो जायेगा।हम शक्तिशाली और साधन संपन्न हैं किंतु पाकिस्तान की बर्बादी के लिए हमें हमारी सेना की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। उस समय पाकिस्तान के विदेशमंत्री जफरुल्ला खान के वक्तव्य का उल्लेख कर सरदार ने कहा कि हम लोग उनके कुकृत्यों को पंजाब में बर्दाश्त कर रहे हैं लेकिन वे समझ नहीं रहे हैं कि यदि वे ऐसा करते रहे तो फिर हम लाहौर और सियालकोट तक पहुंच जाएंगे। उन्होंने कहा कि लखनऊ में 70 हजार मुसलमान एकत्र हुए लेकिन इनमें से किसी ने पाकिस्तान की निंदा नहीं की । ऐसे में यदि मुसलमानों की भारत भक्ति पर संशय होता है तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए। मुसलमानों को दो घोड़ों की सवारी नहीं करनी चाहिए। जो लोग देशभक्त नहीं हैं, वे भारत में नहीं रह सकते। सरदार पटेल के ऐसे अनेक भाषण और पत्र हैं जिनसे देश के युवा परिचित नहीं हैं क्योंकि आजादी के बाद भारत में सरदार का वैसा मूल्यांकन हुआ ही नहीं। वर्ष 2014 के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और गृहमंत्री अमित शाह की रणनीति से सरदार पटेल के सपनों के भारत का निर्माण हो रहा है और नई पीढ़ी अपने इस महान योद्धा से परिचित हो रही है। स्टेच्यू ऑफ यूनिटी इसका सबसे बड़ा प्रमाण है।

300वीं जयंती वर्ष पर विशेष

सनातन वैदिक भारत की संरक्षक मां अहिल्याबाई

डॉ. अर्चना तिवारी

वह केवल एक रानी नही थीं। केवल एक योद्धा नही थीं। केवल एक प्रशासक नही थीं। केवल एक संवेदनशील नारी नही थीं। केवल एक सहृदय मानवीय प्रतिमूर्ति नही थीं। केवल एक बेटी, एक बहू, एक मां और एक सामान्य भक्त ही भर नही थीं, बल्कि यह सब होने के साथ ही सनातन वैदिक भारत की संरक्षक के रूप में ही उन्हें नमन करने का मन होता है। माँ अहिल्याबाई भले ही मालवा जैसे राज्य की अधिपति रहीं लेकिन वह भारत की सनातन संस्कृति में हमारी दैवीय शक्तियों के समकक्ष ही प्रतीत होती है।

कल्पना कीजिये कि आज से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व जब भारत के अधिकांश हिस्सों पर आक्रांताओं का कहर बरस रहा था, जब अधिकांश स्थापित हिन्दू वैदिक सनातन संस्कृति के संरक्षक मंदिरों को लूट कर मुस्लिम आक्रांताओं ने खंडहर बना दिया था तब शिवकृपा से मालवा में अवतरित इस देवी ने ही सभी का उद्धार किया।

हमारी इसी माता के साहस और संकल्प के परिणामस्वरूप भारत के सभी शिवालय सुरक्षित हैं जिनके पुनरुद्धार का कार्य अब भारत सरकार के संकल्प से हो रहा है। सोमनाथ, काशी अथवा उज्जैन या कि बद्री केदार अथवा गया जैसे तीर्थ जिस तरह से वर्तमान भारतीय नेतृत्व के संरक्षण में सुसज्जित हो रहे हैं, यह प्रयास अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में 300 साल पहले अहिल्याबाई ने किया था। अत्यंत छोटे राज्य के कर में से सैन्य खर्च के बाद बचे धन से अहिल्याबाई ने सनातन भारत को एक आकार दिया था।

> महारानी अहिल्याबाई होलकर भारत के मालवा साम्राज्य की मराठा होलकर महारानी थी. अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर के छौंड़ी ग्राम में हुआ। उनके पिता मंकोजी राव शिंदे, अपने गाव के पाटिल थे। उस समय महिलायें स्कूल नही जाती थी, लेकिन अहिल्याबाई के पिता ने उन्हें लिखने -पढ़ने लायक पढ़ाया।

पुनर्निर्माण, जीर्णोद्धार और स्थापना

अहिल्या बाई का जीवन मुगलों द्वारा किए गए सनातन वैदिक केंद्रों के पुनर्निर्माण, जीर्णोद्धार और नवीन स्थापनाओं के लिए समर्पित रहा। इसी हमारी माता अहिल्याबाई ने इंदौर को एक छोटे-से गांव से खूबसूरत शहर बनाया। मालवा में कई किले और सड़कें बनवाईं। उन्होंने कई घाट, मंदिर, तालाब, कुएं और विश्राम गृह बनवाए। न केवल दक्षिण भारत में बल्कि हिमालय पर भी। सोमनाथ, काशी, गया, अयोध्या, द्वारका, हरिद्वार, कांची, अवंती, बद्रीनारायण, रामेश्वर, मथुरा और जगन्नाथपुरी आदि का उद्धार और पुनर्निर्माण करा कर सनातनता के स्थापित तीर्थो और धामों को इस योग्य बनाया जिससे आज हम सभी सनातन वैदिक संस्कृति में आस्था रखने वाले हिंदुओ को अपने अस्तित्व के प्रमाण बहुत आसानी से मिल जाते हैं।

होलकर परिवार

अब आज जब देश उनकी जयंती वर्ष मना रहा है तो यह भी आवश्यक हो जाता है कि अपनी ऐसी महान माता के इतिहास से भी परिचित हो लिया जाय। जो उपलब्ध साहित्यिक साक्ष्य और थोड़ा सा लिखित इतिहास सामने उपस्थित है उसकेअनुसार

लेखिका प्रख्यात शिक्षाविद्, राष्ट्रवादी चिंतक और संस्कृति पर्व की कार्यकारी सम्पादक हैं।

महारानी अहिल्याबाई इतिहास-प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खंडेराव की पत्नी थीं। इनका जन्म 31 मई सन् 1725 में हुआ था और देहांत 13 अगस्त 1795 को; तिथि उस दिन भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी थी। अहिल्याबाई किसी बड़े भारी राज्य की रानी नहीं थीं। उनका कार्यक्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित था। फिर भी उन्होंने जो कुछ किया, उससे आश्चर्य होता है। महारानी अहिल्याबाई होलकर भारत के मालवा साम्राज्य की मराठा होलकर महारानी थी. अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर के छौंड़ी ग्राम में हुआ। उनके पिता मंकोजी राव शिंदे, अपने गाव के पाटिल थे। उस समय महिलाये स्कूल नही जाती थी, लेकिन अहिल्याबाई के पिता ने उन्हें लिखने -पढ़ने लायक पढ़ाया। अहिल्याबाई के पति खांडेराव होलकर 1754 के कुम्भेर युद्ध में शहीद हुए थे। 12 साल बाद उनके ससुर मल्हार राव होलकर की भी मृत्यु हो गयी। इसके एक साल बाद ही उन्हें मालवा साम्राज्य की महारानी का मुकुट पहनाया गया।

स्वयं सैनिक

वह हमेशा से ही अपने साम्राज्य को मुस्लिम आक्रमणकारियो से बचाने की कोशिश करती रही। उन्होंने महिलाओं की सेना भी बनाई और स्वयं युद्ध भूमि में भी संघर्ष किया। उस समय के भारत की कल्पना से ही मन सिहर जाता है लेकिन ऐसी घड़ी में उन्होंने न केवल राज्य को संरक्षित किया बल्कि युद्ध के दौरान वह खुद अपनी सेना में शामिल होकर युद्ध करती थी। उन्होंने तुकोजीराव होलकर को अपनी सेना के सेनापति के रूप में नियुक्त किया था। रानी अहिल्याबाई ने अपने साम्राज्य महेश्वर और इंदौर में काफी मंदिरो का निर्माण भी किया था। इसके साथ ही उन्होंने लोगो के रहने के लिए बहुत सी धर्मशालाए भी बनवायीं। इन सभी का निर्माण उन्होंने मुख्य तीर्थस्थान जैसे गुजरात के द्वारका, काशी विश्वनाथ, वाराणसी का गंगा घाट, उज्जैन, नाशिक, विष्णुपद मंदिर और बैजनाथ के आस-पास ही करवाया। मुस्लिम आक्रमणकारियो के द्वारा तोड़े हुए मंदिरो को देखकर ही उन्होंने सोमनाथ और काशी विश्वनाथ का उद्धार कराया था। अहिल्याबाई के संबंध में दो प्रकार की विचारधाराएँ रही हैं। एक में उनको देवी के अवतार की पदवी दी गई है, दूसरी में उनके अति उत्कृष्ट गुणों के साथ तत्कालीन लोकपरंपराओं के प्रति श्रद्धा को भी प्रकट किया है। वह अँधेरे में प्रकाश-किरण के समान थीं, जिसे अँधेरा बार-बार ग्रसने की चेष्टा करता रहा। अपने उत्कृष्ट विचारों एवं नैतिक आचरण के चलते ही समाज में उन्हें देवी का दर्जा मिला।

खंडोजी सुत तुकोजी होलकर

मल्हारराव के भाई-बंदों में तुकोजीराव होल्कर एक विश्वासपात्र युवक थे। मल्हारराव ने उन्हें भी सदा अपने साथ में रखा था और राजकाज के लिए तैयार कर लिया था। अहिल्याबाई ने इन्हें अपना सेनापति बनाया और चौथ वसूल करने का काम उन्हें सौंप दिया।

अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत-भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मंदिर बनवाए, घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए-सुधरवाए, भूखों के लिए अन्नसत्र (अन्यक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाईं, मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिंतन और प्रवचन हेतु की। आत्म-प्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्याग करके सदा न्याय करने का प्रयत्न करती रहीं-मरते दम तक। ये उसी परंपरा में थीं जिसमें उनके समकालीन पूना के न्यायाधीश रामशास्त्री थे और उनके पीछे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हुई।

वैसे तो उम्र में तुकोजीराव होल्कर अहिल्याबाई से बड़े थे, परंतु तुकोजी उन्हें अपनी माता के समान ही मानते थे और राज्य का काम पूरी लगन ओर सच्चाई के साथ करते थे। अहिल्याबाई का उन पर इतना प्रेम और विश्वास था कि वह भी उन्हें पुत्र जैसा मानती थीं। राज्य के काग़ज़ों में जहाँ कहीं उनका उल्लेख आता है वहाँ तथा मुहरों में भी 'खंडोजी सुत तुकोजी होल्कर' इस प्रकार कहा गया है।

प्रमाणिक आधार

यह सर्व विदित है कि अहिल्याबाई का विवाह इन्दौर राज्य के संस्थापक महाराज मल्हार राव होल्कर के पुत्र खंडेराव से हुआ था। सन् 1745 में अहिल्याबाई के एक पुत्र हुआ और तीन वर्ष बाद एक कन्या। पुत्र का नाम मालेराव और कन्या का नाम मुक्ताबाई रखा गया। उन्होंने बड़ी कुशलता से अपने पति के गौरव को जगाया। कुछ ही दिनों में अपने महान पिता के मार्गदर्शन में खण्डेराव एक अच्छे सिपाही बन गये। मल्हारराव को भी देखकर संतोष होने लगा। पुत्र-वधू अहिल्याबाई को भी वह राजकाज की शिक्षा देते रहते थे। उनकी बुद्धि और चतुराई से वह बहुत प्रसन्न होते थे। मल्हारराव के जीवन काल में ही उनके पुत्र खंडेराव का निधन 1754 ई. में हो गया था। अतः मल्हार राव के निधन के बाद रानी अहिल्याबाई ने राज्य का शासन-भार सम्भाला था। रानी अहिल्याबाई ने 1795 ई. में अपनी मृत्यु पर्यन्त बड़ी कुशलता से राज्य का शासन चलाया। उनकी गणना आदर्श शासकों में की जाती है। वे अपनी उदारता और प्रजावत्सलता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके एक ही पुत्र था मालेराव जो 1766 ई. में दिवंगत हो गया। 1767 ई. में अहिल्याबाई ने तुकोजी होल्कर को सेनापति नियुक्त किया।

महेश्वर की स्थापना

रानी अहिल्याबाई अपनी राजधानी महेश्वर ले गईं। वहां उन्होंने 18वीं सदी का बेहतरीन और आलीशान अहिल्या महल का निर्माण कराया। पवित्र नर्मदा नदी के किनारे बनाए गए इस महल के ईर्द-गिर्द बनी राजधानी की पहचान बनी टेक्सटाइल इंडस्ट्री। उस दौरान महेश्वर साहित्य, मूर्तिकला, संगीत और कला के क्षेत्र में एक गढ़ बन चुका था। मराठी कवि मोरोपंत, शाहिर अनंतफंडी और संस्कृत विद्वान खुलासी राम उनके कालखंड के महान व्यक्तित्व थे। एक बुद्धिमान, तीक्ष्ण सोच और स्वस्फूर्त शासक के तौर पर अहिल्याबाई को याद किया जाता है। हर दिन वह अपनी प्रजा से बात करती थी। उनकी समस्याएं सुनती थी। उनके कालखंड (1767-1795) में रानी अहिल्याबाई ने ऐसे कई काम किए कि लोग आज भी उनका नाम लेते हैं। अपने साम्राज्य को उन्होंने समृद्ध बनाया। उन्होंने सरकारी पैसा बेहद बुद्धिमानी से कई किले, विश्राम गृह, कुएं और सड़कें बनवाने पर खर्च किया। वह लोगों के साथ त्योहार मनाती और हिंदू मंदिरों को दान देती थीं।

रानी नही, राज्य की संरक्षक

अहिल्याबाई का मानना था कि धन, प्रजा व ईश्वर की दी हुई वह धरोहर स्वरूप निधि है, जिसकी मैं मालिक नहीं बल्कि उसके प्रजाहित में उपयोग की जिम्मेदार संरक्षक हूँ। उत्तराधिकारी न होने की स्थिति में अहिल्याबाई ने प्रजा को दत्तक लेने का व स्वाभिमान पूर्वक जीने का अधिकार दिया। प्रजा के सुख दुख की जानकारी वे स्वयं प्रत्यक्ष रूप प्रजा से मिलकर लेतीं तथा न्याय-पूर्वक निर्णय देती थीं। उनके राज्य में जाति भेद को कोई मान्यता नहीं थी व सारी प्रजा समान रूप से आदर की हकदार थी। इसका असर यह था कि अनेक बार लोग निजामशाही व पेशवाशाही शासन छोड़कर इनके राज्य में आकर बसने की इच्छा स्वयं इनसे व्यक्त किया करते थे। अहिल्याबाई के राज्य में प्रजा पूरी तरह सुखी व संतुष्ट थी क्योंकि उनका विचार में प्रजा का संतोष ही राज्य का मुख्य कार्य होता है।लोकमाता अहिल्या बाई का मानना था कि प्रजा का पालन संतान की तरह करना ही राजधर्म है।

अहिल्याबाई किसी बड़े भारी राज्य की रानी नहीं थीं, बल्कि एक छोटे भू-भाग पर उनका राज्य कायम था और उनका कार्यक्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित था, इसके बावजूद जनकल्याण के लिए

उन्होंने जो कुछ किया, वह आश्चर्यचकित करने वाला है, वह चिरस्मरणीय है। राज्य की सत्ता पर बैठने के पूर्व ही उन्होंने अपने पति–पुत्र सहित अपने सभी परिजनों को खो दिया था इसके बाद भी प्रजा हितार्थ किये गए उनके जनकल्याण के कार्य प्रशंसनीय हैं।

भगवान शिव को समर्पित साम्राज्य

उन्हों ने 1777 में विश्व प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया था। शिव की भक्त अहिल्याबाई का सारा जीवन वैराग्य, कर्त्तव्य-पालन और परमार्थ की साधना का बन गया। मुस्लिम आक्रमणकारियों के द्वारा तोड़े हुए मंदिरों को देखकर ही उन्होंने सोमनाथ में शिव का मंदिर बनवाया। शिवपूजन के बिना मुंह में पानी की एक बूंद नहीं जाने देती थी। सारा राज्य उन्होंने शंकर को अर्पित कर रखा था और आप उनकी सेविका बनकर शासन चलाती थी। शिव के प्रति उनके समर्पण भाव का पता इस बात से चलता है कि अहिल्याबाई राजाज्ञाओं पर हस्ताक्षर करते समय अपना नाम नहीं लिखती थी, बल्कि पत्र के नीचे नीचे केवल श्री शंकर लिख देती थी। उनके रुपयों पर शिवलिंग और बिल्व पत्र का चित्र ओर पैसों पर नंदी का चित्र अंकित है। कहा जाता है कि तब से लेकर भारतीय स्वराज्य की प्राप्ति तक उनके बाद में जितने नरेश इंदौर के सिंहासन पर आये सबकी राजाज्ञाऐं जब तक कि श्रीशंकर की नाम से जारी नहीं होती, तब तक वह राजाज्ञा नहीं मानी जाती थी और उस पर अमल भी नहीं होता था। उन्होंने स्त्रियों की सेना बनाई, लेकिन वे यह बात अच्छी तरह से जानती थीं कि पेशवा के आगे उनकी सेना कमजोर थी। इसलिए उन्होंने पेशवा को यह समाचार भेजा कि यदि वह स्त्री सेना से जीत हासिल भी कर लेंगे, तो उनकी कीर्ति और यश में कोई बढ़ोत्तरी नहीं होगी, दुनिया यही कहेगी कि स्त्रियों की सेना से ही तो जीते हैं और अगर आप स्त्रियों की सेना से हार गये, तो कितनी जग हंसाई होगी आप इसका अंदाजा भी नहीं लगा सकते।

अहिल्या बाई की यह बुद्धिमानी काम कर गई और पेशवा ने आक्रमण करने का विचार बदल दिया। इसके बाद महारानी पर दत्तक पुत्र लेने का भी दबाव बढ़ने लगा, लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे प्रजा को ही अपना सबकुछ मानती थीं। उनके इस फैसले के बाद राजपूतों ने उनके खिलाफ विद्रोह छेड़ दिया, लेकिन रानी ने कुशलतापूर्वक उस विद्रोह का ही दमन कर दिया। अपनी कुशाग्र बुद्धि का प्रयोग करते हुए रानी अहिल्या बाई होल्कर ने मालवा के खजाने को फिर से भर दिया।

अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत-भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मंदिर बनवाए, घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए-सुधरवाए, भूखों के लिए अन्नसत्र (अन्यक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाईं, मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिंतन और प्रवचन हेतु की। आत्म-प्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्याग करके सदा न्याय करने का प्रयत्न करती रहीं-मरते दम तक। ये उसी परंपरा में थीं जिसमें उनके समकालीन पूना के न्यायाधीश रामशास्त्री थे और उनके पीछे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हुई।

लोक में देवी

अपने जीवनकाल में ही इन्हें जनता 'देवी' समझने और कहने लगी थी। इतना बड़ा व्यक्तित्व जनता ने अपनी आँखों देखा ही कहाँ था। जब चारों ओर गड़बड़ मची हुई थी। शासन और व्यवस्था के नाम पर घोर अत्याचार हो रहे थे। प्रजाजन-साधारण गृहस्थ, किसान मजदूर-अत्यंत हीन अवस्था में सिसक रहे थे। उनका एकमात्र सहारा-धर्म-अंधविश्वासों, भय त्रासों और रूढिय़ों की जकड़ में कसा जा रहा था। न्याय में न शक्ति रही थी, न विश्वास। ऐसे काल की उन विकट परिस्थितियों में अहिल्याबाई ने जो कुछ किया-और बहुत किया।-वह चिरस्मरणीय है।

कलकत्ता से बनारस तक की सड़क, बनारस में अन्नपूर्णा का मन्दिर, गया में विष्णु मन्दिर उनके बनवाये हुए हैं। इन्होंने घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया, मार्ग बनवाए, भूखों के लिए सदाब्रत (अन्नक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ, मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिंतन और प्रवचन हेतु की। उन्होंने अपने समय की हलचल में प्रमुख भाग लिया। रानी अहिल्याबाई ने इसके अलावा काशी, गया, सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, द्वारिका, बद्रीनारायण, रामेश्वर, जगन्नाथ पुरी इत्यादि प्रसिद्ध तीर्थस्थानों पर मंदिर बनवाए और धर्म शालाएं खुलवायीं।

अद्भुत साहस और संकल्प

माता अहिल्याबाई के साहस और संकल्प के बारे में जितना भी लिखा जाए, कम ही है। यह विडंबना है कि उनके बारे में इतिहास के लेखकों ने उनके साथ न तो न्याय किया और न ही उनके विराट व्यक्तित्व से नई पीढ़ी को ठीक से अवगत होने के अवसर दिए गए। आज जब देश का राजनीतिक परिवेश बदला है और सनातन भारत के चिन्हों पर कार्य शुरू हुआ है तब उनकी 300 वीं जयंती वर्ष के रूप में उनके योगदान पर चर्चा हो रही है। यह शुभ है। अहिल्या बाई के बारे में कुछ उपन्यासों में चर्चाएं समाहित हैं। मालवा के स्थानीय साहित्य में सामग्री दिखती है जिसका विस्तार अब राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है। भारत के इतिहास में अहिल्याबाई जैसा कोई अन्य व्यक्तित्व नहीं दिखता। ऐसी सनातन हिन्दू दैवीय शक्ति स्वरूप माता अहिल्या बाई होलकर को शत शत नमन।।

सारस्वत सभ्यता: सिंधु घाटी की सभ्यता

हिमांशु चतुर्वेदी

इतिहासकार अर्नाल्ड जे टायनबी ने कहा था कि, विश्व के इतिहास में अगर किसी देश के इतिहास के साथ सर्वाधिक छेड़ छाड़ की गयी है, तो वह भारत का इतिहास ही है। भारतीय इतिहास का प्रारम्भ तथाकथित रूप से सिन्धु घाटी की सभ्यता से होता है, इसे हड़प्पा कालीन सभ्यता या सारस्वत सभ्यता भी कहा जाता है। बताया जाता है, कि वर्तमान सिन्धु नदी के तटों पर 3500 BC (ईसा पूर्व) में एक विशाल नगरीय सभ्यता विद्यमान थी। मोहनजोदारो, हड़प्पा, कालीबंगा, लोथल आदि इस सभ्यता के नगर थे। पहले इस सभ्यता का विस्तार सिंध, पंजाब, राजस्थान और गुजरात आदि बताया जाता था, किन्तु अब इसका विस्तार समूचा भारत, तमिलनाडु से वैशाली बिहार तक, आज का पूरा पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान तथा (पारस) ईरान का हिस्सा तक पाया जाता है। अब इसका समय 7000 BC से भी प्राचीन पाया गया है।

इस प्राचीन सभ्यता की सीलों, टेबलेट्स और बर्तनों पर जो लिखावट पाई जाती है उसे सिन्धु घाटी की लिपि कहा जाता है। इतिहासकारों का दावा है, कि यह लिपि अभी तक अज्ञात है, और पढ़ी नहीं जा सकी। जबकि सिन्धु घाटी की लिपि से समकक्ष और तथाकथित प्राचीन सभी लिपियां जैसे इजिप्ट, चीनी, फोनेशियाई, आर्मेनिक, सुमेरियाई, मेसोपोटामियाई आदि सब पढ़ ली गयी हैं। आजकल कम्प्यूटरों की सहायता से अक्षरों की आवृत्ति का विश्लेषण कर मार्कोव विधि से प्राचीन भाषा को पढना सरल हो गया है।

सिन्धु घाटी की लिपि को जानबूझ कर नहीं पढ़ा गया और न ही इसको पढने के सार्थक प्रयास किये गए। भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद (Indian Council of Historical Research) जिस पर पहले अंग्रेजो और फिर नकारात्मकता से ग्रस्त स्वयं

> "भारत की प्राचीनतम लिपियों में से एक लिपि है जिसे ब्राह्मी लिपि कहा जाता है। इस लिपि से ही भारत की अन्य भाषाओं की लिपियां बनी। यह लिपि वैदिक काल से गुप्त काल तक उत्तर पश्चिमी भारत में उपयोग की जाती थी। संस्कृत, पाली, प्राकृत के अनेक ग्रन्थ ब्राह्मी लिपि में प्राप्त होते है। सम्राट अशोक ने अपने धम्म का प्रचार प्रसार करने के लिए ब्राह्मी लिपि को अपनाया। सम्राट अशोक के स्तम्भ और शिलालेख ब्राह्मी लिपि में संस्कृत आदि भाषाओं में लिखे गए और भारत में लगाये गए।"

पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, दी.द.उ.गो. वि.वि., गोरखपुर सदस्य, आई.सी.एच.आर., नई दिल्ली।

सिद्ध इतिहासकारों का कब्ज़ा रहा, ने सिन्धु घाटी की लिपि को पढने की कोई भी विशेष योजना नहीं चलायी।

क्या था सिन्धु घाटी की लिपि में?

अंग्रेज और स्वयं सिद्ध इतिहासकार क्यों नहीं चाहते थे, कि सिन्धु घाटी की लिपि को पढ़ा जाए? अंग्रेज और स्वयं सिद्ध इतिहासकारों की नज़रों में सिन्धु घाटी की लिपि को पढने में निम्नलिखित खतरे थे...

1. सिन्धु घाटी की लिपि को पढने के बाद उसकी प्राचीनता और अधिक पुरानी सिद्ध हो जायेगी। इजिप्ट, चीनी, रोमन, ग्रीक, आर्मेनिक, सुमेरियाई, मेसोपोटामियाई से भी पुरानी. जिससे पता चलेगा, कि यह विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है। भारत का महत्व बढेगा जो अंग्रेज और उन इतिहासकारों को बर्दाश्त नहीं होगा।

2. सिन्धु घाटी की लिपि को पढने से अगर वह वैदिक सभ्यता साबित हो गयी तो अंग्रेजो और स्वयं सिद्ध द्वारा फैलाये गए आर्य द्रविड़ युद्ध वाले प्रोपगंडा के ध्वस्त हो जाने का डर है।

3. अंग्रेज और स्वयं सिद्ध इतिहासकारों द्वारा दुष्प्रचारित 'आर्य बाहर से आई हुई आक्रमणकारी जाति है और इसने यहाँ के मूल निवासियों अर्थात सिन्धु घाटी के लोगों को मार डाला व भगा दिया और उनकी महान सभ्यता नष्ट कर दी। वे लोग ही जंगलों में छुप गए, दक्षिण भारतीय (द्रविड़) बन गए, शूद्र व आदिवासी बन गए', आदि आदि गलत साबित हो जायेगा।

कुछ इतिहासकार सिन्धु घाटी की लिपि को सुमेरियन भाषा से जोड़ कर पढने का प्रयास करते रहे तो कुछ इजिप्शियन भाषा से, कुछ चीनी भाषा से, कुछ इनको मुंडा आदिवासियों की भाषा, और तो और, कुछ इनको ईस्टर द्वीप के आदिवासियों की भाषा से जोड़ कर पढने का प्रयास करते रहे। ये सारे प्रयास असफल साबित हुए। सिन्धु घाटी की लिपि को पढने में निम्लिखित समस्याए बताई जाती है...

सभी लिपियों में अक्षर कम होते है, जैसे अंग्रेजी में 26, देवनागरी में 52 आदि, मगर सिन्धु घाटी की लिपि में लगभग 400 अक्षर चिन्ह हैं। सिन्धु घाटी की लिपि को पढने में यह कठिनाई आती है, कि इसका काल 7000 BC से 1500 BC तक का है, जिसमे लिपि में अनेक परिवर्तन हुए साथ ही लिपि में स्टाइलिश वेरिएशन बहुत पाया जाता है। ये निष्कर्ष लोथल और कालीबंगा में सिन्धु घाटी व हड़प्पा कालीन अनेक पुरातात्विक साक्ष्यों का अवलोकन करने के बाद निकला।

भारत की प्राचीनतम लिपियों में से एक लिपि है जिसे ब्राह्मी लिपि कहा जाता है। इस लिपि से ही भारत की अन्य भाषाओं की लिपियां बनी। यह लिपि वैदिक काल से गुप्त काल तक उत्तर पश्चिमी भारत में उपयोग की जाती थी। संस्कृत, पाली, प्राकृत के अनेक ग्रन्थ ब्राह्मी लिपि में प्राप्त होते है। सम्राट अशोक ने अपने धम्म का प्रचार प्रसार करने के लिए ब्राह्मी लिपि को अपनाया। सम्राट अशोक के स्तम्भ और शिलालेख ब्राह्मी लिपि में संस्कृत आदि भाषाओं में लिखे गए और भारत में लगाये गए। सिन्धु घाटी की लिपि और ब्राह्मी लिपि में अनेक आश्चर्यजनक समानताएं है। साथ ही ब्राह्मी और तमिल लिपि का भी पारस्परिक सम्बन्ध है। इस आधार पर सिन्धु घाटी की लिपि को पढने का सार्थक प्रयास सुभाष काक और इरावाथम महादेवन ने किया। सुभाष काक ने तो बहुत शोध पत्र तैयार किया एवम सिंधु घाटी की लिपि को लगभग हल कर लिया था, परंतु प्रकाशित करने के एक दिन पहले रहस्यमय मृत्यु हो गई। ये भी शास्त्री जी वाली कहानी थी।

सिन्धु घाटी की लिपि के लगभग 400 अक्षर के बारे में यह माना जाता है, कि इनमे कुछ वर्णमाला (स्वर व्यंजन मात्रा संख्या), कुछ यौगिक अक्षर और शेष चित्रलिपि हैं। अर्थात यह भाषा अक्षर और चित्रलिपि का संकलन समूह है। विश्व में कोई भी भाषा इतनी सशक्त और समृद्ध नहीं जितनी सिन्धु घाटी की भाषा। बाएं लिखी जाती है, उसी प्रकार ब्राह्मी लिपि भी दाएं से बाएं लिखी जाती है। सिन्धु घाटी की लिपि के लगभग 3000 टेक्स्ट प्राप्त हैं। इनमे वैसे तो 400 अक्षर चिन्ह हैं, लेकिन 39 अक्षरों का प्रयोग 80 प्रतिशत बार हुआ है। और ब्राह्मी लिपि में 45 अक्षर है। अब हम इन 39 अक्षरों को ब्राह्मी लिपि के 45 अक्षरों के साथ समानता के आधार पर मैपिंग कर सकते हैं और उनकी ध्वनि पता लगा सकते हैं। ब्राह्मी लिपि के आधार पर सिन्धु घाटी की लिपि पढने पर सभी संस्कृत के शब्द आते है जैसे; श्री, अगस्त्य, मृग, हस्ती, वरुण, क्षमा, कामदेव, महादेव, कामधेनु, मूषिका, पग, पंच मशक, पितृ, अग्नि, सिन्धु, पुरम, गृह, यज्ञ, इंद्र, मित्र आदि। निष्कर्ष यह है कि...

1. सिन्धु घाटी की लिपि ब्राह्मी लिपि की पूर्वज लिपि है।
2. सिन्धु घाटी की लिपि को ब्राह्मी के आधार पर पढ़ा जा सकता है।
3. उस काल में संस्कृत भाषा थी जिसे सिन्धु घाटी की लिपि में लिखा गया था।
4. सिन्धु घाटी के लोग वैदिक धर्म और संस्कृति मानते थे।
5. वैदिक धर्म अत्यंत प्राचीन है।

वैदिक सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन व मूल सभ्यता है, यहां के लोगों का मूल निवास सप्त सैन्धव प्रदेश (सिन्धु सरस्वती क्षेत्र) था जिसका विस्तार ईरान से सम्पूर्ण भारत देश था।वैदिक धर्म को मानने वाले कहीं बाहर से नहीं आये थे और न ही वे आक्रमणकारी थे। आर्य द्रविड़ जैसी कोई भी दो पृथक जातियाँ नहीं थीं जिनमे परस्पर युद्ध हुआ हो।

बढ़ रहा है भाषाओं के लुप्त होने का संकट

प्रमोद भार्गव

> किसी भी भाषा की मौत सिर्फ एक भाषा की ही मौत नहीं होती, बल्कि उसके साथ ही उस भाषा का ज्ञान भण्डार, इतिहास, संस्कृति, लोक गीत, लोक कथाएं और उस क्षेत्र का भूगोल एवं उससे जुड़े तमाम तथ्य और मनुष्य भी इतिहास का हिस्सा बन जाते हैं। इन भाषाओं और इन लोगों का अस्तित्व खत्म होने का प्रमुख कारण इन्हें जबरन मुख्यधारा से जोड़ने का छलावा है। इन स्थितियों के चलते अनेक आदिम भाषाएं विलुप्ति के कगार पर हैं।

लेखक वरिष्ठ साहित्यकार और पत्रकार हैं।

भारत की पांच सौ भाषाओं के असितत्व पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। इनमें से छत्तीसगढ़ की पांच भाषाओं समेत देश की 117 भाषाएं लुप्त होने के कगार पर पहुंच गई हैं। भारत सरकार इन भाषाओं को बचाने की दिशा में प्रयासरत तो है, परंतु उसके प्रयास अंग्रेजी की एक वेबसाइट तक ही सिमटे दिखाई दे रहे हैं। कुछ समितियां भी बनाई गई हैं और विशेषज्ञ भी नियुक्त किए हैं। अनेक केंद्रीय विश्वविद्यालयों में भाषाई शोध केंद्र भी स्थापित किए है। इनमें शब्दकोष, दृश्य व श्रव्य ऑडियो-वीडियो और कुछ लेखाचित्र बनाए गए हैं, लेकिन अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व के चलते ये भाषाएं बच पाएंगी, कहना मुश्किल है।

1961 की जनगणना में देश में कुल 1652 भाषाएं थीं, पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया ने 2010 में 1365 भारतीय भाषाओं की गिनती की थी। जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएं शामिल हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने 9 विश्वविद्यालयों का चयन 2014 में लुप्तप्राय भाषाओं को बचाने के लिए किया था। परंतु एक-एक कर 7 केंद्र बंद हो गए हैं। मातृभाषाओं के परिप्रेक्ष्य में भारत की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। यहां की कुल 1365 मातृभाषाओं में से 117 भाषाएं विलुप्त के कगार पर हैं और 500 भाषाओं पर विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है। कोई भी भाषा जब मातृभाषा नहीं रह जाती है तो उसके प्रयोग की अनिवार्यता और उससे मिलने वाले

रोजगार मूलक कार्यों में कमी आने लगती है। जिस अत्याधुनिक पाश्चात्य सभ्यता पर गौरवान्वित होते हुए हम व्यावसायिक शिक्षा और प्रौद्योगिक विकास के बहाने अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ाते जा रहे हैं, दरअसल यह छद्म भाषाई अंहकार है। क्षेत्रीय भाषाएं और बोलियां हमारी ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहरें हैं। इन्हें मुख्यधारा में लाने के बहाने, हम तिल-तिल मारने का काम कर रहे हैं। कोई भी भाषा कितने ही छोटे क्षेत्र में, भले कम से कम लोगों द्वारा बोली जाने के बावजूद उसमें पारंपरिक ज्ञान का असीम भंडार होता है। ऐसी भाषाओं का उपयोग जब मातृभाषा के रुप में नहीं रह जाता है, तो वे विलुप्त होने लगती हैं।

जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने अपने शोध से भारत के भाषा और संस्कृति संबंधी तथ्यों से जिस तरह समाज को परिचित कराया था, उसी तर्ज पर अब नए सिरे से गंभीर प्रयास किए जाने की जरुरत है, क्योंकि हर पखवाड़े भारत समेत दुनिया में एक भाषा मर रही है। इस दायरे में आने वाली खासतौर से आदिवासी व अन्य जनजातीय भाषाएं हैं जो लगातार उपेक्षा का शिकार होने के कारण विलुप्त हो रही हैं। ये भाषाएं बहुत उन्नत हैं और ये पारंपरिक ज्ञान की कोष हैं। भारत में ऐसे हालात सामने भी आने लगे हैं कि किसी एक इंसान की मौत के साथ उसकी भाषा का भी अंतिम संस्कार हो गया है। स्वाधीनता दिवस 26 जनवरी 2010 के दिन अंडमान द्वीप समूह की 85 वर्षीय बोआ के निधन के साथ एक ग्रेट अंडमानी भाषा 'बो' भी हमेशा के लिए विलुप्त हो गई। इस भाषा को जानने, बोलने और लिखने वाली वे अंतिम इंसान थीं। इसके पूर्व नवंबर 2009 में एक और महिला बोरो की मौत के साथ 'खोरा' भाषा का अस्तित्व समाप्त हो गया था। किसी भी भाषा की मौत सिर्फ एक भाषा की ही मौत नहीं होती, बल्कि उसके साथ ही उस भाषा का ज्ञान भण्डार, इतिहास, संस्कृति, लोक गीत, लोक कथाएं और उस क्षेत्र का भूगोल एवं उससे जुड़े तमाम तथ्य और मनुष्य भी इतिहास का हिस्सा बन जाते हैं। इन भाषाओं और इन लोगों का अस्तित्व खत्म होने का प्रमुख कारण इन्हें जबरन मुख्यधारा से जोड़ने का छलावा है। इन स्थितियों के चलते अनेक आदिम भाषाएं विलुप्ति के कगार पर हैं।

भारत सरकार ने उन भाषाओं के आंकड़ों का संग्रह किया है, जिन्हें 10 हजार से अधिक संख्या में लोग बोलते हैं। 2001 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार ऐसी 122 भाषाएं और 234 मातृभाषाएं हैं। भाषा-गणना की ऐसी बाध्यकारी शर्त के चलते जिन भाषा व बोलियों को बोलने वाले लोगों की संख्या 10 हजार से कम है, उन्हें गिनती में शामिल ही नहीं किया गया। परंतु भाषाओं के लुप्त होने की चिंता के चलते 10,000 से कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली 117 भाषाएं चिन्हित की गई हैं। इन भाषाओं में प्रमुख रूप से ओडिशा की मंदा, परजी एवं पेंगो, कर्नाटक की कोरगा और कुरुबा, आंध्रप्रदेश की गदाबा तथा नाइको, तमिलनाडू की कीकोटा तथा टोडा, अरुणाचल की मरा एव ंना, असम की ताईनोरा और ताईरोंग, उत्तराखंड की बंगानी, झारखंड की बिरहोर, महाराष्ट्र की निहाली, मेघालय की रूगा, बंगाल की टीटो और छत्तीसगढ़ की घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय के अनुसार तुरी, कोरवा, विलोर, गोंडी और धुरवा संकट में हैं।

भाषाओं में प्रमुख रूप से ओडिशा की मंदा, परजी एवं पेंगो, कर्नाटक की कोरगा और कुरुबा, आंध्रप्रदेश की गदाबा तथा नाइको, तमिलनाडू की कीकोटा तथा टोडा, अरुणाचल की मरा एव ंना, असम की ताईनोरा और ताईरोंग, उत्तराखंड की बंगानी, झारखंड की बिरहोर, महाराष्ट्र की निहाली, मेघालय की रूगा, बंगाल की टीटो और छत्तीसगढ़ की घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय के अनुसार तुरी, कोरवा, विलोर, गोंडी और धुरवा संकट में हैं।

यहां चिंता का विषय यह भी है कि ऐसे क्या कारण और परिस्थितियां रहीं की 'बो' और 'खोरा' भाषाओं की जानकार दो महिलाएं ही बची रह पाईं। ये अपनी पीढ़ियों को उत्तराधिकार में अपनी मातृभाषाएं क्यों नहीं दे पाईं। दरअसल इन प्रजातियों की यही दो महिलाएं अंतिम वारिश थीं।

अंग्रेजों ने जब भारत में फिरंगी हुकूमत कायम की तो उसका विस्तार अंडमान-निकोबार द्वीप समूहों तक भी किया। अंग्रेजों के हस्तक्षेप और आधुनिक विकास की अवधारणा के चलते इन प्रजातियों को भी जबरन मुख्यधारा में लाए जाने के प्रयास का सिलसिला शुरु किया गया। इस समय तक इन समुद्री द्वीपों में करीब 10 जनजातियों के पांच हजार से भी ज्यादा लोग प्रकृति की गोद में नैसर्गिक जीवन व्यतीत कर रहे थे। बाहरी लोगों का जब क्षेत्र में आने का सिलसिला निरंतर रहा तो ये आदिवासी विभिन्न जानलेवा बीमारियों की चपेट में आने लगे। नतीजतन गिनती के केवल 52 लोग जीवित बच पाए। ये लोग 'जेरु' तथा अन्य भाषाएं बोलते थे। बोआ ऐसी स्त्री थी, जो अपनी

मातृभाषा 'बो' के साथ मामूली अंडमानी हिन्दी भी बोल लेती थी। लेकिन अपनी भाषा बोल लेने वाला कोई संगी-साथी न होने के कारण तजिंदगी उसने 'गूंगी' बने रहने का अभिशाप झेला। भाषा व मानव विज्ञानी ऐसा मानते हैं कि ये लोग 65 हजार साल पहले सुदूर अफ्रीका से चलकर अंडमान में बसे थे। ईसाई मिशनरियों द्वारा इन्हें जबरन ईसाई बनाए जाने की कोशिशों और अंग्रेजी सीख लेने के दबाव भी इनकी घटती आबादी के कारण बने।

'नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी एंड लिविंग टंग्स इंस्टीट्यूट फॉर एंडेंजर्ड लैंग्वेजेज' के अनुसार हरेक पखवाड़े एक भाषा की मौत हो रही है। सन् 2100 तक भू-मण्डल में बोली जाने वाली सात हजार से भी अधिक भाषा और बोलियों का लोप हो सकता है। इनमें से पूरी दुनिया में 2700 भाषाएं संकटग्रस्त हैं। इन भाषाओं में असम की 17 भाषाएं शामिल हैं। यूनेस्को द्वारा जारी एक जानकारी के मुताबिक असम की देवरी, मिसिंग, कछारी, बेइटे, तिवा और कोच राजवंशी

भारत की स्थानीय भाषाएं व बोलियां अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के कारण संकटग्रस्त हैं। व्यावसायिक, प्रशासनिक, चिकित्सा, अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी की आधिकारिक भाषा बन जाने के कारण अंग्रेजी रोजगारमूलक शिक्षा का प्रमुख आधार बना दी गई है। इन कारणों से उत्तरोत्तर नई पीढ़ी मातृभाषा के मोह से मुक्त होकर अंग्रेजी अपनाने को विवश है। प्रतिस्पर्धा के दौर में मातृभाषा को लेकर युवाओं में हीन भावना भी पनप रही हैं।

सबसे संकटग्रस्त भाषाएं हैं। इन भाषा-बोलियों का प्रचलन लगातार कम हो रहा है। नई पीढ़ी के सरोकार असमिया, हिन्दी और अंग्रेजी तक सिमट गए हैं। इसके बावजूद 28 हजार लोग देवरी भाषी, मिसिंगभाषी साढ़े पांच लाख और बेइटे भाषी करीब 19 हजार अभी भी हैं। इनके अलावा असम की बोडो, कार्बो, डिमासा, विष्णुप्रिया, मणिपुरी और काकबरक भाषाओं के जानकार भी लगातार सिमटते जा रहे हैं। घरों में, बाजार व रोजगार में इन भाषाओं का प्रचलन कम होते जाने के कारण नई पीढ़ी इन भाषाओं को सीख-पढ़ नहीं रही है। वे ही भाषाएं बोलियों और लिपियों के रूप में जिवित रह सकती हैं जो उपयोग में बनी रहें। पूरी दुनिया में 15 हजार से अधिक भाषाएं दर्ज हैं, लेकिन आज उनमें से आधी से ज्यादा मर गईं हैं। इसका कारण इन्हें उपयोग से वंचित कर देना है। कई लोग भाषाओं की विलुप्ति का कारण आक्रांताओं के हमलों को मानते हैं। भारत में भी इस स्थिति को भाषाओं की विलुप्ति का कारण माना गया। लेकिन यह तथ्य थोथा है। फ्रांस में भी यह भ्रम फैला हुआ है। फ्रेंच भाषियों को यह आशंका सता रही है कि वहां कि युवा पीढ़ी अंग्रेजी के प्रति आकर्षित है। इसलिए वहां अंग्रेजी से मुक्ति के उपाय सुझाए जा रहे हैं। जरूरत भाषा को उपयोगी बनाए रखने की है। यदि भाषाएं बोल-चाल के साथ रोजगार और तकनीक की भाषा बनी रहती हैं तो जीवित बनी रहेंगी। नाइजीरिया और कैमरून की 'बिक्या' भाषा इसी तरह लुप्त हुई। इस भाषा को प्रचलन में बनाए रखने वाले एक-एक कर जब मरते चले गए तो उनके साथ भाषा भी मरती चली गई। वर्तमान में विश्व की 90 प्रतिशत भाषाओं और बोलियों पर विलुप्त हो जाने का खतरा मंडरा रहा है। वैसे भाषाओं का मरना हर युग और हर देश में एक सिलसिला बना रहा है। भारत की सबसे प्राचीन ब्राह्मी लिपि को आज बांचने वाला कोई नहीं है। इसी तरह एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया क्षेत्रों की अनेक भाषा और बोलियां तिल-तिल मरती जा रही हैं। प्रकृति की विलक्षणता और सामाजिक विविधता की युगों से चली आ रही पहचानों को हम भाषाओं के माध्यम से ही पृथक-पृथक रूपों में चिन्हित कर पाते हैं।

भाषा से ही हम विकास का ढांचा खड़ा कर पाते हैं। इस विकास के साथ जो भाषा जुड़ी होती है, उसकी जीवंतता बनी रहती है। आज अंग्रेजी जहां भाषाओं की विलुप्तता से जहां खलनायिका साबित हो रही है, वहीं इसके महत्व को एकाएक इसलिए नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है ? क्योंकि यह आधुनिक तकनीक के व्यावहारिक और व्यावसायिक उपयोग का विश्वव्यापी आधार बन गई है। दुनिया की युवा पीढ़ी विश्व समाज से जुड़ने के लिए अंग्रेजी की ओर आकर्षित है। लेकिन यदि अंग्रेजी इसी तरह पैर पसारती रही तो दुनिया में भाषायी एकरूपता छा जाएगी, जिसकी वटवृक्षी छाया में अनेक भाषाएं मर जाएंगी।

भारत की तमाम स्थानीय भाषाएं व बोलियां अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के कारण संकटग्रस्त हैं। व्यावसायिक, प्रशासनिक, चिकित्सा, अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी की आधिकारिक भाषा बन जाने के कारण अंग्रेजी रोजगारमूलक शिक्षा का प्रमुख आधार बना दी गई है। इन कारणों से उत्तरोत्तर नई पीढ़ी मातृभाषा के मोह से मुक्त होकर अंग्रेजी अपनाने को विवश है। प्रतिस्पर्धा के दौर में मातृभाषा को लेकर युवाओं में हीन भावना भी पनप रही हैं। इसलिए जब तक भाषा संबंधी नीतियों में आमूलचूल परिवर्तन नहीं होता तब तक भाषाओं की विलुप्ति पर अंकुश लगाना मुश्किल है। भाषाओं को बचाने के लिए समय की मांग है कि क्षेत्र विशेषों में स्थानीय भाषा के जानकारों को ही निगमों, निकायों, पंचायतों, बैंकों और अन्य सरकारी दफ्तरों में रोजगार दिए जाएं। इससे अंग्रेजी के फैलते वर्चस्व को चुनौती मिलेगी और ये लोग अपनी भाषाओं व बोलियों का संरक्षण तो करेंगे ही उन्हें रोजगार का आधार बनाकर गरिमा भी

प्रदान करेंगे। ऐसी सकारात्मक नीतियों से ही युवा पीढ़ी मातृभाषा के प्रति अनायास पनपने वाली हीन भावना से भी मुक्त होगी। गोया, जरूरी है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा और आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं को नए सिरे से अहमियत दी जाए।

आंचलिक भाषाओं को बचाने की ठोस पहल

कोई भी भाषा जब मातृभाषा नहीं रह जाती है तो उसके प्रयोग की अनिवार्यता में कमी और उससे मिलने वाले रोजगार मूलक कार्यों में भी कमी आने लगती है। पिछले 75 सालों में हमारी भाषा और बोलियों के साथ यही होता रहा है। परंतु अब नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी) को लागू करने की दिशा में उल्लेखनीय पहल करते हुए केंद्र सरकार नए सत्र से पांच नए उपाय करने जा रही है। इनमें बच्चों को मातृ, घरेलू और क्षेत्रीय भाषा में पाठ्य पुस्तकें पढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। इस लक्ष्यपूर्ति के लिए 52 प्रवेषिकाएं अर्थात पाठ्य पुस्तकें तैयार की गई हैं। इनसे छात्र-छात्राओं से लेकर वयस्क तक इन्हीं भाषाओं में वर्णमाला और दो अंकों तक गणित सीख सकेंगे। पहले चरण में 17 राज्यों की राजभाषा व स्थानीय भाषा में 52 पुस्तकें मैसूर के भारतीय भाषा संस्थान और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने तैयार की हैं।

देश में ऐसी 121 भाषाएं हैं, जिन्हें क्षेत्रीय लोग स्थानीय स्तर पर लिखने व बोलने में प्रयोग करते हैं। जल्दी ही देश के बाकी राज्यों की आंचलिक भाषाओं में प्रवेशिका उपलब्ध करा दी जाएंगी। इन पाठ्य पुस्तकों का उपलब्ध होना न केवल विद्यार्थियों के लिए बल्कि विलोपित हो रही मातृभाषाओं का अस्तित्व बचाने की परिवर्तनकारी पहल है। 'जनजातीय भाषाओं सहित गैर-अनुसूचित भाषाओं में ज्ञानार्जन करने वाले बच्चों के लिए यह पहल एक प्रेरणादायी यात्रा साबित होगी। यह गहरी समझ, निरंतर सीखने और स्वदेशी संस्कृति से जुड़ाव के साथ शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में बड़ी सफलता का मार्ग प्रशस्त करेगी। इससे विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रारंभिक पाठ्य पुस्तकों को जारी करके एक नई सभ्यता के पुनर्जागरण की शुरूआत होगी। यह पहल निर्बाध और भविष्यवादी शिक्षण परिदृश्य तैयार कर भारतीय भाषाओं में सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देगी। इससे नई शिक्षा नीति का दृष्टिकोण साकार होगा और शालेय शिक्षा में महत्वपूर्ण बदलाव आएंगे।

सरकार ने राष्ट्रीय विद्या समीक्षा केंद्र का राज्य इकाइयों व 200 टीवी डीटीएच चैनलों के साथ एकीकरण का निर्णय भी लिया है। ' इस हेतु सरकार ने 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए 22 क्षेत्रीय व प्रादेशिक भाषाओं में चैनल तैयार कर लिए हैं। ये बिना इंटरनेट चलेंगे। भविष्य में ये चैनल ओटीटी और यूट्यूब पर भी उपलब्ध होंगे। शिक्षकों की गुणवत्ता एक जैसी हो, इसके लिए व्यावसायिक मानक तैयार किए हैं। इसमें शिक्षकों के स्तर व क्षमताओं को परिभाषित किया गया है। इनका मूल्यांकन भी होता रहेगा। साफ है, शिक्षकों व विद्यार्थियों के सषक्तिकरण व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को अधिक समावेशी बनाने की दृष्टि से यह पहल महत्वपूर्ण कही जा सकती है। लेकिन हमारे देश में ज्यादातर नवाचार क्रियान्वयन के स्तर पर पहुंचकर दम तोड़ देते हैं।

दुनिया में लुप्त होती भाषाएं

यह एक दुखद समाचार है कि अंग्रेजी वर्चस्व के चलते भारत समेत दुनिया की अनेक मातृभाषाएं अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं। जबकि राष्ट्र संघ द्वारा अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की घोशणा का प्रमुख उद्देश्य था कि विश्व में लुप्त हो रहीं भाषाएं सरंक्षित हों, विश्व में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता और बहुभाशिता को बढ़ावा मिले। किंतु ऐसा होने के बजाय, दुनिया में 2500 भाषाएं इस बद्हाल स्थिति में पहुंच गई हैं कि वे विलुप्ति के कगार पर हैं।

दुनिया की 25 प्रतिशत ऐसी भाषाएं हैं, जिनके बोलने वाले एक हजार से भी कम लोग रह गए हैं। हालांकि मातृभाषाओं की व्यावसायिक उपयोगिता का ख्याल रखते हुए 17 नवंबर 1999 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस दिन को प्रतिवर्ष 21 फरवरी को मनाए जाने की स्वीकृति दी। लेकिन अंग्रेजी वर्चस्व की एकरूपता में बहुभाषी शिक्षा कितनी सेंध लगा पाती है, यह कहना मुश्किल है? हालांकि अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस हमारे पड़ोसी बांग्लादेश के भाषाई आंदोलन से प्रभावित होकर शुरू हुआ था। बांग्लादेश में 'भाषा आंदोलान दिवस' 1952 से मनाया जाता रहा है। यहां इस दिन राष्ट्रीय अवकाश भी होता है। सन् 2100 तक धरती पर बोली जाने वाली ऐसी पांच हजार से भी ज्यादा भाषाएं हैं जो विलुप्त हो सकती हैं।

भारत के बाद अमेरिका की स्थिति चिंताजनक है, जहां की 192 भाषाएं दम तोड़ रही हैं। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर भाषाओं की विश्व इकाई द्वारा दी गई जानकारी में बताया है कि बेलगाम अंग्रेजी इसी तरह से पैर पसारती रही तो एक दषक के भीतर करीब ढाई हजार भाषाएं पूरी तरह समाप्त हो जाएंगी। भारत और अमेरिका के बाद इंडोनेशिया की 147 भाषाओं को जानने वाले खत्म हो जाएंगे। दुनिया भर में 199 भाषाएं ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या एक दर्जन लोगों से भी कम है। इनमें 'कैरेम' भी एक ऐसी भाषा है, जिसे यूक्रेन में मात्र छह लोग बोलते हैं। इसी तरह ओकलाहामा में 'विचिता' भी एक ऐसी भाषा है जिसे देश में मात्र दस लोग बोल पाते हैं। इंडोनेशिया की 'लेंगिलू' बोलने वाले केवल चार लोग बचे हैं। 178 भाषाएं ऐसी हैं, जिन्हें बोलने वाले लोगों की संख्या 150 से भी कम है।

आलेख

श्रृंखला -1

विश्व पथ प्रदर्शक भारत

प्रज्ञा मिश्रा

भारत को विश्व का पथ प्रदर्शक कहना स्वाभाविक ही है क्योंकि यहाँ की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान परंपराएं सदियों से दुनिया को दिशा दिखाती आई हैं। भारत ने आध्यात्मिकता, योग, ध्यान और अहिंसा जैसे सिद्धांतों के माध्यम से मानवता को नैतिक और मानसिक उन्नति का मार्ग बताया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वर्ष 2047 के जिस विकसित भारत के सपने को साकार करने का आह्वाहन करते हैं उसके मूल में भारत की महान ज्ञान परम्परा ही है। प्रधानमंत्री के विजन पर आधारित यह विशेष लेख माला इस अंक से आरम्भ की जा रही है। प्रस्तुत है श्रृंखला का प्रथम आलेख...

भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वेद, उपनिषद और भगवद गीता जैसे ग्रंथ, जीवन के गूढ़ प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम हैं और लोगों को सही मार्ग चुनने की प्रेरणा देते हैं। इसके अलावा, भारत ने वैज्ञानिक, गणितीय, और खगोलीय क्षेत्रों में भी अमूल्य योगदान दिया है। शून्य की खोज, आयुर्वेद चिकित्सा, और आचार्य चाणक्य की नीतियां आदि ऐसी धरोहरें हैं, जिन्होंने न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित किया है।

आज भी भारत अपने विविधतापूर्ण समाज, लोकतांत्रिक मूल्यों और तकनीकी उन्नति के साथ विश्व का मार्गदर्शन कर रहा है। चाहे पर्यावरण संरक्षण की बात हो या वैश्विक शांति की, भारत की भूमिका हमेशा से एक पथ प्रदर्शक की रही है, जो मानवता के समग्र विकास में योगदान दे रही है। एक नागरिक के रूप में अपने देश की सभ्यता और संस्कृति को लेकर गौरव का भाव होना स्वाभाविक है। किंतु, इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि हमारा भारत वास्तव में विश्व गुरु था और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्व गुरु बनने की समस्त योग्यताएं समेटे

> यह उल्लेख तो नहीं मिलता कि बटन का अविष्कार किसके द्वारा किया गया किंतु, इस बात के प्रमाण अवश्य हैं कि बटन का अविष्कार भारत ने ही किया है । जी हाँ, ये बिल्कुल सच है। 2000 ईसा पूर्व में सिंधु घाटी सभ्यता में इसे बनाया गया था । लगभग 5,000 साल पहले, इन्हें सीपियों से बनाया गया था और उनमें छोटे-छोटे छेद करके ज्यामितीय आकृतियां बनाई गई थीं ।

लेखिका संस्कृति पर्व की सह-सम्पादक हैं।

हुए तेजी से इस पथ पर आगे बढ़ रहा है।

यह मात्र कथन नहीं है अपितु प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक, भारत की प्रचुर मेधा शक्ति ने भारत के भाल को अपने अनूठे ज्ञान और आविष्कारों से सुशोभित किया है। प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि हमारे इतिहास के गर्भ में ऐसा क्या है जो हमें आज भी गौरव की अनुभूति कराता है। आइए, आपको अनगिनत में से कुछ ऐसी उपलब्धियों को बताते हैं जो भारत के इतिहास को गौरवशाली बनाती हैं।

शुरू करते हैं, बेहद छोटी लेकिन महत्वपूर्ण वस्तु से -

आपने कभी शायद ही सोचा होगा कि पृथ्वी के पूर्व से लेकर पश्चिम तक पहने जाने वाले अनेकानेक परिधानों में टांके हुए बटन किसके दिमाग की उपज रहे होंगे। यह उल्लेख तो नहीं मिलता कि बटन का अविष्कार किसके द्वारा किया गया किंतु, इस बात के प्रमाण अवश्य हैं कि बटन का अविष्कार भारत ने ही किया है । जी हाँ, ये बिल्कुल सच है। 2000 ईसा पूर्व में सिंधु घाटी सभ्यता में इसे बनाया गया था । लगभग 5,000 साल पहले, इन्हें सीपियों से बनाया गया था और उनमें छोटे-छोटे छेद करके ज्यामितीय आकृतियां बनाई गई थीं । पहले इनका उपयोग सजावटी उद्देश्यों के लिए किया जाता था, लेकिन धीरे-धीरे लोगों ने इनका उपयोग कपड़ों को बांधने के लिए करना शुरू कर दिया ।

जीरो यानि कि " शून्य" की महत्ता का संक्षिप्त किंतु मोहक वर्णन मनोज कुमार की फिल्म " पूरब और पश्चिम" के एक अति प्रसिद्ध गाने में मिलता है । इस गाने को सुनते हुए अपने देश के प्रति प्रेम और गर्व के भाव से रोंगटे खड़े हो जाना साधारण सी बात है हम भारतीयों के लिए, किंतु " शून्य का अविष्कार होना अत्यंत असाधारण घटना है इतिहास की। यह " शून्य " न होता तो क्या होता, कल्पना करना भी कठिन है।

शून्य क्या है ?

शून्य एक ऐसा अंक है जो शून्यता को दर्शाता है। यह इस मायने में अनोखा है कि यह एकमात्र ऐसा अंक है जो मात्रा की अनुपस्थिति को दर्शाता है, जो इसे अन्य सभी संख्याओं से अलग करता है जो किसी मात्रा को दर्शाते हैं। 7 वीं शताब्दी के ब्रह्मगुप्त एक भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे, जिन्हें गणित में उनके अग्रणी कार्य के लिए जाना जाता है। उन्होंने गणनाओं में शून्य का उपयोग करने के लिए शुरुआती तरीके विकसित किए, और पहली बार इसे एक संख्या के रूप में माना । शून्य को गणना में शामिल करने की सबसे पहली ज्ञात विधि, इसे पहली बार एक संख्या के रूप में माना गया। ब्रह्मगुप्त चक्रीय चतुर्भुज के क्षेत्रफल के लिए सूत्र विकसित करने वाले पहले गणितज्ञ थे, जिसे अब ब्रह्मगुप्त सूत्र के रूप में जाना जाता है । उन्होंने शून्य के साथ गणना करने के लिए दिशानिर्देश भी प्रदान किए। संस्कृत छंद

में लिखे गए उनके कार्यों ने गणित के क्षेत्र पर स्थायी प्रभाव डाला है।

उनके उल्लेखनीय कार्य, "ब्रह्मस्फुटसिद्धांत" में अंकगणित, बीजगणित और संख्या सिद्धांत में महत्वपूर्ण योगदान शामिल हैं, और उनके नवाचारों को बाद में भारत के ग्वालियर में चतुर्भुज मंदिर की दीवारों पर अंकित किया।

628 ई. में ब्रह्मगुप्त ने पहली बार गुरुत्वाकर्षण को एक आकर्षक बल के रूप में वर्णित किया, इसे समझाने के लिए उन्होंने संस्कृत शब्द " गुरुत्वाकर्षणम् (गुरुत्वाकर्षणम्) " का इस्तेमाल किया। उन्हें अपने मुख्य कार्य, ब्रह्मस्फुटसिद्धांत में द्विघात सूत्र का पहला स्पष्ट वर्णन करने का श्रेय भी दिया जाता है।

ब्रह्मगुप्त को अपने युग के सबसे प्रभावशाली गणितज्ञों में से एक माना जाता है। उनके योगदान में बीजगणित, अंकगणित और ज्यामिति शामिल हैं। उन्हें उनके कार्यों, " ब्रह्मस्फुटसिद्धांत " और " खंडखाद्यक " के लिए जाना जाता है, जो गणित और खगोल विज्ञान पर व्यापक ग्रंथ हैं।

ब्रह्मगुप्त की पुस्तकें, 24 खंडों में विभाजित हैं और इनमें 1008 आर्य कविताएँ हैं, जो अंकगणित, त्रिकोणमिति, ज्यामिति और एल्गोरिदम जैसे विभिन्न गणितीय विषयों को कवर करती हैं। इनमें से कई अवधारणाओं का श्रेय खुद ब्रह्मगुप्त को जाता है। ब्रह्मगुप्त ने आर्यभट्ट प्रथम, प्रद्युम्न, लतादेव, वराहमिहिर, श्रीसेन, सिम्हा और विजयनंदन जैसे उल्लेखनीय विद्वानों के लेखन का अध्ययन किया, साथ ही विष्णुचंद्र और पाँच पारंपरिक भारतीय ज्योतिष सिद्धांतों का भी अध्ययन किया। प्रसिद्ध ब्रह्मगुप्त सूत्र सहित उनके कार्यों ने गणित में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

ब्रह्मगुप्त ने भारतीय खगोल विज्ञान के पाँच क्लासिक सिद्धांतों और आर्यभट्ट प्रथम, लतादेव, प्रद्युम्न, वराहमिहिर, सिम्हा, श्रीसेन, विजयनंदिन और विष्णुचंद्र जैसे अन्य खगोलविदों के कार्यों का अध्ययन किया। 30 वर्ष की आयु में, ब्रह्मगुप्त ने ब्रह्मस्फुटसिद्धांत की रचना की, जो खगोल विज्ञान के ब्रह्मपक्ष स्कूल के सिद्धांत का संशोधित संस्करण है।

ब्रह्मगुप्त, एक प्रभावशाली भारतीय गणितज्ञ थे, जिन्होंने शून्य

संख्या के गुणों की स्थापना की, जो गणित और विज्ञान की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण थे। ब्रह्मगुप्त के कुछ प्रमुख योगदान इस प्रकार हैंः

जब हम किसी संख्या को स्वयं से घटाते हैं तो हमें शून्य प्राप्त होता है।

किसी भी संख्या को शून्य से भाग देने पर परिणाम शून्य आता है।

शून्य को शून्य से भाग देने पर शून्य प्राप्त होता है।

ब्रह्मगुप्त ने द्विघातीय समस्याओं को हल करने के लिए एक सूत्र विकसित किया।

उन्होंने पाई का मान 3.162 आंका, जो वास्तविक मान 3.14 से थोड़ा अधिक था।

उन्होंने गणना की कि पृथ्वी सूर्य की अपेक्षा चंद्रमा के अधिक निकट है। उन्होंने किसी भी चतुर्भुजाकार आकृति का क्षेत्रफल ज्ञात करने के लिए एक सूत्र की खोज की, जिसके कोने वृत्त के आंतरिक भाग को स्पर्श करते हों, जिसे ब्रह्मगुप्त सूत्र के नाम से जाना जाता है ।

ब्रह्मगुप्त ने निर्धारित किया कि एक वर्ष 365 दिन, 6 घंटे, 12 मिनट और 9 सेकंड का होता है। उन्होंने गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा का उल्लेख करते हुए कहा कि पिंड पृथ्वी की ओर इसलिए गिरते हैं क्योंकि यह उन्हें अपनी ओर आकर्षित करती है, ठीक उसी प्रकार जैसे पानी बहता है। ब्रह्मगुप्त ने धनात्मक और ऋणात्मक संख्याओं के साथ काम करने के लिए नियमों का आविष्कार कियाः एक ऋणात्मक संख्या को दूसरी ऋणात्मक संख्या में जोड़ने पर ऋणात्मक परिणाम प्राप्त होता है। किसी धनात्मक संख्या में से ऋणात्मक संख्या घटाना दो संख्याओं को जोड़ने जैसा है। दो ऋणात्मक संख्याओं को गुणा करने पर एक धनात्मक संख्या प्राप्त होती है।

विज्ञान और ज्योतिष में ब्रह्मगुप्त का योगदान

ब्रह्मगुप्त, एक प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ, ने विज्ञान और ज्योतिष में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने तर्क दिया कि पृथ्वी और ब्रह्मांड गोलाकार हैं, सपाट नहीं। वे ग्रहों की स्थिति और चंद्र और सौर ग्रहणों के समय की भविष्यवाणी करने के लिए गणित का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे। ये निष्कर्ष उस समय की प्रमुख वैज्ञानिक प्रगति थे। ब्रह्मगुप्त ने सौर वर्ष की लंबाई भी 365 दिन, 5 मिनट और 19 सेकंड बताई, जो कि वर्तमान माप 365 दिन, 5 घंटे और 19 सेकंड के बहुत करीब है। उन्होंने गुरुत्वाकर्षण का उल्लेख करते हुए बताया, “पिंड पृथ्वी की ओर गिरते हैं क्योंकि उन्हें आकर्षित करना पृथ्वी की प्रकृति में है, जैसे पानी वस्तुओं को आकर्षित करता है।”

ब्रह्मगुप्त का खगोल विज्ञान में कार्य ब्रह्मस्फुटसिद्धांत के माध्यम से अरबों तक पहुँचा। 770 ई. में, बगदाद के खलीफा अल-मंसूर ने भारतीय खगोलीय सिद्धांतों को समझाने के लिए उज्जैन के एक विद्वान कनकह को आमंत्रित किया। कनकह ने गणितीय खगोल विज्ञान के हिंदू तरीकों को सिखाने के लिए ब्रह्मगुप्त की पुस्तक का उपयोग किया। खलीफा के अनुरोध पर, मुहम्मद अल-फजारी ने ब्रह्मगुप्त के कार्य का अरबी में अनुवाद किया।

भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री ब्रह्मगुप्त ने गणित और खगोल विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ब्रह्मगुप्त की कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैंः

शून्य की परिभाषा : ब्रह्मगुप्त ने शून्य के गुणों को परिभाषित किया, जो गणित और विज्ञान के लिए एक महत्वपूर्ण विकास था। इसका बीजगणित और अन्य गणितीय क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

द्विघात समीकरण : उन्होंने द्विघात समीकरणों को हल करने के लिए एक सूत्र की खोज की, जिसे अब ब्रह्मगुप्त सूत्र के रूप में जाना जाता है ।

त्रिकोणमिति सूत्र : ब्रह्मगुप्त ने महत्वपूर्ण त्रिकोणमितीय सूत्र विकसित किए, जिनमें साइन और कोसाइन के सूत्र भी शामिल थे।

पाई का मान : उन्होंने पाई का मान लगभग 3.162 निकाला, जो वास्तविक मान के करीब था।

चतुर्भुज का क्षेत्रफल : उन्होंने किसी भी चार भुजा वाली आकृति का क्षेत्रफल ज्ञात करने के लिए एक सूत्र खोजा, जिसके कोने वृत्त के अंदर स्पर्श करते हों, यह ब्रह्मगुप्त का एक अन्य महत्वपूर्ण सूत्र है।

एक वर्ष की लंबाई : ब्रह्मगुप्त ने एक वर्ष की लंबाई 365 दिन, 6 घंटे, 12 मिनट और 9 सेकंड बताई थी।

पृथ्वी का आकार और परिधि : उन्होंने साबित किया कि पृथ्वी एक गोलाकार है और इसकी परिधि लगभग 36,000 किमी (22,500 मील) बताई।

खगोल विज्ञान : ब्रह्मगुप्त ने ग्रहों और अन्य खगोलीय पिंडों की स्थिति की गणना करने के तरीकों का विकास करके खगोल विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

ब्रह्मगुप्त की उपलब्धियों ने भारत और दुनिया भर में गणित और विज्ञान के अध्ययन पर स्थायी प्रभाव डाला। एक प्रसिद्ध ब्रह्मगुप्त गणितज्ञ के रूप में, उनके काम को विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों पर इसके प्रभाव के लिए आज भी सराहा जाता है।

आर्यभट्ट को प्राचीन भारत में गणितीय खगोल विज्ञान का अग्रणी माना जाता है, जिनका कार्य आधुनिक विद्वानों के लिए उपलब्ध है। उनके कार्यों में आर्यभटीय और आर्य सिद्धांत शामिल हैं। अन्य बातों के अलावा, आर्यभट्ट ने ‘पाई’ के निकटतम अनुमानित मान की गणना की और वह सबसे पहले यह समझाने वाले थे कि चंद्रमा और ग्रह परावर्तित सूर्य के प्रकाश के कारण चमकते हैं और उन्होंने त्रिकोणमिति और बीजगणित के क्षेत्र में प्रमुख योगदान दिया।

ऐसा भी कहा जाता है कि आर्यभट्ट ने बिहार के तारेगना स्थित सूर्य मंदिर में एक वेधशाला भी स्थापित की थी।

आर्यभट्ट की साहित्यिक कृतियाँ –

आर्यभट्ट ने गणित और खगोल विज्ञान पर कई ग्रंथ लिखे, जिनमें

से कुछ अब लुप्त हो चुके हैं।

आर्यभटीय (5वीं शताब्दी ई.): यह गणित और खगोल विज्ञान पर एक विस्तृत ग्रन्थ है। आर्यभटीय के गणितीय भाग में अंकगणित, बीजगणित, समतल त्रिकोणमिति, गोलीय त्रिकोणमिति, भिन्न, द्विघात समीकरण, घात-श्रेणी के योग और ज्या की तालिका शामिल है।

खगोल-शास्त्र: आर्यभटीय का वह भाग जो खगोल विज्ञान से संबंधित है, खगोल-शास्त्र के नाम से जाना जाता है। खगोल नालंदा में प्रसिद्ध खगोलीय वेधशाला थी, जहाँ आर्यभट्ट ने अध्ययन किया था।

आर्य सिद्धांत: यह खगोलीय गणना से संबंधित है और इसमें कई खगोलीय उपकरणों का विवरण है जैसे:

शंकु-यंत्र (शंकु-यंत्र)

एक छाया यंत्र (छाया-यंत्र)

अर्धवृत्ताकार और वृत्ताकार कोण मापने वाले उपकरण (धनूर-यंत्र/चक्र-यंत्र)

एक बेलनाकार छड़ी जिसे यस्तियंत्र कहा जाता है

एक छतरी के आकार का उपकरण (छत्र-यंत्र)

धनुषाकार और बेलनाकार जल घड़ियाँ

आर्यभट्ट की खगोल विज्ञान प्रणाली को औदयक प्रणाली कहा जाता था (लंका, भूमध्य रेखा पर उदय, भोर से दिन की गणना की जाती थी)।

घूर्णन का सिद्धांत: आर्यभटीय में दर्ज यह खोज महत्वपूर्ण है कि पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है।

आर्यभट्ट ने यह भी बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है और चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमता है।

ग्रहण: आर्यभटीय में उन्होंने पृथ्वी, चंद्रमा और ग्रहों द्वारा डाली जाने वाली और उन पर पड़ने वाली छाया के विचार का परिचय दिया है, और कहा है कि चंद्र ग्रहण पृथ्वी की छाया में चंद्रमा के प्रवेश करने के कारण होता है। आर्यभट्ट ने पृथ्वी की छाया की लंबाई और व्यास, ग्रहणों का समय और अवधि, तथा सूर्य या चंद्रमा के ग्रहणग्रस्त भाग के आकार के लिए सूत्र दिए हैं।

पृथ्वी की परिधि: आर्यभट्ट ने यह भी बताया कि पृथ्वी की परिधि 39,968 किमी है।

आधुनिक वैज्ञानिक गणना के अनुसार यह 40,072 किमी है।

दशमलव स्थान: आर्यभट्ट ने दशमलव प्रणाली का आविष्कार किया और शून्य को स्थानधारक के रूप में प्रयोग किया।

वह पहले 10 दशमलव स्थानों के नाम बताते हैं और दशमलव का उपयोग करके वर्ग और घनमूल प्राप्त करने के लिए एल्गोरिदम देते हैं।

'पाई' का मान: वह ज्यामितीय मापों में पाई के लिए 62,832/20,000 (= 3.1416) का उपयोग करते हैं, जो वास्तविक मान 3.14159 के बहुत करीब है।

आर्यभट्ट द्वारा दिया गया 'पाई' का मान आधुनिक मान के बहुत करीब है और प्राचीनों में सबसे सटीक है।

इसके अलावा, यह भी माना जाता है कि आर्यभट्ट जानते थे कि 'पाई' का मान अपरिमेय है।

त्रिभुज का क्षेत्रफल: आर्यभट्ट ने त्रिभुज और वृत्त के क्षेत्रफल की सही गणना की थी।

उदाहरण के लिए, गणितपदम् में उन्होंने उल्लेख किया कि "एक त्रिभुज के लिए, अर्ध-भुजा वाले लंब का परिणाम क्षेत्रफल होता है।"

साइन तालिका: पाइथागोरस प्रमेय का उपयोग करते हुए, उन्होंने साइन तालिका बनाने के लिए दो विधियों में से एक प्राप्त की।

अन्य योगदान: गणितीय श्रृंखला, द्विघात समीकरण, चक्रवृद्धि ब्याज (द्विघात समीकरण शामिल), अनुपात (अनुपात), और अंकगणित और बीजगणितीय विषयों में विभिन्न रैखिक समीकरणों का समाधान शामिल है।

हमारे ऋषि मुनियों एवं विद्वानों की शिक्षा ही हमारी संस्कृति को अतीत से लेकर वर्तमान तक लाती हैं। वेद, पुराण, गीता, महाभारत, रामायण आदि भारतीय संस्कृति के आधार हैं। सभी हिन्दू शास्त्रों में गीता को प्रथम स्थान दिया जाता हैं। मुनि वेदव्यास जी ने ही गीता की रचना की थी। यह ग्रन्थ मूल रूप से महाभारत के भीष्म पर्व का ही एक भाग है।

गीता में कुल अठारह पर्व अथवा अध्याय एवं करीब 700 संस्कृत श्लोक हैं। हिन्दुओं में गीता के प्रति अगाध श्रद्धा एवं निष्ठा है। जैसे जैसे समाज में शिक्षा का चलन बढ़ा है वैसे वैसे गीता को पढ़ने, समझने और आत्मसात करने वालों की संख्या भी अप्रत्याशित रूप में बढ़ी है। भारत की संस्कृति के स्वरूप उसकी सहिष्णुता के भाव को गीता जी में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं। यह तो सभी जानते हैं कि श्रीमद्भागवत गीता में भगवान कृष्ण द्वारा युद्ध काल में अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को दिए गये उपदेशों का वर्णन हैं। महाभारत के युद्ध में जब कौरवों और पांडवों की सेना एक दूसरे के सम्मुख खड़ी हुई तो अर्जुन प्रतिपक्ष में अपने सभी स्वजनों को देखकर युद्ध त्याग कर अपनी पराजय स्वीकार करने लगे थे। तभी श्रीकृष्ण उन्हें उपदेश देते है और कहते है इन्सान को निष्काम भाव से कर्म करते रहना चाहिए उसे फल की चिंता नहीं करनी चाहिए।

भगवद् गीता हमारे जीवन का कालजयी एवं शाश्वत सत्य है। भगवद् गीता का हिंदू धर्म में अनन्य, असाधारण महत्व है। हिंदू धर्म में, गीता एक धार्मिक ग्रंथ से परे, हमारी आस्था का केंद्र बिंदु भी है।

अगले अंक में जारी ...

आलेख

पुनः विश्व गुरु बनेगा भारत

संजय मानव

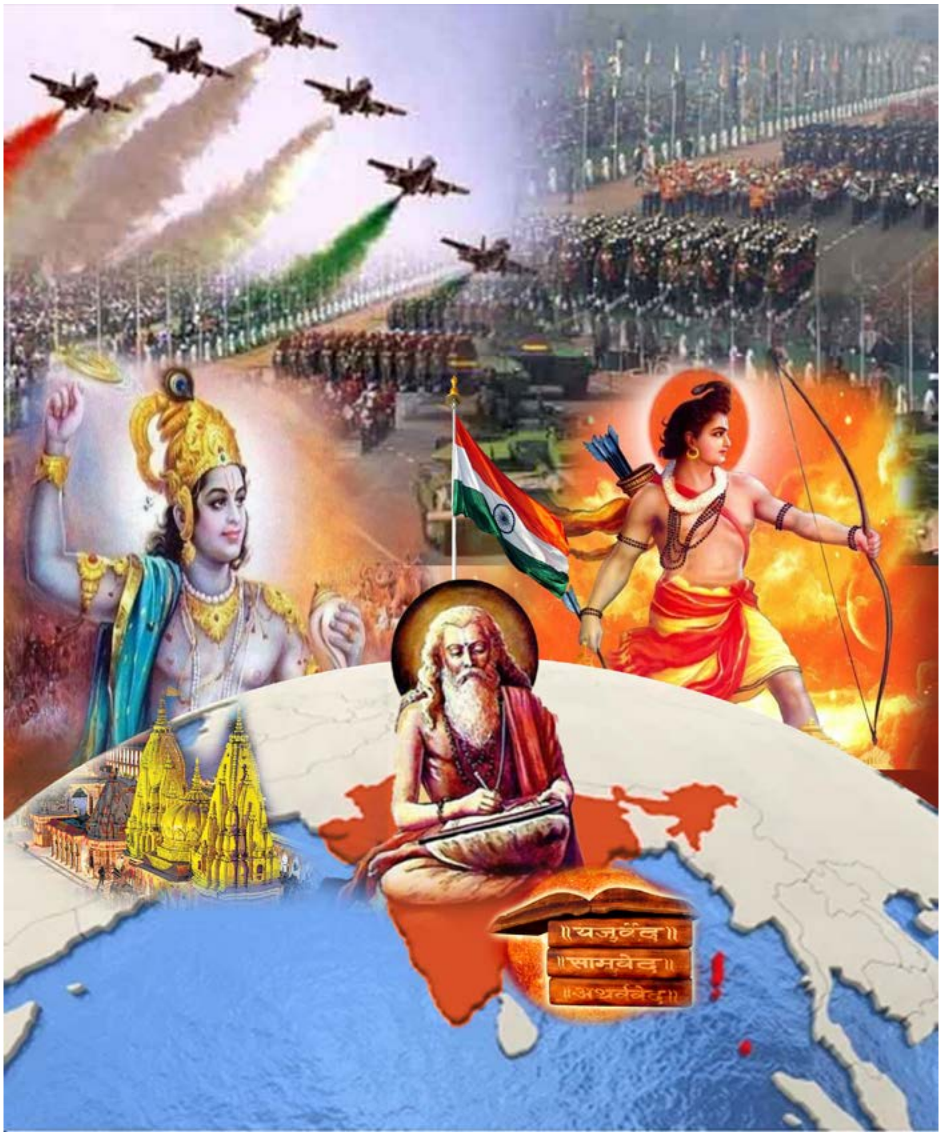

> सभी धर्म नैतिक श्रेष्ठता का दावा करते हैं और उसी के माध्यम से विश्व को रास्ता दिखाना चाहते हैं। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा था: भारत के नेतृत्व में ''समूचा विश्व वसुधैव कुटुंबकम के आधार पर अपना खोया संतुलन पुनः प्राप्त करे और धर्म की राह पर चले। उंच-नीच और जात-पात को समाप्त करने से ही उन्नति होगी।

चाहे हम एक नए भारत के निर्माण की अवधारणा की बात करें या आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की, हम मानवता, शांति और समृद्धि के साथ सेवा और सुरक्षा के मामले में भारतीय दर्शन के अनुसार एक विश्व प्रणेता होने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इन सभी लक्ष्यों को तभी साकार किया जा सकता है जब देश के नागरिक अपने अधिकारों की बात करने के साथ-साथ अपने संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति पूरी तरह से गंभीर और जागरूक हों। यह राष्ट्र निर्माण और इसके विकास के लिए जरूरी है। हलांकि नये भारत की पहचान और लक्ष्य को लेकर मोदी सरकार के 10 सालों के शासन काल में बदलाव की बयार बह रही है और भारत को एक नई पहचान मिली है,भारत विश्व गुरु बन रहा है।

देश का गणराज्य भारत के संविधान के अनुसार शासित है जिसे संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बरर 1949 को ग्रहण किया गया तथा यह संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। भारतीय संविधान के निर्माण में कई दिग्गज शामिल थे। तब से अब तक देश ने एक लंबा सफर तय लिया है और इस काल खंड में संविधान में कई बदलाव किए गए हैं। आज हमारे संविधान में 12 अनुसूचियों सहित 400 से अधिक अनुच्छेद हैं, जो इंगित करता है कि शासन का दायरा देश के नागरिकों की बढ़ती आकांक्षाओं को समायोजित करने के लिए समय के साथ विस्तारित हुआ है। एक विशाल आबादी के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत और इसकी व्यवस्था को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए नियमावली को काफी कुशल होना चाहिए। विविध जनसांख्यिकीय संरचना का मुकाबला करते हुए संविधान सभी शर्तों को अपना रहा है और उन सभी को समान अधिकार दे रहा है, लेकिन साथ ही संविधान या राष्ट्र भी राष्ट्र के उत्थान के लिए नागरिकों से अपने कर्तव्य का पालन करने की अपेक्षा करता है।

आज यदि भारतीय लोकतंत्र समय की अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए न केवल मजबूती से खड़ा है, बल्कि विश्व पटल पर अपनी एक विशिष्ट पहचान भी रखता है। इसका मुख्य श्रेय हमारे संविधान द्वारा बनाए गए मजबूत संस्थागत ढांचे को जाता है। वास्तव में हमारा संविधान केवल एक कानूनी दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह इतना महत्वपूर्ण साधन है जिससे अनेक जाति, नस्ल, लिंग, क्षेत्र, पंथ या भाषा के आधार पर समाज के सभी वर्गों की स्वतंत्रता को समानता के साथ संरक्षित करते हुए आगे बढ़ रहा है और समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर है। मौलिक अधिकारों के साथ-साथ हमारा संविधान नागरिकों के लिए कुछ मौलिक कर्तव्यों को भी सुनिश्चित करता है। अगर 21वीं सदी को भारत की सदी बनाना है तो यह जरूरी है कि भारत का हर नागरिक देश को आगे ले जाने के लिए कीमत और कर्तव्य की भावना के साथ मजबूती से काम करे। नए भारत के निर्माण की अवधारणा हो या आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य, इन सभी लक्ष्यों को तभी साकार किया जा सकता है जब देश के नागरिक अपने संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति पूरी तरह से गंभीर और जागरूक होंगे।

भारत के लोगों संकल्प लेना चाहिए कि राजनीति की धारा को सही दिशा में मोड़ना हमारा कर्तव्य है। ऐसा करने से ही भारतीय लोकतंत्र को मजबूत बनाया जा सकता है। ऐसा होने पर ही हम एक गणतंत्र के रूप में अपने लक्ष्यों को हासिल कर पाएंगे। एक गणतंत्र के रूप में भारत ने बहुत कुछ हासिल किया है और दुनिया में इसकी प्रतिष्ठा भी समय के साथ बढ़ी है, लेकिन वास्तविकता को स्वीकार करना होगा कि इसके साथ-साथ चुनौतियां भी बढ़ी हैं।

ये चुनौतियाँ केवल बाहरी नहीं हैं, बल्कि आंतरिक चुनौतियाँ भी बहुत ज्यादा हैं। हम जितनी जल्दी इन पर विजय प्राप्त करेंगे, बाहरी चुनौतियों से भी पार पाना उतना ही आसान होगा। इन चुनौतियों से पार पाने का सबसे आसान तरीका यह है कि राष्ट्रीय एकता की भावना को लगातार मजबूत किया जाए और तमाम असहमति के बावजूद राष्ट्रीयता की भावना को बढावा दें। देश को एक वास्तविक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए हम सभी को एक लक्ष्य के लिए प्रतिबद्ध होना होगा। और वह लक्ष्य है सद्भावना और शांति के साथ हर क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करना और मानवता को उनके मूल्यों के साथ एक नाइ उचाई पर पहुंचना।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि देश की राजनीतिक संस्कृति तर्कसंगत और जिम्मेदारी की भावना से

युक्त हो। निस्संदेह समय बीतने के साथ देश में राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ है और इससे हाशिये पर रहने वाले तबके को भी राजनीति में भागीदारी भी बढ़ी है, लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि राजनीति में बढ़ते वैचारिक खोखलेपन के साथ राष्ट्रहित की अनदेखी अल्पकालिक स्वार्थ सीद्धि की भी वृद्धि हुई है। इस प्रवृत्ति को किसी भी तरह से रोकना होगा। ऐसे समय में लोगों को अपने राष्ट्रीय दायित्वों के प्रति अधिक जागरूक होना होगा।

2014 के बाद नरेंद्र मोदी का भारत के 14वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने के साथ ही यह स्पष्ट हो गया था कि उन्होंने देश की बेहतरी के लिए कुछ अलग करने के लिए कृत शंकल्पित है। आज आठ साल में राजनीतिक अस्थिरता समाप्त हो गई। भ्रष्टाचार पर प्रभावी रूप से अंकुश लगा है, देश के दुश्मनों को कड़ा संदेश दिया गया है कि हिमाकत करने वालों को मुहतोड़ जबाव दिया जाएगा। अर्थव्यवस्था को मजबूत किया गया है। सरकारी संस्थानों में लोगों का भरोसा लौट आया है। विश्व पटल पर भारत का मान बढ़ा है। भारत की वैश्विक रैंकिंग में सुधार हुआ है। आज देश का नेतृत्व भारत की सुरक्षा, आर्थिक प्रगति, युवा विकास, किसानों की खुशी और भारत के करोड़ों गरीब नागरिकों के जीवन की बेहतरी के लिए अपनी पूरी ताकत और क्षमता लगा रहा है।

यह कहना बिल्कुल सही है कि भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार ने ऐसा कोई गलत काम नहीं किया है जिससे देशवासियों को भ्रम हो। वैश्विक महामारी का प्रबंधन करना हो, आतंकवाद के खिलाफ लड़ना हो या अपने नागरिकों को विदेशी धरती पर सबसे प्रतिकूल परिस्थितियों से बचाना हो, मोदी सरकार ने लोगों की आकांक्षाओं के अनुसार काम किया, जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को निरस्त किया, पीओके में सर्जिकल स्ट्राइक किया, तीन तलाक पर कानून बनाया। जीएसटी लागू करना, नागरिकता संशोधन अधिनियम लागू करना, कोरोना से निपटना और इससे प्रभावित गरीबों को आश्रय प्रदान करना, आयुष्मान भारत योजना इत्यादि ऐसे ऐसे फैसले ने न केवल देश को मजबूत किया बल्कि साबित किया कि सरकार की नीतियां और इरादे सुशासन के लिए समर्पित हैं। इन रचनात्मक कल्याणकारी योजनाओं ने देश का चेहरा बदल दिया है।

पिछले आठ सालों में मोदी ने देश के हर नागरिक के सपनों और आकांक्षाओं में नया विश्वास जगाया है। आज भारत की पहचान पूरी दुनिया में एक स्वाभिमानी और मजबूत नेतृत्व वाले देश के रूप में हो रही है। सुशासन जिसमें आज पूरा देश लगभग दंगा मुक्त हो गया है, सांप्रदायिक और तुष्टीकरण की राजनीति ठप हो गई है। भले ही महामारी एक आकस्मिक घटना थी, लेकिन इसके खिलाफ मोदी सरकार की प्रतिक्रिया अप्रत्याशित थी। हर स्तर पर मोदी सरकार महामारी से पहले के वर्षों में किए गए बुनियादी कार्यों का पूरा फायदा उठा रही थी। वैश्विक महामारी के दौरान, जब बार-बार लॉकडाउन से लोग, विशेषकर गरीबों के जीवन में व्यवधान पैदा हो रहा था, तो मोदी सरकार ने सुनिश्चित किया कि कोई भी भूखा न रहे।

आठ साल का यह सफर देश की सोच बदलने का सफर है। यह एक आत्मनिर्भर भारत की यात्रा है, भारत को विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने का मार्ग बनाने की यात्रा है। यह यात्रा आत्मनिर्भर भारत के ''संकल्प से सिद्धि'' की रही है। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस से 'मेक इन इंडिया' जैसी पहल के साथ-साथ कई विकासात्मक कार्य से भारत में उद्यमिता का तेजी से विकास हुआ है और यह दुनिया में गुणवत्ता का पर्याय बन गया है। कारोबारी माहौल को आसान बनाने के लिए पहले ही कई पहल की जा चुकी हैं। इसका उद्देश्य पूरे व्यापार चक्र में उद्योग को लाइसेंस से मुक्त करना है।

मोदी सरकार ने स्टार्टअप इंडिया और वेंचर कैपिटल फंडिंग की शुरुआत की और सरकार की पहल से इस साल स्टार्टअप की संख्या बढ़कर 66000 हो गई और यूनिकॉर्न की संख्या 116 से ज्यादा हो गई। मेक इन इंडिया अभियान के तहत प्रधानमंत्री मोदी ने आत्मनिर्भर भारत का संकल्प लिया। आज भारत रक्षा क्षेत्र समेत कई अन्य क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है।

जब देश में स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा था, तो प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने दूसरे कार्यकाल में कहा कि 75 स्वदेशी प्रौद्योगिकियों का निर्माण भारत के लिए नए संकल्प लेने के इस युग में एक तरह का पहला कदम है। इनकी संख्या को लगातार बढ़ाने के लिए हमें काम करना होगा। नौसेना को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आपका लक्ष्य यह होना चाहिए कि जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष मनाए, उस समय हमारी नौसेना अभूतपूर्व ऊंचाई पर हो। भारत की अर्थव्यवस्था में महासागरों और तटों के महत्व के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय नौसेना की भूमिका लगातार बढ़ रही है, इसलिए नौसेना की आत्मनिर्भरता बहुत महत्वपूर्ण है।

आजादी से पहले भी भारत का रक्षा क्षेत्र बहुत मजबूत हुआ करता था। आजादी के समय देश में 18 आयुध कारखाने थे, जहां हमारे देश में आर्टिलरी गन समेत कई तरह के सैन्य उपकरण बनाए जाते थे। हम द्वितीय विश्व युद्ध में रक्षा उपकरणों के एक महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता थे। सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा, ''ईशापुर राइफल फैक्ट्री में बने हमारे हॉवित्जर, मशीनगनों को बेहतर माना जाता था। हम बहुत निर्यात करते थे। लेकिन फिर ऐसा क्या हुआ कि एक समय में हम इस क्षेत्र में दुनिया के सबसे बड़े आयातक बन गए? भारत ने भी कोरोना काल की विपत्ति को अवसर में बदल दिया और अर्थव्यवस्था, विनिर्माण और विज्ञान में प्रगति की। उन्होंने इस तथ्य पर खेद व्यक्त किया कि स्वतंत्रता के प्रारंभिक दशकों के दौरान, रक्षा उत्पादन के विकास पर

कोई ध्यान नहीं दिया गया था और अनुसंधान और विकास गंभीर रूप से सीमित था क्योंकि यह सरकारी क्षेत्र तक ही सीमित था।

''नवाचार महत्वपूर्ण है और इसे स्वदेशी होना चाहिए। आयातित सामान नवाचार का स्रोत नहीं हो सकता है।'' आत्मनिर्भर रक्षा प्रणाली अर्थव्यवस्था के लिए और सामरिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। देश ने 2014 के बाद इस निर्भरता को कम करने के लिए मिशन मोड में काम किया है। सरकार ने अपनी सार्वजनिक क्षेत्र की रक्षा कंपनियों को विभिन्न क्षेत्रों में संगठित करके उन्हें नई ताकत दी है। आज हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि हम अपने प्रमुख संस्थानों जैसे IIT को रक्षा अनुसंधान और नवाचार से कैसे जोड़ सकते हैं। पिछले दशकों के दृष्टिकोण से सीखते हुए, आज हम अपने सभी प्रयासों के बल पर एक नया रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित कर रहे हैं। आज रक्षा अनुसंधान एवं विकास को निजी क्षेत्र, शिक्षाविदों, एमएसएमई और स्टार्ट-अप के लिए खोल दिया गया है। इसने लंबे समय से लंबित रक्षा परियोजनाओं को एक नया प्रोत्साहन दिया है और जल्द ही पहले स्वदेशी विमानवाहक पोत के संचालन शुरू करने की प्रतीक्षा को समाप्त कर देगा।

भारत में एक नई शिक्षा नीति लागू की गई है, जो देश के छात्रों और युवा शक्ति में एक नई आशा और ऊर्जा का संचार कर रही है। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य निवेश और नई पहलों में पर्याप्त वृद्धि के साथ 3-6 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा सुनिश्चित करना है। मल्टीपल एंट्री एंड एग्जिट सिस्टम, स्कूली शिक्षा के लिए 100 फीसदी नामांकन अनुपात प्राप्त करना है। कानून और चिकित्सा शिक्षा को छोड़कर संपूर्ण उच्च शिक्षा के लिए एकल नियामक, विज्ञान, कला, मानविकी, गणित और व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए एकीकृत शिक्षा और 2025 तक 50 फीसदी व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना है।

विद्यार्थियों के लिए इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है मल्टीपल एंट्री और एक्जिट सिस्टम। अभी अगर कोई छात्र इंजीनियरिंग के छह सेमेस्टर के बाद आगे की पढ़ाई नहीं कर पाता है तो उसे कुछ नहीं मिलता। अब एक साल बाद पढ़ाई छोड़ने के बाद सर्टिफिकेट मिलेगा, दो साल बाद डिप्लोमा और तीन से चार साल बाद डिग्री मिलेगी। यह देश में ड्रॉप आउट अनुपात को कम करने में बड़ी भूमिका निभाएगा। नई शिक्षा नीति से देश में रोजगार परक शिक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा और रटने की संस्कृति समाप्त हो जाएगी। नई शिक्षा नीति तय करेगी कि हमारे छात्र नौकरी तलाशने वाले नहीं बल्कि नौकरी देने वाले बनेंगे। स्वायत्त निकाय बनाया जाएगा। जो शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रौद्योगिकी का उचित एकीकरण सुनिश्चित करेगा। यह शिक्षा नीति वैज्ञानिक सोच पर आधारित होगी लेकिन इसमें जीवन के भारतीय मूल्य भी होंगे और यह डिजिटल होने के साथ-साथ दूरगामी भी होगा, इसके साथ ही यश अनुसंधान और नवाचार को भी बढ़ावा देगा और छात्रों की रचनात्मकता और कौशल को बढ़ाएगा।

आज विजली पानी रोड जैसे बुनियादी ढांचे का विकास भी अपनी एक नई पहचान बना रहा है। 8 वर्षों में, भारत का सड़क नेटवर्क दुनिया में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। पिछले 8 साल में पीएम मोदी की सरकार ने करीब तीन लाख 25 हजार किलोमीटर सड़कों के निर्माण को मंजूरी दी है। सौर और पवन ऊर्जा में भारत की क्षमता पिछले पांच वर्षों में दोगुनी हो गई है। 2012-13 में देश में खाद्यान्न का उत्पादन 255 मिलियन टन था, जो 2021-22 में बढ़कर 316.06 मिलियन टन हो गया है। आजादी के बाद से यह अब तक का रिकॉर्ड उत्पादन है।

2014 से पहले समस्याओं को नियति माना जाता था। देश की जनता ने यह सोचकर ही छोड़ दिया था कि ये समस्याएं कभी भी खत्म नहीं हो सकती हैं। वर्तमान सरकार पिछले आठ वर्षों से लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने में लगी हुई है। पीएम मोदी की सफलता के पीछे पीसीसी का हाथ है। च्ब्ब् का मतलब प्रोसेप्शन, कम्युनिकेशन और कनेक्शन है। प्रधानमंत्री मोदी में ऐसी अनोखी बातें हैं जिन्होंने उनके राजनीतिक कद को काफी ऊंचा कर दिया है। प्रधानमंत्री पर लोगों का भरोसा इसलिए बढ़ा है क्योंकि वह अपनी ही भाषा में लोगों से सीधे संवाद करते हैं और लोगों से यही जुड़ाव उन्हें सफलता दिलाता है।

आठ वर्षों के दौरान देश ने कई सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन देखे। देश को शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य और किसानों की समस्याओं से जूझना पड़ा, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी कार्यशैली से हर वर्ग को संतुष्ट करने की कोशिश की। कोरोना महामारी से उभरने के बाद वैसे तो देश के सामने कई चुनौतियां हैं, लेकिन जनता का उन पर इतना विश्वास है कि अगर मोदी हैं तो संभव है कि सभी चुनौतियों से निजात मिल जाए। महंगाई, बेरोजगारी देश की बुनियादी समस्याएं हैं लेकिन रोटी के साथ-साथ विदेश नीति, रणनीतिक नीति, व्यापार, उत्पादन, निर्यात, ग्रामीण विकास और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता भी बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। राजनीति हो या कूटनीति, मोदी सरकार हर मोर्चे पर कामयाब रही है।

मोदी के नेतृत्व में भारत के नागरिक आज अपने देश को एक नई आशा और विश्वास के साथ उभरते हुए देख रहे हैं। आज सपने हैं और संकल्प और प्रयास भी हैं जो सपनों को सच करते हैं। मोदी जी के नेतृत्व में चल रही विकास की यह यात्रा भारत को पूरे विश्व में सम्मान, सम्मान और एक नई पहचान देने का प्रयास कर रही है, जहां शासन का मतलब सेवा और समर्पण है।

समाज, राजनीति और मीडिया का सच

ज्योत्सना गर्ग

ज्योत्सना गर्ग स्थापित डाक्यूमेन्ट्री निर्माता, सिनेमेटोग्राफर, निर्देशक, पटकथा लेखिका और मॉडल एडवाइजरी पैनल की सदस्य हैं। केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड की सदस्य के साथ-साथ फिल्मोत्सव की जूरी सदस्य और सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

द साबरमती रिपोर्ट जैसी फिल्म से विक्रांत का जुड़ना ये भरोसा दे गया कि कुछ तो विशिष्ट बनाया होगा लेकिन यहां कुछ नहीं काफी कुछ है और विक्रांत का ही नहीं, रिद्धि डोगरा, राशि खन्ना और एकता कपूर का भी अलग ही अंदाज है। इस फिल्म मैं गोधरा कांड दिखाया गया है, जब 27 फरवरी 2002 को गुजरात के गोधरा में स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस की बोगी में आग लग गई थी और 59 बेगुनाह लोग जिसमें मासूम बच्चे और स्त्रियों की जान चली गई थी, इसका सच क्या है, हादसा या साजिश, ये फिल्म एक रिपोर्टर के नजरिए से पड़ताल करती है।

विवेक अग्निहोत्री की कश्मीर फाइल्स जैसा दमदार कॉन्टेंट और सच पर से पर्दा उठाने वाली फिल्म द साबरमती रिपोर्ट अब सभी के सामने है। अद्भुत और रोंगटे खड़े करने वाला सच। कथित मेन स्ट्रीम नेशनल मीडिया का चेहरा भी

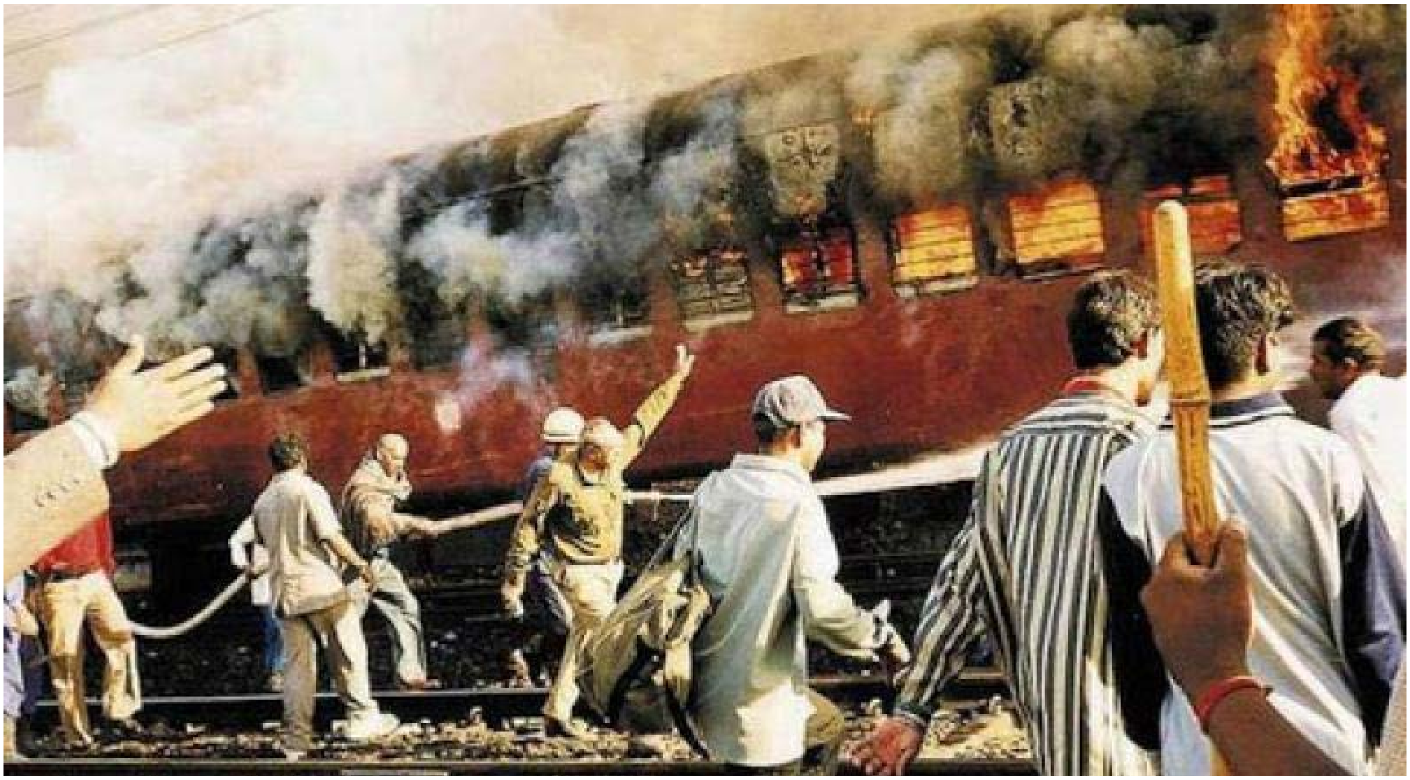

बहुत अच्छे से बेनकाब हो गया है। 2014 के बाद देश में गोदी मीडिया जैसी गालीनुमा कुछ गंदा सा गढ़ने वाले कई चेहरों पर भी धब्बे दिखा रही है गोधरा में हुए नरसंहार की यह चित्र कथा। इस फिल्म की सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें हर शब्द और घटना उस समय के पुख्ता दस्तावेज के आधार पर ही चित्रित है। विक्रांत मैसी ने अपने लिए एक ऐसा नाम बना लिया है कि वो जहां होते हैं अच्छे कॉन्टेंट की उम्मीद जगती है, द साबरमती रिपोर्ट जैसी फिल्म से विक्रांत का जुड़ना ये भरोसा दे गया कि कुछ तो विशिष्ट बनाया होगा लेकिन यहां कुछ नहीं काफी कुछ है और विक्रांत का ही नहीं, रिद्धि डोगरा, राशि खन्ना और एकता कपूर का भी अलग ही अंदाज है। इस फिल्म मैं गोधरा कांड दिखाया गया है, जब 27 फरवरी 2002 को गुजरात के गोधरा में स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस की बोगी में आग लग गई थी और 59 बेगुनाह लोग जिसमें मासूम बच्चे और स्त्रियों की जान चली गई थी, इसका सच क्या है, हादसा या साजिश, ये फिल्म एक रिपोर्टर के नजरिए से पड़ताल करती है।

ये फिल्म बड़ी हिम्मत से साबरमती का सच दिखाती है, ये फिल्म कसी हुई है, मीडिया के नजरिए से चीजों को दिखाती है। कुछ ऐसा भी दिखाती है जो उस समय की मीडिया की स्थिति को साफ करता है लेकिन बात जब 59 लोगों की जान की होती है तो बात तो होनी चाहिए। फिल्म हर पहलू पर बात करती है, कोर्ट ने जो कुछ कहा वो बताती है, आपको बांधे रखती है। आप इस केस का सच जानने के लिए इन रिपोर्टर्स के साथ रिपोर्टर बन जाते हैं। हाँ कहीं ना कहीं मुस्लिम लड़की को हिन्दुओं के द्वारा परेशान किए जाना ऐसे मनगढंत दृश्य डाल कर घटना को बैलेंस करने की नाकाम कोशिश भी की गई है।

आज की पीढ़ी को शायद इस कांड के बारे मैं नहीं पता होगा तो उनके लिए ये फिल्म एक दस्तावेज का काम भी करती है। फिल्म आपको कहीं बोर नहीं करती, कहीं खिंची हुई नहीं लगती, चीजें तेजी से आगे बढ़ती रहती हैं, हां थोड़ा इमोशनल कनेक्ट कम है वो होता तो फिल्म और शानदार बनती।

12वीं फेल के बाद विक्रांत फिर फॉर्म में हैं और इस रिपोर्ट में उन्हें पूरे नंबर मिलते हैं। सच दिखाने वाला एक नया पत्रकार, हिंदी बोलने वाला एक पत्रकार, ये किरदार विक्रांत के अलावा शायद ही कोई कर सकता था। उन्होंने परफेक्शन से इस किरदार को निभाया है। रिद्धि डोगरा ने कमाल का काम किया है, मीडिया के लोग उनके किरदार से काफी रिलेट कर पाएंगे, हर न्यूजरूम में रिद्धि के किरदार जैसी पत्रकार आपको मिल जाएगी, उनके एक्सप्रेशन परफेक्ट हैं। राशि खन्ना ने ट्रेनी जर्नलिस्ट के किरदार को परफेक्शन के साथ प्ले किया है। एक बड़ी जर्नलिस्ट की एक फैन से लेकर उसे सच का आईना दिखाने वाली पत्रकार, ये रोल उनके बेस्ट रोल्स में से एक है, बाकी के कलाकारों ने भी अच्छा काम किया है।

धीरज सरना का डायरेक्शन कमाल का है, उन्होंने फिल्म को खींचा नहीं, 2 घंटे में सब दिखा दिया, लेकिन इमोशन और डालना चाहिए था। तारीफ एकता कपूर की भी करनी होगी कि उन्होंने ऐसा सब्जेक्ट चुना, इसके लिए हिम्मत चाहिए। यह फिल्म समाज में बहुत हलचल पैदा कर सकती है।

उद्योग जगत के सूर्य 'रतन टाटा'

विश्व में भारत की उद्यमिता और शक्ति का शालीनता से लोहा मनवाने वाले अजात शत्रु रतन टाटा का निधन भारत की बहुत बड़ी क्षति है। 2024 के अक्टूबर महीने में उनका महाप्रयाण इस वर्ष की ऐसी घटना है जिसे आसानी से भूलाया नहीं जा सकता। भारत के इस महान उद्योगपति और अत्यंत संवेदनशील महापुरुष के निधन पर संस्कृति पर्व परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि....

भारतीय उद्योग जगत के सूर्य 'रतन टाटा' ने मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में 09 अक्टूबर 2024 को अंतिम सांस ली। 28 दिसंबर 1937, को मुम्बई, में जन्मे टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष रतन टाटा भारत की सबसे बड़ी व्यापारिक समूह है, जिसकी स्थापना जमशेदजी टाटा ने की और उनके परिवार की पीढियों ने इसका विस्तार किया और इसे दृढ़ बनाया।

1971 में रतन टाटा को राष्ट्रीय रेडियो और इलेक्ट्रॉनिक्स कम्पनी लिमिटेड (नेल्को) का डाईरेक्टर-इन-चार्ज नियुक्त किया गया, एक कम्पनी जो कि सख्त वित्तीय कठिनाई की स्थिति में थी। रतन ने सुझाव दिया कि कम्पनी को उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स के बजाय उच्च-प्रौद्योगिकी उत्पादों के विकास में निवेश करना चाहिए जेआरडी नेल्को के ऐतिहासिक वित्तीय प्रदर्शन की वजह से अनिच्छुक थे, क्यों कि इसने पहले कभी नियमित रूप से लाभांश का भुगतान नहीं किया था। इसके अलावा, जब रतन ने कार्य भार सम्भाला, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स नेल्को की बाज़ार में हिस्सेदारी 2% थी और घाटा बिक्री का 40% था। फिर भी, जेआरडी ने रतन के सुझाव का अनुसरण किया।

1972 से 1975 तक, अन्ततः नेल्को ने अपनी बाज़ार में हिस्सेदारी 20% तक बढ़ा ली और अपना घाटा भी पूरा कर लिया। लेकिन 1975 में, भारत की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी जी ने आपात स्थिति घोषित कर दी, जिसकी वजह से आर्थिक मन्दी आ गई। इसके बाद 1977 में यूनियन की समस्यायें हुईं, इसलिए माँग के बढ़ जाने पर भी उत्पादन में सुधार नहीं हो पाया। अन्ततः, टाटा ने यूनियन की हड़ताल का सामना किया, सात माह के लिए तालाबन्दी कर दी गई। रतन ने हमेशा नेल्को की मौलिक दृढ़ता में विश्वास रखा, लेकिन उद्यम आगे और न रह सका।

1977 में रतन जी को Empress Mills सौंपा गया, यह टाटा नियन्त्रित कपड़ा मिल थी। जब उन्होंने कम्पनी का कार्य भार सम्भाला, यह टाटा समुह की बीमार इकाइयों में से एक थी। रतन ने इसे सम्भाला और यहाँ तक की एक लाभांश की घोषणा कर दी। चूँकि कम श्रम गहन उद्यमों की प्रतियोगिता ने इम्प्रेस जैसी कई उन कम्पनियों को अलाभकारी बना दिया, जिनकी श्रमिक संख्या बहुत ज्यादा थी और जिन्होंने आधुनिकीकरण पर बहुत कम खर्च किया था रतन के आग्रह पर, कुछ निवेश किया गया, लेकिन यह पर्याप्त नहीं था। चूँकि मोटे और मध्यम सूती कपड़े के लिए बाजार प्रतिकूल था (जो कि एम्प्रेस का कुल उत्पादन था), एम्प्रेस को भारी नुकसान होने लगा। बॉम्बे हाउस, टाटा मुख्यालय, अन्य ग्रुप कंपनिओं से फंड को हटाकर ऐसे उपक्रम में लगाने का इच्छुक नहीं था, जिसे लम्बे समय तक देखभाल की आवश्यकता हो। इसलिए, कुछ टाटा निर्देशकों, मुख्यतः नानी पालकीवाला ने ये फैसला लिया कि टाटा को मिल समाप्त कर देनी चाहिए, जिसे अन्त में 1986 में बन्द कर दिया गया। रतन इस फैसले से बेहद निराश थे और बाद में हिन्दुस्तान टाईम्स के साथ एक साक्षात्कार में उन्होंने दावा किया कि एम्प्रेस को मिल जारी रखने के लिए सिर्फ 50 लाख रुपये की जरुरत थी।

वर्ष 1981 में, रतन टाटा इंडस्ट्रीज़ और समूह की अन्य होल्डिंग कम्पनियों के अध्यक्ष बनाए गए, जहाँ वे समूह के कार्यनीतिक विचार समूह को रूपान्तरित करने के लिए उत्तरदायी तथा उच्च प्रौद्योगिकी व्यापारों में नए उद्यमों के प्रवर्तक थे।

1991 में उन्होंने जेआरडी से ग्रुप चेयर मेन का कार्य भार सम्भाला। टाटा ने पुराने गार्डों को बहार निकाल दिया और युवा प्रबन्धकों को जिम्मेदारियाँ दी गयीं। तब से लेकर, उन्होंने, टाटा ग्रुप के आकार को ही बदल दिया है, जो आज भारतीय शेयर बाजार में किसी भी अन्य व्यापारिक उद्यम से अधिक बाजार पूँजी रखता है। रतन जी के मार्गदर्शन में, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेस सार्वजनिक निगम बनी और टाटा मोटर्स न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हुई। 1998 में टाटा मोटर्स ने उनके संकल्पित टाटा इंडिका को बाजार में उतारा।

31 जनवरी 2007 को, रतन टाटा की अध्यक्षता में, टाटा संस ने कोरस समूह को सफलतापूर्वक अधिग्रहित किया, जो एक एंग्लो-डच एल्यूमीनियम और इस्पात निर्माता है। इस अधिग्रहण के साथ रतन टाटा भारतीय व्यापार जगत में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गये। इस विलय के फलस्वरुप दुनिया को पाँचवाँ सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक संस्थान मिला।

रतन टाटा का सच हुआ सपना

रतन टाटा का सपना था कि 1,00,000 रु की लागत की कार बनायी जाए। (1998 : करीब .अमेरिकी डॉलर 2,200; आज अमेरिका). नई दिल्ली में ऑटो एक्सपो में 10 जनवरी, 2008 को इस कार का उदघाटन कर के उन्होंने अपने सपने को पूर्ण किया। टाटा नैनो के तीन मॉडलों की घोषणा की गई और रतन टाटा ने सिर्फ 1 लाख रूपये की कीमत की कार बाजार को देने का वादा पूरा किया, साथ ही इस कीमत पर कार उपल्बध कराने के अपने वादे का हवाला देते हुये कहा ₹वादा एक वादा है₹।

26 मार्च 2008 को रतन टाटा के अधीन टाटा मोटर्स ने फोर्ड मोटर कम्पनी से जगुआर और लैण्ड रोवर को खरीद लिया। ब्रिटिश विलासिता की प्रतीक, जगुआर और लैंड रोवर (Land Rover) 1.15 अरब पाउण्ड ($ 2.3 अरब),में खरीदी गई।

निजी जीवन

रतन टाटा एक शर्मीले व्यक्ति रहे, समाज की झूठी चमक दमक में विश्वास नहीं करते थे, सालों से मुम्बई के कोलाबा जिले में एक किताबों एवं कुत्तों से भरे हुये बेचलर फ्लैट में रह रहे थे। रतन टाटा ने अपना नया उत्तराधिकारी चुन लिया था।

पलौनजी मिस्त्री के छोटे बेटे और शपूरजी-पलौनजी के प्रबंध निदेशक सायरस मिस्त्री ने लंदन के इंपीरियल कॉलेज से सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक एवं लंदन बिजनेस स्कूल से प्रबंधन में डिग्री ली थी। वो टाटा संस की सबसे बड़ी शेयरधारक कंपनी शापूरजी पैलनजी के प्रबंध निदेशक भी थे। मिस्त्री के बाद अब माया टाटा उनके कार्य देख रही हैं। वह रतन टाटा के सौतेले भाई नोएल टाटा के परिवार से हैं।

पुरस्कार और मान्यता

भारत के 50वे गणतंत्र दिवस समारोह पर 26 जनवरी 2000, रतन टाटा को तीसरे नागरिक अलंकरण पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उन्हें 26 जनवरी 2008 को भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक अलंकरण पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। वे नैसकॉम ग्लोबल लीडरशिप (NASSCOM Global Leadership) पुरस्कार -2008 प्राप्त करने वालों में से एक थे। ये पुरस्कार उन्हें 14 फ़रवरी 2008 को मुम्बई में एक समारोह में दिया गया। रतन टाटा ने 2007 में टाटा परिवार की ओर से परोपकार का कारनैगी पदक प्राप्त किया।

रतन टाटा भारत में विभिन्न संगठनों में वरिष्ठ पदों पर कार्यरत थे और वे प्रधानमंत्री की व्यापार एवं उद्योग परिषद के सदस्य रहे। मार्च 2006 में टाटा को कॉर्नेल विश्वविद्यालय द्वारा 26 वें रॉबर्ट एस सम्मान से सम्मानित किया गया। आर्थिक शिक्षा में हैटफील्ड रत्न सदस्य, वह सर्वोच्च सम्मान जो विश्वविद्यालय कंपनी क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तियों को प्रदान करती है।

रतन टाटा के विदेशी संबंधों में मित्सुबिशी निगम (Mitsubishi Corporation), अमेरिकन इंटरनेशनल समूह (American International Group), जेपी मॉर्गन चेज़ (JP Morgan Chase) और बूज़ एलन हैमिल्टन (Booz Allen Hamilton) के अंतरराष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड की सदस्यता शामिल है। वे रैंड निगम (RAND Corporation) और अपनी मातृसंस्था (alma mater) : कॉर्नेल विश्वविद्यालय (Cornell University) और दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (University of Southern California) के न्यासी मंडल के भी सदस्य थे।

वे दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की अंतरराष्ट्रीय निवेश परिषद के बोर्ड सदस्य थे और न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज के एशिया -पैसिफिक सलाहकार समिति के एक सदस्य थे। टाटा एशिया पैसिफिक पॉलिसी के रैंड केंद्र के सलाहकार बोर्ड, पूर्व-पश्चिम केन्द्र के बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स में हैं और बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन (Bill & Melinda Gates Foundation) के भारत एड्स इनिशीएटिव कार्यक्रम बोर्ड में सेवारत हैं। फरवरी 2004 में, रतन टाटा को चीन के झोज्यांग प्रान्त में हांग्जो (Hangzhou) शहर में मानद आर्थिक सलाहकार की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

उन्हें हाल ही में लन्दन स्कूल ऑफ़ इकॉनॉमिक्स (London School of Economics) से मानद डॉक्टरेट की उपाधि हासिल हुई और नवम्बर 2007 में फॉर्च्यून पत्रिका ने उन्हें व्यापर क्षेत्र के 25 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल किया। मई 2008 में टाटा को टाइम पत्रिका की 2008 की विश्व के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल किया गया टाटा की अपनी छोटी एक लाख रूपये की कार, 'नैनो' के लिए सराहना की गई। उन महत्तवपूर्ण व्यक्तियों में से एक जिसने अपने वादे का पालन किया।

मनोजकांत मिश्र की कविताएं

01

जीवन-दीप जले
जीवनदीप जले ऐसा,
हर घरमें दीप बले;
उर-उरमें ज्योति फले।
हाँ, जीवनदीप जले।।

02

प्रकट हुए ले राष्ट्रबोध

जीवन की आपाधापी से,
सम्बन्धों में अवमूल्यन है;
आर्थिकी तीव्र गतिशील हुई,
बस प्रकृति संग प्रतिकूलन है।
जीवन की हर चौपाई में
सतकथा जुड़ी इतिहास की;
कुछ वाल्मीकि के सपनों की,
कुछदिव्य कृष्ण की,व्यास
की।
परिवार मूल्य लेकर आया;
पूर्वज लाये इतिहास-बोध;
सम्बन्धों की थाती के सँग,
हम प्रकट हुए ले राष्ट्रबोध।

03

प्रेम आत्मिक ऐक्य

प्रेम उच्छृंखल नहीं है,
शान्त-गरिमापूर्ण है;
प्रेम एकाकार करता,
बाँटता जो- चूर्ण है।

प्रेम की उद्घोषणाएँ
व्यर्थ, अ-परिपक्व हैं;
प्रेम अनपेक्षित-सपावन,
सर्वव्यापी सत्व है।

प्रेम है विश्वास निर्मल,
प्रेम आत्मिक ऐक्य है;
प्रेम बन्धनमुक्त करता,
अनासक्ताधिक्य है।

04

सेवायुत समदृष्टिदो

औरों का दु:ख देख दु:खी हों,
सेवायुत समदृष्टि दो,
दु:ख मेटें,हर पल तत्पर हों,
करुणायन नम सृष्टि हो!!1!!

जो हो जाये-वह है तेरा,
हो न सके,तो मेरी सीमा;
अहंकार पल को न जगे माँ,
जो भी होवे,सब तव रचना।।२।।

सुन्दर मन हो,सुन्दर जीवन,
सुन्दर लक्ष्य-विधान हो ;
हे प्रभु,
हम छल-छन्द मुक्त हों,
ऐसा वर,वरदान दो!!३!!

05

माता, तुमही जीवनधारा

तुम्हीं राष्ट्र हो, तुम ही नदियाँ;
तुम ही जीवन,तुम हो सदियाँ।
राष्ट्रभक्ति बन तुमने ही माँ!
कितनों को है तारा।।1।।
माता,तुम ही जीवनधारा।

तुमही धृति हो,तुमही विद्या,
तुम्हीं प्रकृति माँ,तुमही आद्या।
तुमने संस्कृति बनकर माता!
जन-मन दीपक बारा।।२।।
माता,तुम ही जीवनधारा।

तुम ही दुर्गा, तुम्हीं शारदा,
तुम कात्यायनि, तुम ही वरदा;
तुम ही काली बनकर प्रकटी,
तुमसे हर तम हारा।।३।।
माता,तुम ही जीवनधारा।

तुम्हीं शक्ति हो, तुम्हीं भक्ति हो!
तुम हो बन्धन, तुम्हीं मुक्ति हो!
तुमने सबको पाला है माँ!
तुमसे यह जग सारा।।4।।
माता, तुम ही जीवनधारा।

त्यक्त-व्यक्त-अव्यक्त तुम्हीं हो,
हर जीवन-संयुक्त तुम्हीं हो!
तेरे बिन निस्सार सृष्टि यह,
तुम पर सबकुछ वारा।।5।।
माता, तुम ही जीवनधारा।

तुम हो अमृत, तुम संहारिणि,
तुम माँ,लासिनि,तुम्हीं विहारिणि;
तुम संगठना बन प्रकटी माँ,
वृत्र-महिष सब मारा।।6।।
माता,तुम ही जीवनधारा।

तुम सबमें हो, सब तुमसे माँ,
तुमसे उपजे, सब तुझमें माँ!
पिघलो देवि !दयाके कारिणि,
काटो बन्धन-कारा।।7।।
माता, तुम ही जीवनधारा।

नवीन भारत, प्रवीण भारत
New India, Skilled India
भारत संस्कृति न्यास
उद्देश्य
सनातन संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील
राष्ट्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए प्रयासरत
प्राथमिक से स्नातक तक पाठ्यक्रम में संस्कृति शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल कराने का प्रयास
राष्ट्रीय संस्कृति आयोग का गठन एवं राष्ट्रीय संस्कृति दिवस के निर्धारण के लिए प्रयास
पत्र व्यवहार
बी–64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड गोरखपुर–273001
1–454 वास्तुखण्ड, गोमती नगर लखनऊ–226010
+91:–9450887186, +91:–9450887187
Follow us
पंजीकृत कार्यालय
बी–38, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली–110024
Contact : 011-24337573
bharatsanskritinyas@gmail.com
Website - www.bharatsanskritinyas.org

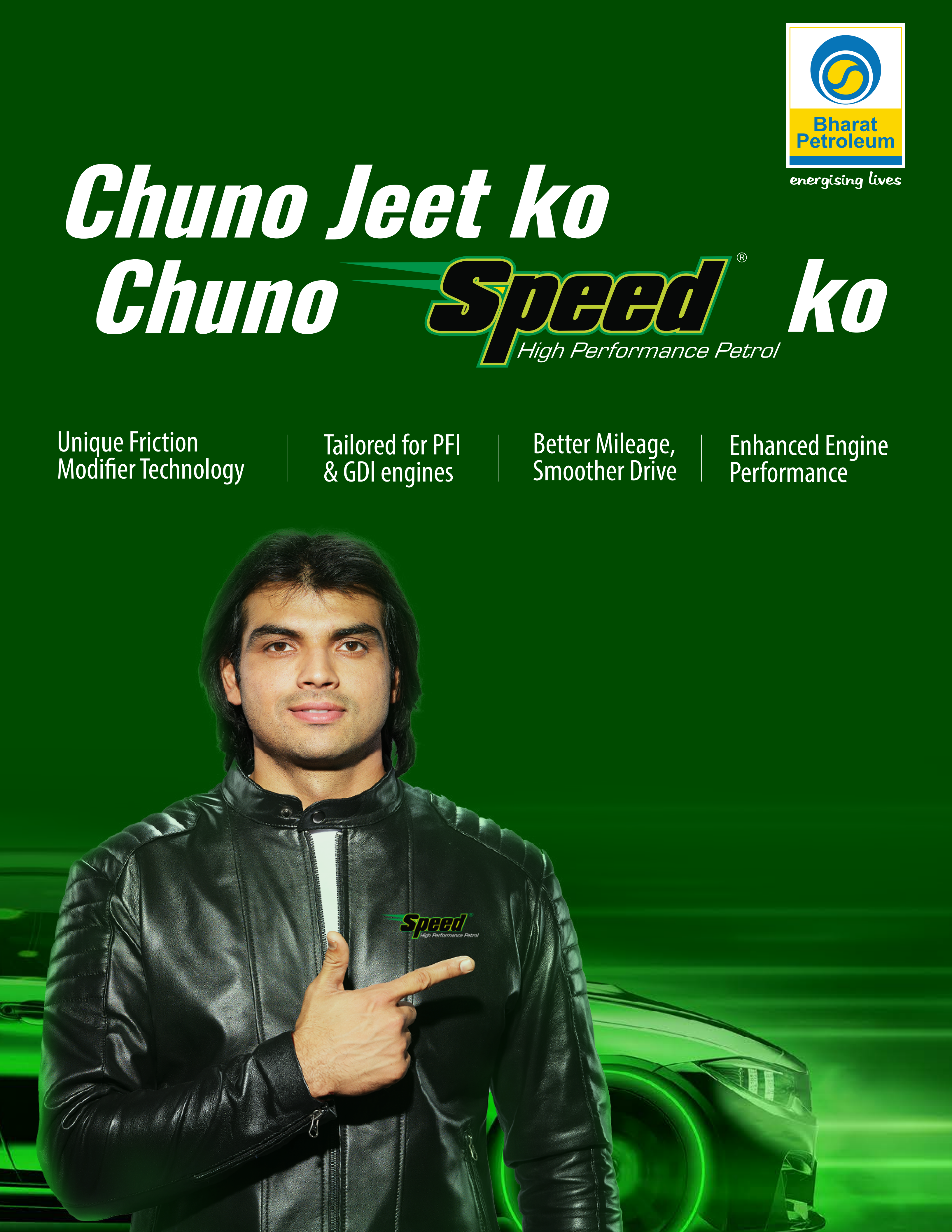
Bharat Petroleum
energising lives
Chuno Jeet ko
Chuno Speed® ko
High Performance Petrol
Unique Friction Modifier Technology
Tailored for PFI & GDI engines
Better Mileage, Smoother Drive
Enhanced Engine Performance
Speed
High Performance Petrol